छत्रपति शिवाजी

चौथी कक्षा

(परिसर अध्ययन – भाग २)

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक
प्राशिसं/२०१४-१५/२१०२/मंजूरी/ड - ५०५/ ७५५ दिनांक ४.२.२०१४

छत्रपति शिवाजी

(परिसर अध्ययन - भाग २)

चौथी कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

6BALNX

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्‌वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R. Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्‌यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R. Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१४
सुधारित आवृत्ति : सितंबर २०१६
पुनर्मुद्रण : जुलाई २०२०

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

इतिहास विषय समिति :
डॉ. आ. ह. साळुंखे, अध्यक्ष
डॉ. सोमनाथ रोडे, सदस्य
डॉ. नीरज साळुंखे, सदस्य
श्री बापूसाहेब शिंदे, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य सचिव

संयोजक :
श्री मोगल जाधव
विशेषाधिकारी, इतिहास एवं नागरिकशास्त्र

चित्र एवं सजावट : प्रा. दिलीप कदम,
श्री. देवदत्त बलकवडे, श्री. संजय शेलार

छायाचित्र : श्री प्रवीण भोसले

मानचित्रकार :
श्री रविकिरण जाधव, डॉ. नीरज साळुंखे

भाषांतरकार : प्रा. शशि मुरलीधर निघोजकर

समीक्षक : श्री हरीशकुमार दौलतराम खत्री

भाषांतर संयोजन :
डॉ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी
संयोजन सहायक :
सौ. संध्या उपासनी, विषय सहायक हिंदी

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री प्रभाकर परब, निर्मिति अधिकारी
श्री शशांक कणिकदळे, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.

कागज : ७० जी.एस.एम., क्रिमवोव्ह

मुद्रणादेश :

मुद्रक :

प्रकाशक : श्री विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक, पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

प्रस्तावना

'बालकों का निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम-२००९' और 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप २००५' के अनुसार महाराष्ट्र में 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या २०१२' द्वारा शालेय पाठ्यक्रम बनाया गया । इस पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन शालेय वर्ष २०१३-१४ से क्रमशः प्रारंभ हुआ है । प्रस्तुत पाठ्यक्रम में यह स्पष्ट किया गया है कि तीसरी कक्षा से पाँचवीं कक्षा तक सामान्य विज्ञान, नागरिकशास्त्र और भूगोल विषय एकत्र रूप में 'परिसर अध्ययन भाग-१' में समाविष्ट रहेंगे तथा इतिहास विषय 'परिसर अध्ययन भाग-२' में स्वतंत्र रूप से समाविष्ट रहेगा ।

शासनमान्य पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्यपुस्तक मंडल ने चौथी कक्षा की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक तैयार की है ।

अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया बालकेंद्रित हो, स्वयं अध्ययन पर बल दिया जाए, छात्र प्राथमिक शिक्षा के अंत तक 'उचित क्षमताएँ' प्राप्त करें; अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया आनंददायी हो; इस व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पुस्तक तैयार की गई है ।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में छत्रपति शिवाजी महाराज का प्रेरणादायी इतिहास सरल एवं प्रभावशाली शैली में कहानी के माध्यम से छात्रों के सम्मुख रखने का प्रयास किया गया है । शिवाजी महाराज का चरित्र और उनके कार्य संपूर्ण महाराष्ट्र और देश के लिए प्रेरणास्रोत माने जाते हैं । पाठ्यपुस्तक में शिवाजी महाराज के जीवन की स्फूर्तिदायी और प्रेरक घटनाएँ दी गई हैं । प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के संदर्भ में विविध सामाजिक संगठनों, संस्थाओं और व्यक्तिगत स्तर पर आई शिकायतों और सुझावों की समिति द्वारा उचित पद्धति से छान-बीन करने के पश्चात पाठ्यपुस्तक का पुनर्लेखन किया गया है तथा आवश्यकतानुसार सुधार भी किए गए हैं ।

पाठ्यपुस्तक को अधिकाधिक निर्दोष और स्तरीय बनाने के लिए महाराष्ट्र के कुछ शिक्षाविदों और विषयतज्ञों द्वारा इस पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । प्राप्त सुझावों और अभिप्रायों का ध्यानपूर्वक विचार कर प्रस्तुत पुस्तक को अंतिम स्वरूप दिया गया है । इतिहास विषय समिति, चित्रकार, छायाचित्रकार ने अत्यंत आस्था और परिश्रमपूर्वक इस पुस्तक को तैयार किया है ।

आशा है कि विद्यार्थी, अध्यापक और अभिभावक प्रस्तुत पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे
दिनांक : १९.०२.२०१४

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

छत्रपति शिवाजी (परिसर अध्ययन भाग – २) अध्ययन निष्पत्ति : चौथी कक्षा

अध्ययन के लिए सुझाई हुई शैक्षणिक प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति	
सभी विद्यार्थियों को अनुभवों का अवसर गुट/जोड़ी-जोड़ी से व्यक्तिगत रूप से देकर उन्हें निम्न बातों के लिए प्रेरित करना ।	**विद्यार्थी –**	
• परिवार के वरिष्ठ (जेष्ठ/सदस्यों से चर्चा करना और प्रश्न पूछना) जैसे – परिवार के कुछ लोग एक साथ रहते हैं, चर्चा करते हैं और कुछ दूर रहते हैं, यह समझकर दूर रहने वाले रिश्तेदार, स्नेही इनसे संभाषण कर, उनके घर, यातायात के साधन और उनके स्थान, लोक-जीवन इस विषय में जानकारी हासिल करना । • निडरता या बिना झिझकते अनुभवों के आधार पर प्रश्न तैयार करना और मनन करना । • माता-पिता/अभिभावक/दादी-दादा, पड़ोस के बुजुर्गों से चर्चा करना और उनके जीवन के भूतकालीन और वर्तमान दैनिक उपयोगी वस्तुएँ जैसे – कपड़े, बर्तन, कामों का स्वरूप, खेल की तुलना करना, विशेष जरूरतमंद बालकों का समावेश न करना । • शिवाजी महाराज की जीवनी से संबंधित घटनाओं पर आधारित भूमिका पालन करना । • संकटों को गुटचर्चा के द्वारा धैर्य, परिश्रम, समयसूचकता की सहायता से किस प्रकार मात दी जा सकती है, इसकी खोज करना । • घर/विद्यालय/समाज में आयोजित किए हुए विविध सांस्कृतिक/राष्ट्रीय/पर्यावरण, उत्सव/विविध प्रसंगों में हिस्सा लेना जैसे – प्रातःकालीन या विशेष सभा प्रदर्शनी/दीवाली/ओणम/वसुंधरा दिन/ईद आदि । वैसे ही कार्यक्रमों में नृत्य, नाटिका, अभिनय, सर्जनशील लेखन, कृति करना । (जैसे – दीए/रंगोली/पतंग बनाना/इमारतों की प्रतिकृतियाँ, नदियों के ऊपरी पुल की प्रतिकृति बनाना आदि । कथा, कविता, उद्घोषणाएँ, घटनाओं का वृत्तांत कथन, सर्जनशील लेखन अथवा किसी सर्जनशील कृति का प्रस्तुतीकरण करना । • पाठ्यपुस्तकों के साथ दूसरे संसाधनों को पढ़ना/खोजना जैसे समाचार पत्रों की कतरनें, श्राव्य सामग्री/कथा/कविता/चित्र/चित्रफिती/स्पर्श से महसूस होने वाली सामग्री, अंतरजाल/ग्रंथालय, तत्सम अन्य कोई भी सामग्री । • शिवाजी महाराज की जीवनी के उदाहरणों द्वारा पर्यावरण रक्षा जलसाक्षरता, समता, न्याय आदि के संदर्भ में सजगता विकसित करना । • पारंपरिक एवं आधुनिक पोशाकों में पाया जानेवाला अंतर समझ लेना । • राज्य की बोली भाषा, त्यौहार-पर्व, उत्सवों की जानकारी प्राप्त करना ।	04.95B.01 04.95B.02 04.95B.03 04.95B.04 04.95B.05 04.95B.06	विस्तारित कुटुंब में अपने तथा परिवार के अन्य सदस्यों के आपसी रिश्तों को पहचानते हैं । परिवार/विद्यालय/पड़ोस इन स्थानों पर निरीक्षण और अनुभव की हुई/समस्याओं पर स्वयं की राय देते हैं । (जैसे साँचाबद्ध रूप/भेदभाव/बाल अधिकार) गुट में एक साथ काम करते समय एक-दूसरे के प्रति आस्था, समानानुभूती और नेतृत्व गुण इन विषयों में अग्रणी रहते हैं और सक्रिय सहभाग लेते हैं । जैसे – अंतर्गृही (Indoor)/ बाहरी (Outdoor)/स्थानीय/समकालीन उपक्रम और खेल वैसे ही वनस्पतियों का ध्यान रखना, पशुपक्षियों को खाना देना आसपास की वस्तुओं/बुजुर्ग/दिव्यांगों के लिए प्रकल्प तैयार करना/भूमिका निभाना । छत्रपति शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व की विविध स्फूर्तीदायी घटनाएँ बताते हैं । चतुरता, धैर्य और विवेक की वजह से मुसीबतों का सामना कर सकते हैं, यह बात शिवचरित्र से आत्मसात करते हैं । भौगोलिक और सांस्कृतिक कारणों से वस्त्रों में होने वाली विविधता बताते हैं ।

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	शिवाजी महाराज–जन्म के पूर्व का महाराष्ट्र	१
२.	संतों के कार्य	३
३.	मराठा सरदार – भोसलों का पराक्रमी घराना	८
४.	शिवाजी महाराज का बचपन	१२
५.	शिवाजी महाराज की शिक्षा व्यवस्था	१७
६.	स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा	२१
७.	स्वराज्य का प्रारंभ	२५
८.	आंतरिक शत्रुओं पर नियंत्रण	२९
९.	प्रतापगढ़ पर पराक्रम	३२
१०.	दर्रे में घमासान युद्ध	३७
११.	शाइस्ता खान की दुर्दशा	४२
१२.	पुरंदर का घेरा और संधि	४५
१३.	बादशाह को चकमा दिया	५०
१४.	गढ़ आया पर सिंह गया	५३
१५.	एक अपूर्व समारोह	५७
१६.	दक्षिण अभियान	६०
१७.	गढ़ों और नौसेना का प्रबंधनअभियान	६५
१८.	लोककल्याणकारी स्वराज्य का प्रबंधन	७०

शिवाजी महाराज केवल महाराष्ट्र के ही नहीं बल्कि समस्त राष्ट्र के थे । उन्होंने महापुरुषों की शिक्षा से प्रेरणा ली थी । व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा से स्वयं के लिए राज्य की स्थापना करना; उनकी इच्छा नहीं थी । उन्होंने तत्कालीन शासन व्यवस्था के गुण-दोषों का अध्ययन किया । परिणामस्वरूप अपनी विशिष्ट नीति और शासनव्यवस्था निर्धारित की । शिवाजी महाराज स्वयं धर्मनिष्ठ हिंदू थे पर अन्य धर्मों के प्रति उनकी भावना उदार थी । अन्य धर्मावलंबियों के पूजा स्थानों के निर्माण के लिए उन्होंने धन दिया । शिवाजी महाराज एक महान सेनानी थे । स्वतंत्रता की रक्षा के लिए जलसेना की आवश्यकता एवं महत्त्व का उन्हें ज्ञान था । अंग्रेजों एवं डच लोगों के आक्रमण से रक्षा करने के लिए उन्होंने शक्तिशाली नौसेना का निर्माण किया । प्रतापगढ़ की रचना देखकर उनकी युद्धकला की निपुणता का आभास होता है । शिवाजी महाराज का अपने देश पर असीम प्रेम था और मानवीय सद्गुणों की तो वे साक्षात प्रतिमूर्ति थे ।

- पंडित जवाहरलाल नेहरू

शिवकालीन चित्रकार मीर मुहम्मद द्‌वारा बनाया गया शिवाजी महाराज का चित्र ।

(मूल प्रति पेरिस के संग्रहालय में है ।)

१. शिवाजी महाराज – जन्म के पूर्व का महाराष्ट्र

शिवाजी महाराज महान पुरुष थे । प्रतिवर्ष हम उनकी जयंती बड़ी धूमधाम और सम्मान के साथ मनाते हैं । तुम बच्चे तो उस दिन कितने प्रसन्न रहते हो ! उनके सुंदर-सुंदर गीत गाते हो, उनका यशगान करते हो । उनकी प्रतिमा को पुष्पहार अर्पित करते हो । बड़े उत्साह से 'शिवाजी महाराज की जय' बोलकर उनके नाम की जयजयकार करते हो । कौन थे ये शिवाजी महाराज ? ऐसे कौन-से महान कार्य उन्होंने किए हैं ?

शिवाजी महाराज का कालखंड मध्य युग का कालखंड था । उस समय सर्वत्र राजाओं का शासन था । कई राजा जनकल्याण की अपेक्षा अपने ही भोग-विलास में डूबे रहते थे किंतु उस समय ऐसे भी शासक हुए जिन्होंने प्रजाहित को सर्वोपरि मानकर राज्य चलाया । उत्तर में मुगल सम्राट अकबर, दक्षिण में विजयनगर के सम्राट कृष्णदेवराय अपने कल्याणकारी शासन के लिए इतिहास में प्रसिद्ध हैं । इन्हीं राजाओं के साथ शिवाजी महाराज का नाम भी गौरव के साथ लिया जाता है ।

शिवाजी महाराज ने महाराष्ट्र में स्वराज्य की स्थापना की । 'स्वराज्य' का अर्थ है – अपना राज्य । शिवाजी महाराज के लगभग चार सौ वर्ष पूर्व महाराष्ट्र में स्वराज्य नहीं था । महाराष्ट्र का अधिकांश भाग अहमदनगर के निजामशाह तथा बीजापुर के आदिलशाह नामक सुलतानों ने आपस में बाँट लिया था । वे उदार मन के नहीं थे । वे प्रजा पर अत्याचार करते थे । उन दोनों सुलतानों में प्राणघाती शत्रुता थी । उनमें प्रायः युद्ध हुआ करते थे । इससे प्रजा की बड़ी दुर्दशा होती थी । प्रजा सुखी नहीं थी । सार्वजनिक रूप से उत्सव मनाने तथा पूजा करने में भी खतरा था । प्रजा को भरपेट भोजन नहीं मिलता था । रहने के स्थान भी सुरक्षित नहीं थे । चारों ओर अन्याय फैला हुआ था । महाराष्ट्र में यद्यपि स्थान-स्थान पर देशमुख, देशपांडे आदि जागीरदार थे परंतु प्रजा की ओर उनका कोई ध्यान नहीं था । देश के प्रति उनमें प्रेम की भावना नहीं थी । उनको केवल अपनी जागीरदारी और ओहदे से प्रेम था । जागीर को लेकर उनमें प्रायः झगड़े हुआ करते थे । वे आपस में लड़ते रहते थे । परिणामस्वरूप प्रजा की बड़ी दुर्दशा होती थी । इससे प्रजा बहुत त्रस्त हो चुकी थी । चारों ओर अराजकता फैली हुई थी ।

शिवाजी महाराज ने यह सब देखा । उन्होंने प्रजा को सुखी बनाने के उद्देश्य से स्वराज्य स्थापना का पावन कार्य अपने हाथों में लिया । झगड़ालू जागीरदारों को वे सही रास्ते पर ले आए । स्वराज्य प्राप्ति के लिए उन्होंने उनका उचित उपयोग करवा लिया । प्रजा पर अत्याचार करने वाली सत्ताओं से भी शिवाजी महाराज ने संघर्ष किया । अत्याचारी शासकों को पराजित किया । उन्होंने न्यायपूर्ण 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना की । यह स्वराज्य सभी जातियों और धर्मों के लोगों के लिए था । स्वराज्य में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था । शिवाजी महाराज ने अपने स्वराज्य में हिंदू और मुसलमानों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया । उन्होंने सभी धर्मों के साधु-संतों का सम्मान किया । शिवाजी महाराज

के महान कार्य देखकर हमें प्रेरणा तथा स्फूर्ति मिलती है ।

शिवाजी महाराज से लगभग तीन-चार सौ वर्ष पूर्व महाराष्ट्र में अनेक संत हुए । शिवाजी महाराज ने उनके कार्यों का स्वराज्य स्थापना के लिए उपयोग किया । उन कार्यों को हम अगले पाठ में पढ़ेंगे ।

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शिवाजी महाराज का कालखंड .... युग का कालखंड था ।
(प्राचीन, मध्य, आधुनिक)

(आ) शिवाजी महाराज ने .... में स्वराज्य की स्थापना की ।
(महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश)

२. उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' स्तंभ	'ब' स्तंभ
(अ) विजयनगर का सम्राट	(१) निजामशाह
(आ) अहमदनगर का सुलतान	(२) आदिलशाह
(इ) बीजापुर का सुलतान	(३) कृष्णदेवराय
	(४) सम्राट अकबर

३. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) प्रजाहित में शासन करने वाले राजाओं के नाम लिखो ।

(आ) शिवाजी महाराज ने कौन-सा कार्य अपने हाथों में लिया ?

(इ) शिवाजी महाराज ने किसके साथ संघर्ष किया ?

४. भिन्न शब्द पहचानो :

(अ) स्वराज्य, पराधीनता, स्वतंत्रता

(आ) जनता, प्रजा, राजा

उपक्रम

(अ) तुम अपनी कक्षा में शिवजयंती मनाओ ।

(आ) विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में ऐतिहासिक गीत, यशगान प्रस्तुत करो ।

68JHOK

२. संतों के कार्य

महाराष्ट्र में श्रीचक्रधर, संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, संत चोखामेला जैसे संतों से संत परंपरा प्रारंभ हुई । इस संत परंपरा को समाज के विभिन्न वर्गों से आए हुए संतों ने आगे बढ़ाया । इन संतों में संत गोरोबा, संत सावता, संत नरहरी, संत एकनाथ, संत शेख मुहम्मद, संत तुकाराम, संत निलोबा आदि संतों का समावेश होता है । इसी तरह संत जनाबाई, संत सोयराबाई, संत निर्मलाबाई, संत मुक्ताबाई, संत कान्होपात्रा और संत बहिणाबाई शिऊरकर का भी समावेश होता है ।

इन संतों ने लोगों को दया, अहिंसा, परोपकार, सेवा, समता तथा बंधुता आदि गुणों की शिक्षा दी । कोई छोटा नहीं; कोई बड़ा नहीं, सभी समान हैं; यह समता भाव उन्होंने लोगों के मन में उत्पन्न किया । इसी भाँति महाराष्ट्र में समर्थ रामदास ने भी अपना कार्य किया ।

श्रीचक्रधर स्वामी : श्रीचक्रधर स्वामी मूलतः गुजरात के राजपुत्र थे । वे संन्यास धारण कर महाराष्ट्र में आए । यहाँ भ्रमण करते हुए उन्होंने समता का उपदेश दिया । उन्हें स्त्री-पुरुष, जाति-पाँति जैसा भेदभाव मान्य नहीं था । इसी कारण अनेक स्त्री-पुरुष उनके अनुयायी बने । उनके द्वारा स्थापित पंथ को 'महानुभाव पंथ' कहते हैं । 'लीलाचरित्र' नामक ग्रंथ श्रीचक्रधर स्वामी के संस्मरणों का संग्रह है ।

श्रीचक्रधर स्वामी

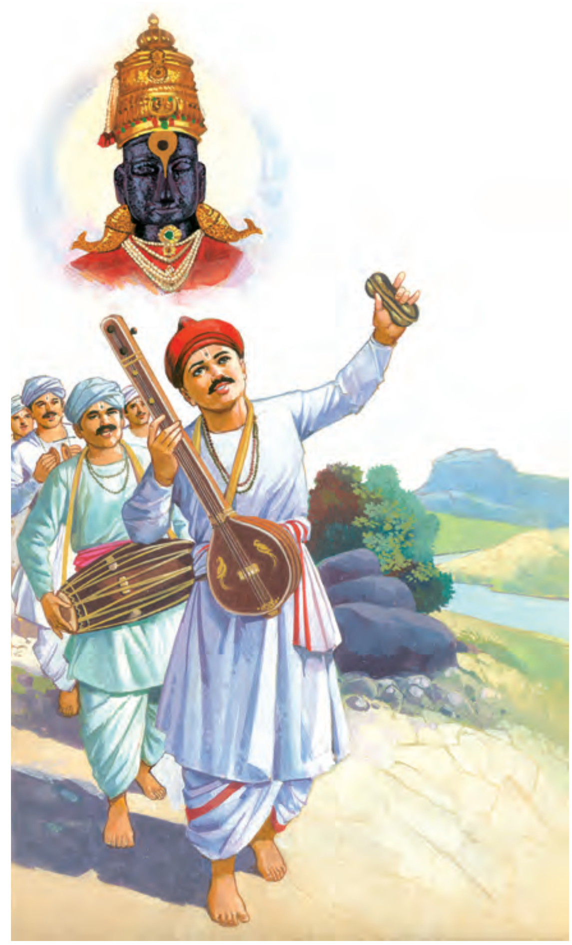

संत नामदेव

संत नामदेव : संत नामदेव विठ्ठल के परम भक्त थे । वे नरसी गाँव के रहनेवाले थे । उन्होंने अनेक 'अभंग' रचे, कीर्तन किए और जनता में जागृति उत्पन्न की । भागवत धर्म के प्रसार के लिए वे महाराष्ट्र में जगह-जगह घूमे । उन्होंने लोगों को अगाध भक्ति की शिक्षा दी । लोगों के मन में धर्म रक्षा और भक्ति भाव के प्रति दृढ़ आस्था का निर्माण किया । आगे चलकर संत नामदेव ने भारत भ्रमण किया और मानव धर्म का संदेश पहुँचाया । वे पंजाब गए । वहाँ उन्होंने लोगों को समानता का संदेश दिया । उन्होंने हिंदी भाषा में पद लिखे । उनके कुछ पद आज भी सिखों के धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथसाहिब' में संकलित हैं । महाराष्ट्र के घर-घर में उनके 'अभंग' बड़े भक्तिभाव से गाए जाते हैं ।

संत ज्ञानेश्वर : संत ज्ञानेश्वर आपेगाँव के रहने वाले थे । निवृत्तिनाथ और सोपानदेव उनके भाई थे तथा मुक्ताबाई उनकी बहन थीं । उस समय के कट्टरपंथी लोग इन बच्चों पर संन्यासी के बच्चे कहकर दोष लगाते थे । उसका कारण यह था कि उनके पिता जी ने संन्यास धारण कर लिया था। फलतः उन्होंने घर-द्वार छोड़ दिया था। उसके पश्चात गुरु जी की आज्ञा से वे फिर घर वापस आए और एक गृहस्थ का जीवन बिताने लगे । कालांतर में उनकी ये चार संतानें हुईं । उस समय के कट्टरपंथी लोगों को यह मान्य नहीं था । लोगों ने उनका बहिष्कार किया । लोग उन बच्चों को प्रताड़ित करते थे ।

एक बार संत ज्ञानेश्वर झोली लेकर गाँव में गए परंतु किसी ने उन्हें भिक्षा नहीं दी । सभी जगह उन्हें जली-कटी बातें सुननी पड़ीं । इससे उनके बाल मन को बहुत दुख हुआ । वे अपनी झोंपड़ी में आए और झोंपड़ी का दरवाजा बंद करके अत्यंत दुखी होकर बैठ गए । उसी समय वहाँ मुक्ता आ गई । घास-फूस के बने दरवाजे को खटखटाकर वह संत ज्ञानेश्वर से कहने लगीं, ''ज्ञानेश्वर भैया ! दरवाजा खोलो । आप ही निराश और दुखी होंगे तो कैसे चलेगा ! संसार का कल्याण कौन करेगा ?'' बहन की बातें सुनकर वे उत्साहित हुए । अपना दुख भूलकर वे सामाजिक कार्य में जुट गए । उस समय जगह-जगह गरीबों और पिछड़ी जातियों को धर्म के नाम पर सताया जाता था । संत ज्ञानेश्वर ने लोगों को अंतःकरण से उपदेश दिया - ''ईश्वर पर श्रद्धा रखो । सभी के साथ समता का आचरण करो । दुखी लोगों की सहायता करो; उनके दुख दूर करो ।'' विगत सात सौ वर्षों से उनके उपदेश महाराष्ट्र के कोने-कोने में लगातार गूँज रहे हैं ।

संत ज्ञानेश्वर

उस समय धर्म का ज्ञान संस्कृत ग्रंथों में ही बंद था । सर्वसामान्य लोगों की बोलचाल और कामकाज की भाषा मराठी ही थी । संत ज्ञानेश्वर ने मराठी भाषा में 'ज्ञानेश्वरी' नामक महान ग्रंथ लिखा । धर्म के ज्ञान भंडार को उन्होंने सबके

संत एकनाथ

लिए खोल दिया । लोगों को बंधुता की शिक्षा दी । संत ज्ञानेश्वर ने युवावस्था में ही पुणे के पास आलंदी नामक गाँव में जीवित समाधि ले ली । आज भी लाखों लोग प्रति वर्ष आषाढ़ी और कार्तिकी एकादशी के दिन बड़े भक्तिभाव से आलंदी और पंढरपुर जाते हैं ।

संत एकनाथ : संत नामदेव तथा संत ज्ञानेश्वर की कार्य परंपरा को आगे चलाने का कार्य संत एकनाथ ने किया । संत एकनाथ पैठण के रहने वाले थे । उन्होंने भक्तिमार्ग का प्रचार किया । उन्होंने बहुत-से 'अभंग', ओवियाँ (सबद) और भारूड़ (व्यंग्य गीत) लिखे । 'किसी भी प्रकार का ऊँच-नीच का भेद मत मानो', यह उपदेश उन्होंने लोगों को दिया और भक्ति की महानता समझाई । गरीब तथा पिछड़ी जाति के लोगों को उन्होंने अपनाया । इतना ही नहीं बल्कि मूक प्राणियों पर भी उन्होंने दया की । उन्होंने लोगों को 'प्राणिमात्र पर दया करो', का उपदेश किया । संत एकनाथ जैसा कहते थे; वैसा ही करते थे ।

एक दिन वे गोदावरी नदी में स्नान करने के लिए जा रहे थे । दोपहर का समय था, चिलचिलाती धूप थी । नदी तट की रेत तप रही थी । वहाँ पर एक असहाय बच्चा बैठा हुआ रो रहा था । उसके रोने की आवाज संत एकनाथ के कानों में पड़ी । उन्होंने उसके माता-पिता को ढूँढ़ने के लिए अपनी दृष्टि इधर-उधर दौड़ाई । वे दौड़ते हुए उस बच्चे के पास गए । उन्होंने उस बच्चे को उठाकर गोद में ले लिया । उसकी आँखें पोंछीं । उसे उसके घर पहुँचाया ।

इस प्रकार स्वयं के व्यवहार से संत एकनाथ ने लोगों के मन में समता तथा ममता की भावना दृढ़ की ।

संत तुकाराम : शिवाजी महाराज के समय संत तुकाराम तथा रामदास नामक संत हुए । संत तुकाराम पुणे के पास देहू नामक गाँव में रहते थे । उनकी खेती-बाड़ी थी और अनाज की दुकान भी थी । उनके पूर्वज संकटग्रस्त लोगों को ऋण देते थे पर संत तुकाराम ने अपने हिस्से में आए ऋणपत्रों को इंद्रायणी नदी में डुबो दिया और लोगों को ऋण से मुक्त कर दिया । पास की पहाड़ी पर जाकर वे विठ्ठल

के भजन करते थे । आषाढ़ तथा कार्तिक महीने में वे पंढरपुर जाते थे । वहाँ वे कीर्तन करते, 'अभंग' रचते और लोगों को अभंग गाकर सुनाते थे । हजारों लोग उनका कीर्तन सुनने के लिए आते थे । शिवाजी महाराज भी उनका कीर्तन सुनने के लिए जाया करते थे । संत तुकाराम लोगों को दया, क्षमा और शांति की शिक्षा देते थे, समानता का उपदेश देते थे ।

संत तुकाराम

'जे का रंजले गांजले । त्यांसी म्हणे जो आपुले
तोचि साधु ओळखावा । देव तेथेचि जाणावा ।'

अर्थात 'दुखी और पीड़ितों को जो अपना समझता है; वही सच्चा साधु है । उसी को ईश्वर समझो ।' यह संदेश उन्होंने लोगों को देकर विचारशील बनाया । लोग संत तुकाराम की जयजयकार करने लगे । आज भी महाराष्ट्र में हमें 'ज्ञानबा-तुकाराम' का जयघोष सुनाई देता है । ज्ञानेश्वर को ही ज्ञानबा कहते हैं । आज भी 'तुकाराम गाथा' का पाठ घर-घर में होता है ।

समर्थ रामदास : इसी कालखंड में महाराष्ट्र की पर्वतीय घाटियों में समर्थ रामदास का नारा 'जय जय रघुवीर समर्थ' गूँज रहा था । उनका जन्म मराठवाड़ा में गोदावरी नदी के किनारे जांब नामक गाँव में रामनवमी के दिन हुआ । रामदास का मूल नाम नारायण था परंतु वे स्वयं को 'राम का दास' कहलवाने लगे । उन्होंने अपने 'दासबोध' ग्रंथ के माध्यम से लोगों को अमूल्य उपदेश दिया । उसी प्रकार उन्होंने 'मनाचे श्लोक' (मन के श्लोक) नामक रचना द्वारा लोगों को सद्विचार और सद्व्यवहार की शिक्षा दी । शक्ति की उपासना के लिए उन्होंने जगह-जगह हनुमान जी के मंदिर बनवाए । लोगों को शक्ति की उपासना करना सिखाया । 'क्रांति में

समर्थ रामदास

बड़ी शक्ति होती है । जो क्रांति करता है; वह समर्थ होता है ।' यह संदेश उन्होंने लोगों को दिया । समर्थ रामदास ने लोगों को संगठन बनाने तथा अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा दी । तत्कालीन लोगों में साहस का निर्माण हुआ ।

साधु-संतों के कार्यों से लोग जागृत हुए । धर्म के प्रति आदरभाव बढ़ा । लोगों के मन में आत्मविश्वास पैदा हुआ । संतों के इन कार्यों का उपयोग शिवाजी महाराज ने स्वराज्य स्थापना के लिए किया ।

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो :

(अ) संत नामदेव .... के परम भक्त थे ।

(आ) संत ज्ञानेश्वर ने युवावस्था में ही पुणे के पास .... नामक गाँव में जीवित समाधि ले ली ।

(इ) संत तुकाराम ने अपने हिस्से में आए ऋणपत्रों को .... नदी में डुबो दिया ।

(ई) शक्ति की उपासना के लिए समर्थ रामदास ने जगह-जगह .... के मंदिर बनवाए ।

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) श्रीचक्रधर स्वामी को कौन-सा भेदभाव मान्य नहीं था ?

(आ) संत नामदेव ने लोगों के मन में किस दृढ़ आस्था का निर्माण किया ?

(इ) संत एकनाथ ने लोगों को कौन-सा उपदेश दिया ?

(ई) समर्थ रामदास ने कौन-सा संदेश दिया ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) संत ज्ञानेश्वर झोंपड़ी का दरवाजा बंद करके क्यों बैठ गए ?

(आ) संत तुकाराम ने लोगों को कौन-सा संदेश दिया ?

उपक्रम

पाठ में आए हुए संतों के अतिरिक्त अन्य संतों के चित्रों का संकलन करके नीचे उनके विचार लिखो ।

68TQ58

३. मराठा सरदार – भोसलों का पराक्रमी घराना

अस्थिरता का समय : संतों ने जिस प्रकार लोगों के मन में भक्तिभाव का संचार किया, उसी प्रकार वीर मराठा सरदारों ने महाराष्ट्र में शौर्यपरंपरा का निर्माण किया ।

वह समय अत्यंत ही अस्थिरता का समय था । महाराष्ट्र में बीजापुर के आदिलशाह और अहमदनगर के निजामशाह के बीच हमेशा युद्ध होता था । युद्ध के लिए सेना की आवश्यकता होती थी । इस काम में वे मराठा सरदारों की सहायता लेते थे ।

शूर वीर मराठा सरदार : मराठा जैसे जीवटवाले और शूरवीर थे वैसे ही वे साहसी तथा स्वामिभक्त भी थे । युद्ध में बड़े-बड़े पराक्रम दिखाना उनके लिए गर्व की बात थी । हाथ में भाला, कमर में तलवार लटकाए साहसी मराठा जवान घोड़े पर सवार होकर अपने सरदारों की सेना में शामिल होते थे । उनके पास सेना रहती थी । सेना रखने वाला मराठा सरदार जब भी सुलतान के पास जाता था तो वह उसे अपनी नौकरी में रख लेता था । सुलतान उसे सरदार का पद देता था । कभी-कभी जागीर भी देता था । जागीर पानेवाला सरदार अपने-आपको उस जागीर का राजा मानता था ।

बीजापुर और अहमदनगर के सुलतानों के दरबार में कई बड़े-बड़े मराठा सरदार थे । उनमें सिंदखेड़ के जाधव, फलटण के निंबालकर, मुधोल के घोरपड़े, जावली के मोरे तथा एलोरा के भोसले आदि प्रमुख सरदार थे। सिंदखेड़ के जाधव देवगिरी के यादवों के वंशज थे । शिवाजी महाराज की माता जी जिजाबाई सिंदखेड़ के लखुजी जाधव की बेटी थीं ।

शौर्य की परंपरा : ये सरदार बड़े शूर वीर थे परंतु उनमें से कई सरदारों में परस्पर बड़ी शत्रुता थी । संगठित होकर पारस्परिक हित के लिए कुछ करना चाहिए; ऐसा विचार वे कभी नहीं करते थे । यही कारण था कि उनका शौर्य उस समय दूसरों के काम आता था, लेकिन ऐसा होते हुए भी मराठा सरदारों ने महाराष्ट्र के हजारों जवानों में वीरता की भावना भरी । उन्होंने बहुत-से पराक्रमी वीर तैयार किए । मराठा सरदारों ने महाराष्ट्र में शौर्य परंपरा को जीवित रखा । महाराष्ट्र के शूर घरानों में से एलोरा का भोसले घराना बहुत ही बहादुर निकला ।

घृष्णेश्वर का मंदिर : लगभग चार सौ वर्ष पूर्व की बात है । एलोरा की गुफाओं के पास घृष्णेश्वर का सुंदर मंदिर जीर्ण अवस्था को प्राप्त हो चुका था । उसकी दीवारों में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गई थीं । मंदिर का पुजारी भी मंदिर छोड़कर चला गया था । इतने महान देवता और उनके मंदिर की ऐसी दुर्दशा ! उस मंदिर को देखकर भक्तों को बड़ा दुख होता था । आगंतुक भी पीड़ा से भर जाते किंतु उसकी मरम्मत की बात कौन सोचता ?

एक शिवभक्त रोज नियमपूर्वक उस जीर्ण मंदिर में आता था । शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाता था । हाथ जोड़कर अपने मन की इच्छा भगवान

शहाजीराजे

शिव से कहता था । एक दिन उसने मजदूरों को साथ लिया और मंदिर की जीर्ण दीवारों की मरम्मत करवाई । उसकी सारी व्यवस्था ठीक कर दी । घृष्णेश्वर का खोया हुआ वैभव लौट आया । यह सब किसने किया ? कौन था यह शिवभक्त ! वे थे मालोजीराजे भोसले ।

एलोरा के भोसले : एलोरा गाँव के पाटिल मालोजीराजे भोसले महान शिवभक्त थे । विठोजीराजे उनके छोटे भाई थे । ये एलोरा के बाबाजीराजे भोसले के बेटे थे । एलोरा के पाटिल के अधिकार बाबाजीराजे भोसले को मिले थे ।

मालोजीराजे और विठोजीराजे कर्तव्यनिष्ठ और शूर थे । उनके दरबार में कई सशस्त्र मराठे थे । वह समय बड़ी अस्थिरता का था । उत्तर के मुगल शासक ने निजामशाही पर आक्रमण कर दिया था । तत्कालीन दौलताबाद निजामशाह की राजधानी थी । वहाँ मलिक अंबर नामक उसका एक वजीर था । वह बड़ा पराक्रमी और बुद्‌धिमान था । उसने दौलताबाद के निकट स्थित एलोरा के भोसले बंधुओं का पराक्रम देखा था । अतः उसने निजामशाह से उनके शौर्य की प्रशंसा की । निजामशाह ने मालोजीराजे को पुणे और सुपे परगनों की जागीर दे दी ।

भोसले का घर वैभवसंपन्न हो गया । उमाबाई मालोजीराजे की पत्नी थीं । वे फलटण के निंबालकर घराने की थीं । उनके दो बेटे थे । एक का नाम शहाजी और दूसरे का नाम शरीफजी था । शहाजी जब पाँच वर्ष के थे तब मालोजीराजे ने इंदापुर के युद्‌ध में वीरगति पाई । विठोजीराजे ने अपने भतीजे और उनकी जागीर की रक्षा की । उन्होंने शहाजीराजे के साथ लखुजीराव जाधव की बेटी के विवाह का प्रस्ताव रखा । लखुजीराव जाधव की बेटी जिजाबाई सुलक्षणा थीं । जिजाबाई के लिए विठोजीराजे द्‌वारा रखे हुए प्रस्ताव को लखुजीराव ने स्वीकार किया । लखुजीराव निजामशाही के शूर और पराक्रमी सरदार थे । उनके पास बहुत बड़ी सेना थी । निजामशाह के दरबार में भी उनका बड़ा सम्मान था । उन्होंने शहाजीराजे और जिजाबाई का विवाह बड़ी धूमधाम से संपन्न किया । जिजाबाई भोसले परिवार की लक्ष्मी बनीं ।

शहाजीराजे : निजामशाह ने मालोजीराजे की जागीर शहाजीराजे को दी । शहाजीराजे पराक्रमी थे । निजामशाह के दरबार में उनका बड़ा सम्मान था । उत्तर के मुगल सम्राट ने निजामशाही को जीतने की योजना बनाई । बीजापुर का आदिलशाह भी उनसे मिल गया था । तब निजामशाही को बचाने के लिए मलिक अंबर और शहाजीराजे दृढ़तापूर्वक लड़े । दोनों सेनाओं को उन्होंने पराजित किया । यह विख्यात युद्‌ध अहमदनगर के पास भातवड़ी नामक स्थान पर हुआ । इस युद्‌ध में शरीफजी वीरगति को प्राप्त हुए किंतु शहाजीराजे ने वीरता का परिचय दिया । अतः उनको शूर सेनानी के रूप में ख्याति प्राप्त हुई । दरबार में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी ; फलस्वरूप मलिक अंबर उनसे ईर्ष्या करने लगा । इस कारण उन दोनों में वैमनस्य बढ़ता गया । अतः शहाजीराजे ने निजामशाही छोड़ दी और वे बीजापुर के आदिलशाह के पास चले गए । आदिलशाह ने उन्हें सर्वोच्च 'सरलश्कर' की पदवी से सम्मानित किया । कालांतर में निजामशाही में बड़ी उथल-पुथल हुई । वजीर मलिक अंबर की मृत्यु

हुई । उसका पुत्र फतह खान धूर्त था । अब वह निजामशाही का वजीर बना । उसके कार्यकाल में निजामशाही का पतन होने लगा । मुगलों के आक्रमण का भय उत्पन्न हुआ । निजामशाही को इस स्थिति से उबारने के लिए निजामशाह की माँ ने शहाजीराजे से वापस आने के लिए प्रार्थना की । तब शहाजीराजे आदिलशाही को छोड़कर निजामशाही में वापस लौट आए ।

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) महाराष्ट्र के शूर घरानों में से एलोरा के .... बहुत ही बहादुर निकले । (मोरे, घोरपड़े, भोसले)

(आ) बाबाजीराजे भोसले के मालोजीराजे और .... दो बेटे थे । (विठोजीराजे, शहाजीराजे, शरीफजी)

(इ) .... निजामशाह का वजीर था । (मलिक अंबर, फतह खान, शरीफजी)

२. रिश्ता बताओ :

(अ) मालोजी राजे – विठोजी राजे ....

(आ) शहाजी राजे – लखुजीराव जाधव ....

(इ) शहाजी राजे – शरीफजी ....

(ई) बाबाजी राजे – विठोजी राजे ....

३. उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' स्तंभ	'ब' स्तंभ
(अ) सिंदखेड़	(१) निंबालकर
(आ) फलटण	(२) घोरपड़े
(इ) जावली	(३) भोसले
(ई) मुधोल	(४) मोरे
	(५) जाधव

४. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) घृष्णेश्वर के मंदिर का जीर्णोद्धार किसने करवाया ?

(आ) निजामशाह ने मालोजीराजे को किन परगनों की जागीर दी ?

(इ) निजामशाही को बचाने के लिए कौन वीरता पूर्वक लड़े ?

(ई) आदिलशाह ने शहाजीराजे को किस उपाधि से सम्मानित किया ?

(उ) शहाजीराजे आदिलशाही छोड़कर वापस निजामशाही में क्यों लौट आए ?

उपक्रम

महाराष्ट्र के मानचित्र में अहमदनगर, फलटण, एलोरा, पुणे, सुपे को दिखाओ ।

टिप्पणी : यहाँ 'मराठा' शब्द 'विशिष्ट जाति/समाज का व्यक्ति' इस अर्थ में नहीं है बल्कि मराठी भाषी अथवा 'महाराष्ट्रीय' इस अर्थ को सूचित करता है ।

6939TV

४. शिवाजी महाराज का बचपन

शिवनेरी किले में शिवाजी महाराज का जन्म स्थान

शिवाजी महाराज का जन्म : उन दिनों चारों ओर अराजकता थी । उत्तर भारत से मुगल शासक शाहजहाँ ने दक्षिण को जीतने के लिए विशाल सेना भेजी थी । पुणे शहाजीराजे की जागीर थी । बीजापुर के आदिलशाह ने उसे ध्वस्त कर दिया था । शहाजीराजे अनेक कठिनाइयों से घिर गए थे-यहाँ कुआँ, वहाँ खाई । उनके जीवन में अस्थिरता आ गई थी ।

इन्हीं परिस्थितियों में जिजाबाई गर्भवती थीं तब यह प्रश्न सामने आया कि ऐसी अराजकता की स्थिति तथा भाग-दौड़ में उन्हें कहाँ रखें, तब शहाजीराजे को शिवनेरी किले की याद आई । उन्होंने जिजाबाई को शिवनेरी में रखने का निश्चय किया । पुणे जिले में जुन्नर के पास शिवनेरी यह अभेद्य किला है । उसके चारों ओर ऊँचे-ऊँचे टीले, मजबूत दीवारें तथा सुदृढ़ दरवाजे

थे । किला बहुत मजबूत था । विजयराज उसके किलेदार थे । वे भोसले के रिश्तेदारों में से थे । उन्होंने जिजाबाई की रक्षा का दायित्व अपने ऊपर लिया। शहाजीराजे ने जिजाबाई को शिवनेरी में रखा। इसके पश्चात उन्होंने मुगलों पर आक्रमण किया ।

....और फिर वह सुदिन आया । फाल्गुन वद्‌य तृतीया शक संवत् १५५१ अर्थात अंग्रेजी वर्ष के अनुसार १९ फरवरी १६३० के दिन शिवनेरी के नक्कारखाने में शहनाई और नगाड़े बज रहे थे । ऐसे मंगलमय समय पर जिजाबाई ने पुत्ररत्न को जन्म दिया । किले में लोग खुशी से झूम उठे । बच्चे का नामकरण हुआ । शिवनेरी किले में जन्म लेने के कारण बालक का नाम 'शिवाजी' रखा गया ।

शिवाजी महाराज का बचपन : शिवाजी महाराज के जीवन के प्रथम छह वर्ष बड़ी भाग-दौड़ में बीते । इस दौड़-धूप में भी जिजाबाई ने शिवाजी महाराज को बहुत उत्तम शिक्षा दी । संध्याकाल को वे दीया जलातीं । शिवाजी महाराज को पास बिठाकर उन्हें प्यार से सहलातीं । राम, कृष्ण, भीम और अभिमन्यु की कहानियाँ सुनातीं । संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव और संत एकनाथ के अभंग गाकर सुनातीं । शिवाजी महाराज को वीर पुरुषों की कहानियाँ अच्छी लगती थीं । वे सोचते थे कि बड़े होकर वे भी उनकी भाँति पराक्रम दिखाएँ । जिजाबाई उन्हें साधु-संतों के चरित्र की कहानियाँ भी सुनातीं । फलस्वरूप उनमें साधु-संतों के लिए श्रद्‌धा भाव उत्पन्न हुआ ।

गरीब मावलों के बच्चे शिवाजी महाराज के साथ खेलने के लिए आते थे । कभी-कभी शिवाजी महाराज भी उनकी झोंपड़ियों में

वीरमाता जिजाबाई बाल शिवाजी को कहानियाँ सुनाती हुईं ।

साथियों के साथ बाल शिवाजी

जाते । उनकी प्याज और रोटी बड़े चाव से खाते थे । उनके साथ मजेदार खेल खेलते थे । मावलों के बच्चे तो मानो जंगल के पक्षी थे । वे तोते, कोयल और शेर की हू-ब-हू बोली बोलते थे । मिट्टी के हाथी-घोड़े बनाना, किले बनाना आदि उनके प्रिय खेल थे । लुका-छिपी का खेल खेलना, गेंद और लट्टू चलाना ये खेल तो सदैव खेलते थे । उनके साथ शिवाजी महाराज भी ये खेल खेलते थे । मावलों के बच्चे शिवाजी महाराज को बहुत चाहते थे ।

शहाजीराजे मुगल शासक की ओर : शहाजीराजे निजामशाही में वापस लौटे किंतु वहाँ उन्हें शांति नहीं मिली । निजामशाह कान का कच्चा और अस्थिर वृत्ति का था । अतः दरबार में षडयंत्र और परस्पर ईर्ष्या-द्वेष उफान पर थे । इसी कारण निजामशाह के उकसाने पर लखुजीराव जाधव की भरे दरबार में हत्या की गई । इस घटना से क्रोधित होकर शहाजीराजे ने निजामशाही का त्याग किया और वे मुगलों के यहाँ चले गए । मुगल शासक शाहजहाँ ने उन्हें अपना सरदार बनाया ।

इसी बीच वजीर फतह खान ने मुगलों से साँठ-गाँठ करके निजामशाह की हत्या की । फलतः निजामशाही में अव्यवस्था फैल गई । यह स्पष्ट हो गया कि फतह खान निजामशाही को छल-कपट करके मुगलों को सौंप देगा । यही नहीं वरन् पुरस्कार के रूप में मुगलों ने उसे शहाजीराजे के आधिपत्यवाला प्रदेश परस्पर दे दिया है । इससे क्रोधित होकर शहाजीराजे ने मुगलों का साथ छोड़ दिया और अपने बलबूते पर मुगलों को सबक सिखाने का निश्चय किया ।

नई निजामशाही की स्थापना : शहाजीराजे ने वजीर फतह खान और मुगल सम्राट को मात देने के लिए निजाम वंश का एक बालक खोज निकाला । उस बालक को जुन्नर के पास पेमगिरी किले पर निजामशाह घोषित किया । इस तरह उन्होंने एक नए राज्य की स्थापना की । इस राज्य में गोदावरी से नीरा तक के प्रदेश थे । अपने इस राज्य की सुरक्षा के लिए शहाजीराजे ने पराकाष्ठा का युद्ध किया । प्रारंभ में आदिलशाह ने इस कार्य में उन्हें सहयोग दिया किंतु आगे चलकर मुगल शासक शाहजहाँ ने दक्षिण में शहाजीराजे पर आक्रमण कर दिया । उसने आदिलशाह को चेतावनी दी । फलस्वरूप आदिलशाह ने शहाजीराजे के विरोध में उससे संधि कर ली ।

अब शहाजीराजे छापामार युद्ध पद्धति से मुगल और आदिलशाह की मिली-जुली सेना से लड़ते रहे किंतु कब तक वे अकेले ही इनसे युद्ध करते ? उनका पक्ष कमजोर होता गया । विवश होकर उन्होंने ई.स. १६३६ में मुगलों के साथ संधि कर ली । शहाजीराजे के लिए समय अनुकूल नहीं था । इसलिए स्वतंत्र राज्य स्थापित करने का उनके द्वारा किया गया प्रयत्न सफल नहीं हुआ । फिर भी उनके इस साहसी प्रयास ने मराठी लोगों में आत्मविश्वास पैदा किया । यही आत्मविश्वास शिवाजी महाराज को स्वराज्य स्थापना के कार्य में लाभदायक सिद्ध हुआ ।

कर्नाटक में जिजाबाई और शिवाजी महाराज : शहाजीराजे की निजामशाही का अस्त होने के बाद मुगल सम्राट और आदिलशाह ने वह प्रदेश आपस में बाँट लिया । शहाजीराजे की पुणे और सुपे की जागीर पहले से ही आदिलशाह के राज्य में थी । आदिलशाह ने वह जागीर अपनी ओर से शहाजीराजे को दे दी । अब वे आदिलशाही में थे । आदिलशाही ने उनपर कर्नाटक प्रदेश को जीतने की जिम्मेदारी सौंपी । शहाजीराजे कर्नाटक चले गए । कुछ समय बाद जिजाबाई और शिवाजी महाराज भी उनके पास चले गए ।

महाराष्ट्र में शिवाजी महाराज का बचपन अस्थिरता में व्यतीत हुआ था । जिजाबाई और शिवाजी महाराज की कभी इस किले पर तो कभी उस किले पर दौड़-धूप चलती रही । उस समय बाल शिवाजी अपने पिता जी की वीरता और पराक्रम की कहानियाँ सुनते थे । कर्नाटक में आने के बाद दोनों को अर्थात माँ-बेटे को थोड़ा आराम मिला । शहाजीराजे ने कर्नाटक के अनेक राजाओं को पराजित किया । अतः आदिलशाह ने उन्हें बेंगलोर की जागीर इनाम के रूप में दी । अब बेंगलोर शहर शहाजीराजे का प्रमुख निवास स्थान बना । वहाँ वे वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे । वे दरबार का आयोजन करने लगे ।

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शिवाजी महाराज का जन्म .... किले में हुआ ।
(पुरंदर, शिवनेरी, पन्हाला)

(आ) आदिलशाह ने शहाजीराजे पर .... प्रदेश को जीतने की जिम्मेदारी सौंपी ।
(कर्नाटक, खानदेश, कोकण)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) जिजामाता के उपदेश से शिवाजी महाराज के मन में कौन-कौन-से विचार आने लगे ?

(आ) शिवाजी महाराज मावलों के बच्चों के साथ कौन-कौन-से खेल खेलते थे ?

(इ) शहाजीराजे ने निजामशाही का त्याग क्यों किया ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) जिजाबाई शिवाजी महाराज को कौन-कौन-सी कहानियाँ सुनाती थीं ?

(आ) शहाजीराजे ने निजाम वंश के बालक को निजामशाह के रूप में घोषित क्यों किया ?

उपक्रम

(अ) शिवनेरी किले की सैर करो । वहाँ शिवाजी महाराज के जन्म स्थल की जानकारी प्राप्त करो ।

(आ) तुम जो पारंपरिक खेल खेलते हो; उनके नाम लिखो । उनमें से किसी एक खेल की जानकारी दस पंक्तियों में लिखो ।

69CSVI

शिवनेरी किला - महादरवाजा

५. शिवाजी महाराज की शिक्षा व्यवस्था

शिवाजी महाराज की शिक्षा का आरंभ : शहाजीराजे स्वयं संस्कृत के प्रकांड पंडित थे । उन्होंने अनेक भाषाओं के पंडितों और कलाकारों को अपने दरबार में आश्रय दिया था । शिवाजी महाराज के लिए उन्होंने विद्वान शिक्षकों की नियुक्ति की थी । सात वर्ष की आयु होने के बाद उनकी शिक्षा प्रारंभ हुई । थोड़े समय में ही वे लिखने-पढ़ने में निपुण हो गए । वे स्वयं रामायण, महाभारत, भागवत की कथाएँ पढ़ने लगे । शहाजीराजे ने शिवाजी महाराज को युद्धकला सिखाने के लिए कुछ शिक्षकों की नियुक्ति की । उन्होंने शिवाजी महाराज को घुड़सवारी करना, कुश्ती लड़ना, गतका-फरी घुमाना, तलवार चलाना आदि कलाएँ सिखाना आरंभ किया । इस तरह बारह वर्ष की आयु में ही शिवाजी महाराज विभिन्न कलाओं और विद्याओं से परिचित हो गए ।

शीघ्र ही आदिलशाह ने शहाजीराजे को कर्नाटक के नायकों के राज्यों पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजा । शहाजीराजे ने कर्नाटक जाने से पूर्व जिजाबाई और शिवाजी महाराज को पुणे भेज दिया । शहाजीराजे ने उनके साथ हाथी, घोड़े, पैदल सेना, कोष, ध्वज; साथ ही विश्वसनीय प्रधान, शूर सेनानी और ख्यातिप्राप्त विद्वान शिक्षकों को भेजा ।

शहाजीराजे की निगरानी में बाल शिवाजी की शिक्षा

पुणे की कायापलट : जिजाबाई और शिवाजी महाराज पुणे पहुँचे । यहाँ आकर शिवाजी महाराज को अपने बचपन के दिन याद आए । बचपन में वे शिवनेरी की मिट्टी में खेले थे । सह्याद्रि के ऊँचे-ऊँचे पर्वतशिखर देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई । तत्कालीन पुणे आज की तरह महानगर न था । शहाजीराजे के शत्रुओं ने इस सुंदर गाँव को तहस-नहस कर दिया था । गाँव की संपत्ति नष्ट हो चुकी थी । मकान टूट चुके थे, मंदिर धराशायी हो चुके थे । शत्रु के डर से लोग गाँव छोड़कर भाग गए थे । खेती उजड़ गई थी । जंगल फैल गए थे । जंगलों में भेड़िये उत्पात मचा रहे थे । पुणे की ऐसी दुर्गति हो गई थी ।

जिजाबाई शिवाजी महाराज के साथ पुणे में रहने लगीं । जिजाबाई ने आस-पास के गाँववालों को बुलाकर आश्वस्त किया । लोगों को बड़ा धीरज मिला । लोग पुणे में आकर रहने लगे । वे खेतों में काम करने लगे । जिजाबाई ने ध्वस्त हुए मंदिर ठीक करवाए । मंदिरों में सुबह-शाम पूजा होने लगी । गाँव लोगों से भर गया । इस प्रकार पुणे का रूप बदल गया ।

दादाजी कोंडदेव के कार्य : जब जिजाबाई और शिवाजी महाराज कर्नाटक में थे तब पुणे की जागीर की देखभाल दादाजी कोंडदेव कर रहे थे । वे कोंढाणा के सूबेदार भी थे । दादाजी बड़े ईमानदार सेवक थे । प्रशासन चलाने में वे सत्यवादी थे । इसी भाँति वे न्यायी भी थे । उनका अनुशासन कठोर था । वे निष्ठावान थे । इस बीच शहाजीराजे के आदेश पर बड़ा भवन बनवाया गया । उसका नाम 'लाल महल' । किसान खेती की पैदावार बढ़ाएँ; इस उद्देश्य से उन्होंने उनको कुछ वर्षों तक लगान में छूट दी । इससे खेती में वृद्धि होने लगी । भेड़िये किसानों को बहुत कष्ट पहुँचाते थे । अतः उनको मारने के लिए पुरस्कार रखे गए । इससे बहुत-से भेड़िये मारे गए । चोरों की संख्या बढ़ गई थी । दादाजी ने किसानों के दल बनाए और उनका पहरा बिठाया । इससे चोरों का आतंक कम हो गया । उन्होंने भूमि की श्रेणी निश्चित करके उसके अनुसार लगान निर्धारित किया। इससे लोगों में प्रसन्नता छा गई । खेती में सुधार और लगान वसूली क्षेत्र में दादाजी कोंडदेव और निजाम शाह का वजीर मलिक अंबर द्वारा किया गया कार्य उल्लेखनीय और मौलिक माना जाता है ।

शिवाजी महाराज की शिक्षा व्यवस्था : शिवाजी महाराज पुणे की जागीर में लौटे । फिर भी जिजाबाई की निगरानी में उनकी शिक्षा व्यवस्था चल रही थी । बेंगलोर से आते समय शहाजीराजे द्वारा भेजे गए प्रतिष्ठित शिक्षकों ने शिवाजी महाराज को अनेक शास्त्र, विद्या तथा भाषाओं का प्रशिक्षण दिया ।

उत्तम राज्य और प्रशासन कैसा हो, शत्रु से युद्ध कैसे करें, किले कैसे बाँधें; हाथी और घोड़ों की परख कैसे करें, शत्रुओं के दुर्गम (बीहड़) इलाकों में से खिसककर कैसे निकलें जैसी अनेक विद्याओं से शिवाजी महाराज अवगत हुए । शिवाजी महाराज की शिक्षा में हुई प्रगति देखकर जिजाबाई प्रसन्न हुईं ।

वीरमाता जिजाबाई की शिवाजी महाराज को सीख : जिजाबाई कोई सामान्य महिला नहीं थीं । वे लखुजीराव जाधव जैसे शक्तिशाली सरदार की बेटी और शहाजीराजे जैसे पराक्रमी

पुरुष की पत्नी थीं । राजनीति और युद्‌धनीति की घुट्‌टी जिजाबाई को बचपन से ही मिली थी । जाधव और भोसले दोनों प्रसिद्‌ध घरानों की युद्‌धप्रिय परंपरा उनके रोम-रोम में बसी थी । जिजाबाई स्वाभिमानी तथा स्वतंत्रताप्रिय थीं । मराठा सरदार चाहे जितना बड़ा पराक्रम दिखाएँ फिर भी सुलतानों के दरबार में उसे कोई महत्त्व नहीं मिलता था । इस बात का उन्हें बुरा अनुभव हुआ । भरे दरबार में निजामशाह ने उनके पिता की हत्या की थी । यह दुख भी उन्होंने सहन कर लिया था । जिजाबाई ने निश्चय किया था, 'उनके पुत्र शिवबा इस प्रकार दूसरों की चाकरी नहीं करेंगे । वे स्वयं अपने लोगों का राज्य अर्थात स्वराज्य का निर्माण करेंगे ।' इस विचार से वे शिवाजी महाराज को सुसंस्कारित कर रही थीं ।

मावल में रहने वाले लोगों को मावले कहा जाता था । मावले ईमानदार, कठोर परिश्रमी और फुर्तीले थे । जीवटता में उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था लेकिन सुलतानों के शासन से वे त्रस्त थे । सुलतानों की सेना गाँवों को लूटती थी । फलस्वरूप प्रजा को दर-दर भटकना पड़ता था । उनका कोई रखवाला नहीं था । शिवाजी महाराज सोचते थे कि ऐसे दुखी और पीड़ित लोगों के लिए कुछ करना चाहिए ।

घर लौटने पर जिजाबाई के साथ वे वार्तालाप करते थे । जिजाबाई कहती थीं, "शिवबा ! भोसलों के पूर्वज श्रीरामचंद्र थे । श्रीरामचंद्र ने दुष्ट रावण को मारा और प्रजा को सुखी बनाया । जाधवों के पूर्वज श्रीकृष्ण थे । उन्होंने दुष्ट कंस को मारा और प्रजा को सुखी बनाया । श्रीराम

वीरमाता जिजाबाई

और श्रीकृष्ण के वंश में तुम्हारा जन्म हुआ है । अरे ! तुम भी दुष्टों का नाश कर सकोगे । तुम भी गरीबों को सुखी बना सकोगे ।"

माँसाहेब के उपदेश से शिवाजी महाराज को उत्साह मिलता था । राम, कृष्ण, भीम और अर्जुन आदि वीरों की कहानियाँ उन्हें याद आती थीं । वे ही वीर पुरुष शिवाजी महाराज के ध्यान, मन तथा स्वप्न में निरंतर रहते थे । शिवाजी महाराज सदैव यही सोचते थे, 'जैसे वे वीर अन्याय के विरुद्‌ध लड़े; वैसे ही हम भी लड़ेंगे । जिस प्रकार उन्होंने दुष्टों का दमन किया, उसी प्रकार हम भी करेंगे ।

जिस प्रकार उन्होंने प्रजा को सुखी बनाया, वैसा ही हम भी करें । हम न्यायी, साहसी, पराक्रमी बनें ।

शिवाजी महाराज की नई शासन व्यवस्था : अब पुणे की जागीर में जिजाबाई के मार्गदर्शन में शिवाजी महाराज का नया शासन प्रारंभ हो गया । इस काम के लिए शहाजीराजे ने तैयारी करवा दी थी । शिवाजी महाराज को बेंगलोर से पुणे भेजते समय सामराज नीलकंठ पेशवे, बालकृष्ण हनमंते मुजुमदार, माणकोजी दहातोंडे सरनोबत, रघुनाथ बल्लाल सबनीस, सोनोपंत डबीर जैसे अनुभवी व्यक्ति उनके साथ कर दिए थे । मानो ये सब स्वतंत्र राजा के अधिकारी ही हों । शहाजीराजे ने इन अधिकारियों को पुणे इसलिए भेजा था कि शिवाजी महाराज अपनी जागीर का प्रशासन अच्छी तरह से चलाएँ । उनकी मदद से शिवाजी महाराज जागीर का प्रशासन चलाने लगे । लोगों के सुख-दुख की ओर ध्यान देने लगे । प्रजा पर अन्याय करने वालों को दंडित किया जाने लगा । एक तरह से शहाजीराजे की जागीर में बहुत बड़ा परिवर्तन हो रहा था । भविष्य में निर्मित स्वराज्य का नमूना मावलों को देखने को मिल रहा था । जैसे कि वह स्वराज्य का सूर्योदय ही था ।

शिवाजी महाराज का विवाह : उस समय बचपन में विवाह करने की प्रथा थी । तब जिजामाता ने कहा, ''अब हमारे शिवबा का विवाह कर देना चाहिए ।'' अतः उनके लिए सुयोग्य कन्या की खोज प्रारंभ हुई । उन्हें एक कन्या पसंद आईं । उनका नाम था सईबाई । वे फलटण के नाईक-निंबालकर घराने की बेटी थीं । यह विवाह बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ ।

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शहाजीराजे स्वयं .... के प्रकांड पंडित थे ।
(संस्कृत, कन्नड़, तमिल)

(आ) मावल में रहने वाले लोगों को .... कहा जाता था ।
(किसान, सैनिक, मावले)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज को शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों की नियुक्ति किसने और कहाँ की ?

(आ) शिक्षकों ने शिवाजी महाराज को कौन-सी विद्याएँ सिखाना प्रारंभ किया ?

(इ) दादाजी कोंडदेव ने किसानों को लगान में छूट क्यों दी ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) पुणे का रूप कैसे बदल गया ?

(आ) शिवाजी महाराज किन विद्याओं में निपुण हो गए ?

(इ) जिजाबाई ने कौन-सा निश्चय किया ?

उपक्रम

(अ) जिजाबाई और शिवाजी महाराज के संवादों का नाट्यीकरण करो ।

(आ) वीरमाता जिजाबाई का चरित्र पढ़ो ।

69L1X6

६. स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा

रायरेश्वर का मंदिर : पुणे की दक्षिण-पश्चिम दिशा में स्थित रायरेश्वर का मंदिर बड़ा सुंदर स्थान था । ई.स. १६४५ में वहाँ एक विलक्षण घटना घटी । शिवाजी महाराज और आस-पास की घाटी के कुछ मावले विचार-विमर्श करने के लिए वहाँ इकट्‌ठे हुए थे । उस घने जंगल में पेड़ों और झाड़ियों के बीच स्थित रायरेश्वर के मंदिर में वे मावले शिवाजी महाराज के साथ किस बात की चर्चा कर रहे थे ? शिव शंकर से वे क्या माँग रहे थे ?

बाल शिवबा की तेजस्वी वाणी : शिवाजी महाराज आयु में अभी बहुत छोटे थे परंतु उनकी महत्त्वाकांक्षा ऊँची थी । उन्होंने एक बड़ी योजना बनाई । शिव मंदिर में इकट्‌ठे हुए अपने साथियों से उन्होंने बड़े उत्साह और विश्वास के साथ कहा, ''साथियो ! क्या आज मैं तुम्हें अपने मन की एक बात बताऊँ ? हमारे पिता जी शहाजीराजे बीजापुर के सरदार हैं । उन्होंने ही हमें यहाँ की जागीर का अधिकार दिया है । सब कुछ तो ठीक चल रहा है ! मगर साथियो, मुझे इसमें जरा-सी भी खुशी नहीं है । सुलतान की जागीर से हम क्यों संतुष्ट रहें ? दूसरों के हाथ से हम पानी क्यों पीएँ ? हमारे चारों तरफ कई दूसरे राज्य हैं । उनमें प्रायः युद्ध चलते रहते हैं । इन युद्धों में हमारे आदमी व्यर्थ ही मरते हैं । बहुत-से परिवार बेघर हो जाते हैं । हमारे प्रदेश की बरबादी होती है । इतना सब सहकर भी हमें क्या मिलता है ? पराधीनता ! हम कितने दिनों तक इसे सहते रहेंगे ? दूसरों के लिए हम कितने दिनों तक कटते-मरते रहेंगे ? बताइए, आप ही बताइए ! जागीरों के लोभ से क्या हम इसे ऐसे ही चलने देंगे ?''

शिवाजी महाराज आवेश के साथ बोल रहे थे । क्रोध से उनका चेहरा तमतमा रहा था । बोलते-बोलते वे रुक गए । उन युवा साथियों की ओर देखने लगे । रायरेश्वर के मंदिर में इकट्‌ठे मावले शिवाजी महाराज की बातों से रोमांचित हो उठे । उन्हें नई दृष्टि मिली । उनमें से एक बोल उठा, ''बोलिए, बालराजे, बोलिए । अपनी मनोकामना हमें बताइए । आप जो कहेंगे; वह करने के लिए हम तैयार हैं ।'' ''जी हाँ ! राजे, आप जो कहेंगे, वही हम करेंगे । अपने प्राण भी देंगे ।'' वे सभी तेजस्वी युवा वीर एक स्वर में बोल उठे ।

स्वराज्य की शपथ : मावलों के इन शब्दों से शिवाजी महाराज उत्साहित हुए । एक-एक की ओर देखते हुए वे खुशी से बोले, ''मित्रो ! हमारा मार्ग निश्चित हो गया । अपने ध्येय के लिए हम सब प्रयत्न करेंगे । हम सब कष्ट उठाएँगे; सभी अपने प्राण अर्पण करने के लिए तैयार रहेंगे । हम सबका लक्ष्य है हिंदवी स्वराज्य ! आपका, हमारा, सबका स्वतंत्र राज्य स्थापित करना है । दूसरों की पराधीनता हमें स्वीकार नहीं है । उठो ! इस रायरेश्वर को साक्षी मानकर हम प्रतिज्ञा करें । स्वराज्य स्थापना के लिए हम अपना सर्वस्व अर्पण करेंगे ।''

सारा मंदिर शिवाजी महाराज के शब्दों से गूँज उठा । अंत में उन्होंने निश्चयपूर्वक कहा, ''यह

स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा

राज्य हिंदवी स्वराज्य के रूप में हो, ऐसी ईश्वर की इच्छा है । ईश्वर की इस मनोकामना को हम पूरी करेंगे ।''

वे सारे मावले स्वराज्य की शपथ लेकर रायरेश्वर के मंदिर से बाहर आए । शिवाजी महाराज का मन भावाभिभूत हो गया । पुणे आते ही वे लाल महल में माँसाहेब के पास गए । उन्होंने घटित घटना का वर्णन माता जिजाबाई से किया । माँसाहेब धन्य हो गईं । उन्हें विश्वास हुआ कि उन्होंने जो सोचा था, बाल शिवाजीराजे उसे अवश्य पूरा करेंगे ।

मावल प्रदेश में मावलों का संगठन : शिवाजी महाराज अपने नए कार्य में जुट गए । मावलों को लेकर वे तलवारबाजी करने लगे । घुड़सवारी करना, पहाड़ियों में दुर्गम मार्ग ढूँढ़ना, दर्रों, घाटियों एवं गुप्त मार्गों आदि का निरीक्षण करना उनकी दिनचर्या हो गई । शिवाजी महाराज ने मावलों का हृदय जीत लिया । युवा मावले शिवाजी महाराज के लिए पागल हो गए । उनका मानना था कि जीएँगे तो शिवाजी महाराज के लिए और मरेंगे तो शिवाजी महाराज के लिए । शिवाजी महाराज की गतिविधियाँ समुद्र के ज्वार के समान बढ़ती गईं । शिवाजी महाराज ने पुणे के आस-पास के सभी गढ़ और किलों का अपने साथियों के साथ निरीक्षण किया । उन्होंने गुप्त मार्गों, सुरंगों, तहखानों, गोला-बारूद, अस्त्र-शस्त्र तथा शत्रु सेना के स्थलों की पूरी जानकारी शीघ्र ही प्राप्त कर ली ।

मावल प्रदेश के साथी : मावल प्रदेश में जगह-जगह कई देशमुख अपनी-अपनी जागीर सँभाले बैठे थे । उन्हें अपनी जागीर का बहुत लोभ था । वे जागीरों के लिए आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे । इन झगड़ों में मराठों की शक्ति अनायास ही बरबाद हो रही थी; यह बात शिवाजी महाराज ने अच्छी तरह जान ली थी । उन्होंने उसे रोकने का दृढ़ निश्चय किया । शिवाजी महाराज देशमुखों के गाँवों में जाते और उन्हें ये बातें समझाते । उन्हें स्वराज्य के उद्देश्य से प्रभावित करते । शिवाजी महाराज ने अपनी मधुर वाणी से उन्हें अपना बना लिया परंतु कुछ लोगों ने उनकी अवज्ञा की । उन्हें भी शिवाजी महाराज सही रास्ते पर ले आए । मराठों के आपसी झगड़ों को उन्होंने समाप्त करवाया । सब उन्हें धन्यवाद देने लगे । मावल प्रदेश के झुंझारराव मरल, हैबतराव शिलमकर, बाजी पासलकर, विठोजी शितोले, जेधे, पायगुड़े, बांदल आदि देशमुख शिवाजी महाराज की बात मानने लगे । मावल प्रांत में स्वराज्य की लहर तीव्र गति से बढ़ने लगी ।

शिवाजी महाराज की राजमुद्रा : शिवाजी महाराज के नाम से जागीर का प्रशासन प्रारंभ हुआ था । शहाजीराजे ने शिवाजी महाराज की स्वतंत्र राजमुद्रा तैयार की । वह इस प्रकार थी -

प्रतिपच्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववंदिता ।।
शाहसूनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते ।।

राजमुद्रा

'प्रतिपदा के चंद्रमा की तरह बढ़ने वाली और सारे संसार के लिए पूजनीय होने वाली यह राजमुद्रा शहाजीराजे के सुपुत्र शिवाजी राजा की राजमुद्रा लोगों के कल्याण के लिए है;' यह संदेश देने वाली राजमुद्रा स्वराज्य की स्थापना का संकेत ही थी ।

उस कालखंड में राजमुद्राएँ प्रायः फारसी भाषा में उकेरी जाती थीं परंतु शिवाजी महाराज की राजमुद्रा संस्कृत भाषा में थी । स्वराज्य की तरह ही स्वभाषा और स्वधर्म भी चाहिए किंतु दूसरे धर्मों का द्वेष भी न हो । शीघ्र ही सभी मावलों की समझ में आ गया कि शिवाजी महाराज ने यह कार्य लोककल्याण के लिए ही प्रारंभ किया है ।

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(अ) पुणे की दक्षिण-पश्चिम दिशा में स्थित .... का मंदिर बड़ा सुंदर स्थान था ।

(आ) मावल प्रदेश में जगह-जगह कई .... अपनी-अपनी जागीरें सँभाले बैठे थे ।

(इ) शहाजीराजे ने शिवाजी महाराज की स्वतंत्र .... तैयारी की ।

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) रायरेश्वर के मंदिर में शिवाजी महाराज ने अंत में निश्चयपूर्वक क्या कहा ?

(आ) जिजाबाई को कौन-सा विश्वास होने लगा ?

(इ) शिवाजी महाराज ने किन बातों की पूरी जानकारी प्राप्त कर ली ?

(ई) शिवाजी महाराज ने किन बातों की रोकथाम करने का दृढ़ निश्चय किया ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज का लक्ष्य क्या था ?

(आ) शिवाजी महाराज का दिनक्रम क्या था ?

उपक्रम

शिक्षकों की सहायता से स्वराज्य स्थापना का चित्र बनाओ ।

6SUHYT

७. स्वराज्य का प्रारंभ

शिवाजी महाराज ने अपने साथियों के साथ रायरेश्वर के मंदिर में स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा की थी परंतु वह कितना कठिन कार्य था ! दिल्ली का मुगल बादशाह, बीजापुर की आदिलशाही सुलतान, गोआ के पुर्तगाली और जंजीरा का सिद्‌दी–ये चार सत्ताएँ उस समय महाराष्ट्र पर शासन कर रही थीं । इन सत्ताओं का बड़ा दबदबा था । उनके विरुद्‌ध कुछ कहने का साहस किसी में नहीं था । ऐसी कठिन परिस्थिति में शिवाजी महाराज ने स्वराज्य का मंत्र फूँका । कहाँ शत्रु सेना की विशाल शक्ति और कहाँ शिवाजी महाराज के साथियों की अल्प शक्ति ! परंतु शिवाजी महाराज का निश्चय अटल था । उनके अनुष्ठान में ही शक्ति थी ।

तोरणा किला : शिवाजी महाराज को पुणे, सुपे, चाकण और इंदापुर प्रांतों की जागीरदारी मिली थी । इस जागीर के किले बीजापुर के दरबारी अधिकारियों के आधिपत्य में थे । किलों के बिना स्वराज्य कैसा ! किला जिसका, राज्य उसका ! किला हाथ में होने से ही आसपास के प्रदेशों पर शासन किया जाता है । पहाड़ी किला तो राज्य का मुख्य आधार होता है । अतः शिवाजी महाराज ने निश्चय किया कि शीघ्र ही कोई मजबूत किला जीतना चाहिए । शिवाजी महाराज की आँखों के सामने तोरणा किला था । पुणे से दक्षिण–पश्चिम दिशा में चौंसठ किलोमीटर की दूरी पर कानद नामक घाटी में यह किला है । पहाड़ी

तोरणा किला (झुंजार मचान)

किलों में तोरणा किला सबसे अधिक दुर्गम था । तोरणा किले पर दो भारी मचानें थीं । एक 'झुंजार' मचान थी और दूसरी 'बुधला' । मचान का अर्थ है किले की चढ़ाई पर स्वाभाविक दृष्टि से समतल हुए भूभाग की चहारदीवारी । झुंजार मचान अपने नाम की तरह ही जुझारु और लड़ाकू है । किले से नीचे उतरने के लिए एक ही मार्ग है और वह मार्ग झुंजार मचान से है । यह मार्ग बड़ा कठिन है । मार्ग पर चलते समय यदि कोई संतुलन खो दे तो वह सीधे नीचे घाटी में गिर जाता है । तोरणा किले की गणना महाराष्ट्र के सुदृढ़ किलों में की जाती है । किले में तोरणजाई देवी का मंदिर है । इसी से इस किले का नाम तोरणा पड़ा । ऐसा भव्य किला ! परंतु आदिलशाह का उसकी ओर उतना ध्यान नहीं था । किले पर न तो पर्याप्त पहरेदार ही थे और न गोला बारूद । शिवाजी महाराज ने यह देख लिया । वे भी ठीक यही चाहते थे । उन्होंने तोरणा किला जीतकर स्वराज्य का तोरण बाँधने का निश्चय किया ।

स्वराज्य का डंका बजा : चुने हुए मावलों का दल लेकर शिवाजी महाराज कानद की घाटी में उतरे । सभी मावलों के साथ सिंह के साहस तथा हिरन की गति से वे तोरणा किले पर चढ़ गए । मावलों ने शीघ्र ही सभी मुख्य स्थान अपने अधिकार में कर लिए । तानाजी मालुसरे नामक वीर ने द्वार पर मराठों का झंडा रोप दिया । येसाजी कंक शिवाजी महाराज का विश्वसनीय और निष्ठावान सहयोगी था । उसने चौकी पर पहरा बिठाया । किला कब्जे में आ गया । सबने शिवाजी महाराज की जयजयकार की । हिंदवी स्वराज्य का हर्षवाद्य बजने लगा । नगाड़ों तथा तुरहियों की आवाज सह्याद्रि की घाटियों में गूँज उठी । शिवाजी महाराज ने इस किले का नाम रखा 'प्रचंडगढ़' ।

भवानी माता का आशीर्वाद : तोरणा किले पर शिवाजी महाराज का कामकाज प्रारंभ हो गया । उन्होंने किले का सूक्ष्म निरीक्षण किया । किले पर मराठा किलेदार, ब्राह्मण सबनीस, प्रभु कारखानीस आदि अधिकारियों को नियुक्त किया । सेना में मावले, कोली, रामोशी, महार आदि जातियों-जनजातियों के शूर-वीरों की भर्ती की । स्वराज्य की सेना में जातिभेद, वर्णभेद जैसा किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था । किले की मरम्मत शुरू हुई और कितने आश्चर्य की बात ! काम प्रारंभ ही हुआ था कि किले में मुहरों से भरे चार घड़े मिल गए । काम करने वालों को बड़ी खुशी हुई । हर व्यक्ति कहने लगा, 'शिवाजी महाराज पर देवी भवानी प्रसन्न हुई हैं । उन्होंने ही यह धन दिया है ।' बड़े आनंद के साथ मजदूरों ने मुहरों से भरे घड़े शिवाजी महाराज के सामने रख दिए । किसी ने भी मुहरों को हाथ नहीं लगाया । वह स्वराज्य का धन था । उन्होंने उसे अपने स्वामी के सुपुर्द किया । स्वराज्य के कार्य के लिए अचानक इतना धन मिल जाने से शिवाजी महाराज उत्साह से भर उठे । उन्होंने यही सोचा कि उनके कार्य को माता भवानी का आशीर्वाद है ।

यह धन स्वराज्य के काम आया । इस धन से शिवाजी महाराज ने शस्त्र खरीदे । बारूद इकट्ठा की । शेष धन से उन्होंने एक योजना पूरी करने का निश्चय किया । वह योजना थी –

तोरणा किले से पंद्रह किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में मुरुंबदेव का पहाड़ है । शिवाजी महाराज ने उसे जाँच-परखकर रखा था । यह पहाड़ बहुत ऊँचा, दुर्गम तथा उपयुक्त स्थान पर था । आदिलशाह ने इस पहाड़ पर एक किला अधूरा बनाकर छोड़ दिया था । इस किले पर भी चौकस पहरा नहीं था । तब शिवाजी महाराज ने निश्चय किया कि स्वराज्य की राजधानी के लिए इस किले को अपने अधिकार में कर लेना चाहिए ।

स्वराज्य की पहली राजधानी : एक दिन शिवाजी महाराज ने अपने चुने हुए साथियों के साथ इस किले पर चढ़ाई की और उसे अपने अधिकार में कर लिया । तोरणा किले पर पाया हुआ कुछ धन मुरुंबदेव की मरम्मत में खर्च हुआ । शिवाजी महाराज ने इस किले का नाम 'राजगढ़' रखा । गढ़ पर कारीगरों ने पत्थर तराशे । लुहारों ने भट्ठी फूँकी । बढ़ई, मिस्त्री, मजदूर, भिश्ती जैसे लोग काम में जुट गए । राजमहल, बारह महल, अठारह कारखाने और सिंहासन तैयार हुए । स्वराज्य की पहली राजधानी के रूप में 'राजगढ़' सुशोभित हुआ ।

स्वराज्य का प्रसार : शिवाजी महाराज का अभियान प्रारंभ हुआ । उन्होंने बारह मावलों के सभी किले एक-एक करके जीत लिए । बारह मावल के गाँवों में आनंद और उत्साह की बाढ़ आ गई । गाँव-गाँव से पाटिल एवं देशमुख शिवाजी महाराज को उपहार देने के लिए आने लगे परंतु जैसे चावल में कुछ कंकड़ होते हैं उसी तरह इन मावलों में भी कुछ दुष्ट लोग थे । शिवाजी महाराज का उत्कर्ष देखकर उन्हें ईर्ष्या होने लगी । शिरवल के आदिलशाही थानेदार के पास शिवाजी महाराज के विरुद्ध शिकायतें की गईं । थानेदार ने बीजापुर को साँड़नीसवार भेजा और शिवाजी महाराज की इन बढ़ती गतिविधियों से आदिलशाह को अवगत कराया ।

राजगढ़ – पाली दरवाजा

शिवाजी महाराज का चातुर्य : इन बढ़ती गतिविधियों के बारे में सुनकर आदिलशाह चकित हो गया । उसने शहाजीराजे से स्पष्टीकरण माँगा । शहाजीराजे असमंजस में पड़ गए लेकिन उन्होंने किसी तरह स्थिति को संभाला और आदिलशाह को संदेश भेजा । 'जागीर की रक्षा के लिए अपने पास एक भी किला नहीं है ; इसलिए शिवाजी ने यह किला लिया होगा ।' शिवाजी महाराज ने भी आदिलशाह के पास अपना दूत भेजा और उसके हाथों यह चतुराई भरा उत्तर भिजवाया, 'जागीर का कामकाज ठीक से चले इसलिए हमने यह किला लिया है । इसमें आदिलशाही की भलाई ही है । इसमें कोई दूसरा उद्देश्य नहीं है ।'

कोंढाणा और पुरंदर ये दोनों बड़े महत्त्वपूर्ण किले थे । शिवाजी महाराज ने बड़ी युक्ति से इन्हें अपने अधिकार में कर लिया । इसके बाद उन्होंने रोहिड़ा किले पर भी अधिकार किया । स्वराज्य का विस्तार जोरों से प्रारंभ हो गया ।

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शिवाजी महाराज को पुणे, सुपे, चाकण और ········ प्रांतों की जागीर मिली थी ।
(इंदापुर, सासवड़, वेल्हे)

(आ) शिवाजी महाराज ने ········ किला जीतकर स्वराज्य का तोरण बाँधने का निश्चय किया ।
(सिंहगढ़, शिवनेरी, तोरणा)

(इ) स्वराज्य की पहली राजधानी के रूप में ········ सुशोभित हुआ ।
(राजगढ़, रायगढ़, प्रतापगढ़)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) महाराष्ट्र में कौन-सी चार सत्ताएँ शासन कर रही थीं ?

(आ) शिवाजी महाराज ने तोरणा किले पर किन अधिकारियों को नियुक्त किया ?

(इ) शिवाजी महाराज ने आदिलशाह को क्या उत्तर भेजा ?

३. कारण बताओ :

(अ) स्वराज्य का तोरण बाँधने के लिए शिवाजी महाराज ने तोरणा किले को चुना ।

(आ) तोरणा किले में प्राप्त मुहरों के घड़े मजदूरों ने शिवाजी महाराज को लाकर दिए ।

उपक्रम

शिक्षकों की सहायता से अपने परिसर के किले की सैर का आयोजन करो ।

6A4T1G

८. आंतरिक शत्रुओं पर नियंत्रण

धाक जमाई : शिवाजी महाराज के चारों ओर बारह मावल के मावले इकट्ठे हुए । शिवाजी महाराज जो कहते; वे वही करते । वे ऐसा मानते थे, 'जीना है तो स्वराज्य के लिए और मरना है तो स्वराज्य के लिए ।' वे सीधे-सादे मराठा थे । शिवाजी महाराज उन्हें प्राणप्रिय थे परंतु ऐसे भी कुछ लोग थे; जिन्हें शिवाजी महाराज के कार्य से ईर्ष्या होती थी । ऐसे लोगों पर नियंत्रण रखना शिवाजी महाराज के लिए आवश्यक हो गया था ।

खंडोजी और बाजी घोरपड़े नामक मराठा सरदार आदिलशाह की नौकरी में थे । आदिलशाह ने उन्हें शिवाजी महाराज के विरुद्ध भड़काया । कोंढाणा प्रदेश में उन्होंने बड़ी अराजकता फैला दी थी । मगर शिवाजी महाराज ने उनकी दाल न गलने दी । उन्होंने उन्हें वहाँ से मार भगाया ।

फलटण के बजाजी नाईक-निंबालकर शिवाजी महाराज के साले थे । शिवाजी महाराज को उनके विरुद्ध लड़ना पड़ा फिर भी निंबालकर घराने के अन्य व्यक्ति शिवाजी महाराज के साथ रहे ।

शिवाजी महाराज के सुपे परगना में उनका एक रिश्तेदार संभाजी मोहिते था । उसने भी शिवाजी महाराज के विरोध में कारवाइयाँ शुरू की । शिवाजी महाराज ने सुपे परगना में जाकर उसे बंदी बना लिया और उसे कर्नाटक राज्य में भेज दिया । शिवाजी महाराज कर्तव्य के आगे रिश्तों-नातों को नहीं मानते थे ।

जावली के चंद्रराव मोरे : शिवाजी महाराज के कार्य की महानता को सभी मावलों ने स्वीकार किया । उनका नाम चारों ओर गूँजने लगा । शिवाजी महाराज प्रजा के राजा बन गए किंतु यह बात कुछ लोगों की आँखों में खटकती थी । जावली के मोरे ऐसे लोगों में से एक थे । मोरे जावली के जागीरदार थे । उनकी जागीर रायगढ़ से कोयना घाटी तक थी । वे बीजापुर के आदिलशाह के जागीरदार थे । आदिलशाह ने उन्हें 'चंद्रराव' की उपाधि दी थी । जावली में बड़े घने जंगल थे । वहाँ दिन में भी सूर्य की किरणों का प्रवेश नहीं होता था । उसमें बाघ, भेड़िये, भालू आदि जंगली जानवर रहते थे । मोरे की जावली मतलब बाघ का जाल ही थी । इस कारण कोई भी मोरे को छेड़ने की हिम्मत नहीं करता था लेकिन यह साहस वीर शिवाजी महाराज ने कर दिखाया ।

कारण यह था ई.स. १६४५ में दौलतराव मोरे का देहांत हो गया । अतः उनके उत्तराधिकारियों में झगड़े शुरू हो गए । शिवाजी महाराज ने यशवंतराव मोरे की सहायता की । उनकी सहायता से यशवंतराव मोरे जावली की गद्दी पर चंद्रराव के रूप में बैठे । उस समय यशवंतराव ने शिवाजी महाराज को नजराना देना स्वीकार किया । उनके कार्य में सहायता देना भी स्वीकार किया परंतु गद्दी पर बैठते ही वह सब कुछ भूल गया । कौन शिवाजी महाराज और कैसा वादा ! वह उपेक्षापूर्ण से व्यवहार करने लगा । स्वराज्य के प्रदेशों पर आक्रमण करना, प्रजा को कष्ट देना आदि विभिन्न प्रकार की हरकतें यशवंतराव करने लगा । शिवाजी महाराज जान गए कि यदि इसी समय मोरे को सही रास्ते पर न लाया गया

तो स्वराज्य को क्षति पहुँचेगी ।

विद्रोह करने पर मारे जाओगे : शिवाजी महाराज ने यशवंतराव को पहले एक कठोर पत्र लिखा, 'आप स्वयं को राजा कहलवाते हैं । राजा तो हम हैं । भगवान शंकर ने हमें राज्य दिया है । इसलिए आप अपने-आपको राजा न कहलवाएँ ।'

यशवंतराव मोरे ने उद्दंडता से उत्तर दिया, 'आप कल राजा बने हैं । आपको राज्य किसने दिया ? जावली आओगे तो उलझन में फँस जाओगे । हमें ईश्वर की कृपा से आदिलशाह ने राजा की उपाधि, छत्र-चामर और सिंहासन मेहरबान होकर दिया है । यदि आप यहाँ आएँगे तो परिणाम बुरा होगा ।'

शिवाजी महाराज ने उसे चेतावनी दी, 'जावली छोड़कर, राजा की उपाधि और छत्र-चामर फेंककर, रूमाल से हाथ बाँधकर मिलने और हमारी सेवा करने के लिए चले आओ । इतने पर भी यदि गद्दारी करोगे तो मारे जाओगे ।'

जावली के चारों ओर घना जंगल था । रायरी का किला जीतना कठिन था । मोरे के पास आदमी भी बहुत थे । जावली जीतना सरल न था । पूरी तैयारी के साथ शिवाजी महाराज ने जावली पर आक्रमण किया । लगभग एक महीने तक यशवंतराव लड़ता रहा लेकिन उसके बहुत-से सैनिक मारे गए । अंत में वह अपने बेटों को लेकर रायरी के किले में भाग गया । शिवाजी महाराज ने जावली को जीत लिया और रायरी की ओर बढ़े । शिवाजी महाराज ने रायरी के किले को घेर लिया । यशवंतराव तीन महीने तक पूरी शक्ति के साथ लड़ता रहा परंतु अंत में उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा ।

रायगढ़ किला : जावली की विजय बड़ी महत्त्वपूर्ण थी । इससे शिवाजी महाराज के

रायगढ़

स्वराज्य का विस्तार पहले से दुगुना हो गया । यशवंतराव की सेना भी शिवाजी महाराज से आकर मिल गई । रायरी का विशाल किला स्वराज्य के अंतर्गत आ गया । इससे शिवाजी महाराज बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने इस किले का नाम 'रायगढ़' रखा । उसके बाद उन्होंने पासवाली भोरप्या पहाड़ी पर एक नया किला बनवाया । उसका नाम रखा 'प्रतापगढ़' ।

स्वाध्याय

१. गलत जोड़ी पहचानो :

(अ) फलटण – निंबालकर

(आ) जावली – मोरे

(इ) सुपे – जाधव

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) जावली के मोरे को आदिलशाह ने कौन-सी उपाधि दी थी ?

(आ) जावली की विजय महत्त्वपूर्ण क्यों थी ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) जावली के मोरे को छेड़ने की हिम्मत कोई क्यों नहीं कर पाता था ?

(आ) शिवाजी महाराज ने यशवंतराव मोरे को कौन-सा कठोर पत्र भेजा ?

उपक्रम

(अ) रायगढ़ के चित्रों का संग्रह करो ।

(आ) दिवाली की छुट्टियों में अपने मित्रों के साथ रायगढ़ की प्रतिकृति तैयार करो ।

6I4JUL

९. प्रतापगढ़ पर पराक्रम

आदिलशाही दहल उठी : बीजापुर के दरबार की बात है । शिवाजी महाराज की गतिविधियों को देखकर आदिलशाह के दरबार में चिंता फैल गई । सभी सरदार दरबार में इकट्ठे हुए । एक से बढ़कर एक पराक्रमी तलवारबाज सरदार दरबार में उपस्थित थे । आदिलशाही का प्रशासन चलाने वाली बड़ी बेगम स्वयं उपस्थित थी । दरबार के सामने बड़ी गंभीर समस्या उपस्थित हुई थी – 'शिवाजी को कैसे पराजित करें ?'

बड़ी बेगम ने दरबार के सरदारों से सीधा प्रश्न किया, ''बोलिए, शिवाजी का बंदोबस्त करने के लिए कौन तैयार है ?''

दरबार में सन्नाटा छा गया । सभी अपने-अपने स्थान पर चुप बैठे थे । शिवाजी महाराज का सामना करने का साहस कौन करता ! सभी एक-दूसरे की ओर देखने लगे । उसी समय एक भीमकाय सरदार झुककर सलाम करता हुआ आगे बढ़ा । उसका नाम था अफजल खान ।

खान ने बीड़ा उठाया : थाल में रखा हुआ बीड़ा उठाते हुए अफजल खान ने कहा, ''शिवाजी ! कहाँ का शिवाजी ? या तो उसे जीवित पकड़कर मैं यहाँ लाता हूँ अन्यथा उसे मारकर बीजापुर ले ही आऊँगा ।''

अफजल खान बीजापुर का विख्यात सरदार था । वह बहुत शक्तिशाली था । लोहे की छड़ को हाथ से मोड़ देता था । अच्छे-बुरे किसी भी ढंग से अपना काम करने में वह अत्यंत कुशल था । उसी अफजल खान ने भरे दरबार में शिवाजी महाराज को जीवित पकड़कर अथवा मारकर लाने की प्रतिज्ञा की । सारा दरबार खुश हुआ । उपस्थित सभी व्यक्तियों को ऐसा लगा, 'शिवाजी भोसले अब क्या जिंदा बचेगा ? थोड़े ही दिनों में वह बंदी अवस्था में बीजापुर के दरबार में हाजिर होगा या उसका सिर दरबार में पेश किया जाएगा ।'

अफजल खान बड़ी अकड़ और शान से बीजापुर से चल पड़ा । उसने अपने साथ विशाल सेना और युद्ध सामग्री ली थी । इसके पूर्व वह लगातार बारह वर्षों तक वाई प्रांत का सूबेदार रह चुका था । इस कारण उसे उस प्रदेश की पूरी जानकारी थी । बड़े घमंड से वह महाराष्ट्र की ओर बढ़ने लगा ।

स्वराज्य पर संकट : उस समय शिवाजी महाराज राजगढ़ में थे । 'अफजल खान आ रहा है', यह सूचना उन्हें मिली । वे समझ गए कि स्वराज्य पर बड़ा संकट आ रहा है । मगर वे डगमगाए नहीं । उन्होंने सोचा कि अफजल खान बड़ा धूर्त है । उसकी सेना विशाल है । अपना राज्य छोटा है और अपनी सेना भी कम है । खुले मैदान में खान के सामने टिक पाना कठिन है । अतः शिवाजी महाराज ने निश्चय किया कि उसका सामना युक्ति से करना चाहिए । वे जिजामाता से विचार-विमर्श करके और उनका आशीर्वाद लेकर राजगढ़ से निकले और प्रतापगढ़ की ओर चल पड़े ।

अफजल खान के दाँव-पेंच : शिवाजी महाराज के प्रतापगढ़ पहुँचने की खबर सुनकर खान क्रोधित हुआ । वह जानता था कि प्रतापगढ़ पर आक्रमण करना सरल नहीं है क्योंकि वह किला पहाड़ों के मध्य में था । चारों ओर घने जंगल थे, रास्ते में ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे । सेना को जाने के लिए अच्छा रास्ता नहीं था । तोपें चढ़ाने के लिए कोई मार्ग न था । इसके अलावा वहाँ जंगली जानवरों की भरमार थी ।

शिवाजी महाराज प्रतापगढ़ से उतरकर नीचे आ जाएँ इसलिए अफजल खान ने दाँव-पेंच खेलना शुरू कर दिया । उसने तुलजापुर, पंढरपुर आदि देव स्थानों को क्षति पहुँचाई । प्रजा को बहुत कष्ट दिए । उसका यह अनुमान था कि यह सब सुनकर शिवाजी महाराज प्रतापगढ़ छोड़ देंगे और बाहर आ जाएँगे । शिवाजी महाराज खान के दाँव-पेंच समझ गए । उन्होंने प्रतापगढ़ छोड़ा ही नहीं । तब खान ने दूसरी चाल चली । प्यार का नाटक करके उसने शिवाजी महाराज को यह संदेश भेजा, ''आप मेरे बेटे के समान हैं । हमसे मिलने आइए । हमारे किले वापस कर दो । आदिलशाह से कहकर मैं आपको सरदार का पद दिलाऊँगा ।''

सेर को सवा सेर : शिवाजी महाराज ने जान लिया कि अफजल खान उनके साथ षडयंत्र कर रहा है । वे सतर्कतापूर्वक व्यवहार कर रहे थे । उन्होंने खान को ही प्रतापगढ़ की तलहटी तक लाने का निश्चय किया और संदेश भेजा, ''खानसाहब, मैंने आपके किले लिए हैं । मैं अपराधी हूँ । मुझे क्षमा करें । आप ही प्रतापगढ़ के नीचे मिलने के लिए आ जाइए । मुझे वहाँ आने में डर लगता है ।''

शिवाजी महाराज का संदेश सुनकर अफजल खान हँसा । अपनी दाढ़ी को सहलाते हुए वह बोला, ''खूब ! बहुत खूब ।'' उसे लगा

प्रतापगढ़

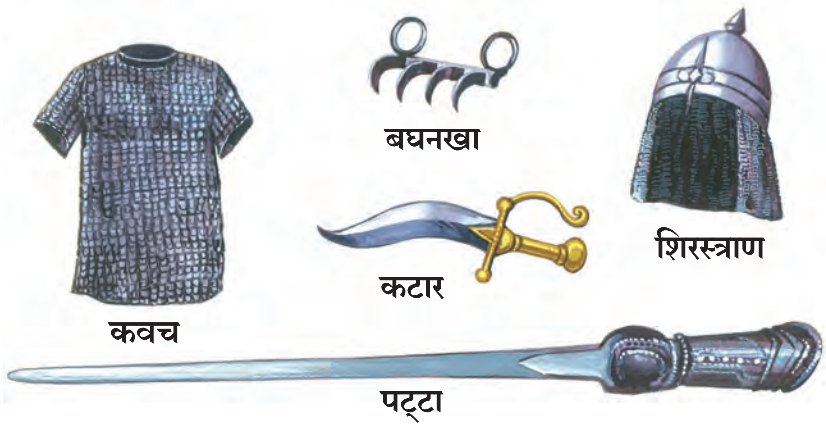

कि अफजल खान के सामने शिवाजी की क्या मजाल ! वह डरपोक मेरे साथ क्या लड़ेगा ? मैं खुद जाऊँगा और मिलते ही उसे कुचलकर मार डालूँगा । बस, प्रतापगढ़ के नीचे शिवाजी महाराज से मिलने के लिए खान तैयार हो गया ।

भेंट निश्चित हुई : प्रतापगढ़ की तलहटी में मिलने की जगह निश्चित हुई । दिन, समय सब निश्चित हो गया । तय हुआ कि भेंट के समय दोनों अपने साथ एक-एक सेवक रखेंगे और दोनों के दस-दस अंगरक्षक कुछ दूरी पर खड़े रहेंगे । खान के लिए महाराज ने अच्छा रास्ता बनवाया । मिलने के लिए एक शानदार शामियाना तैयार करवाया ।

शिवाजी महाराज बड़ी सावधानी से काम ले रहे थे । उन्होंने अपनी सेना की अलग-अलग टुकड़ियाँ बनाईं । जंगल में कौन-कहाँ छिपकर बैठेगा और क्या करेगा, इस बारे में उन्होंने सबको सूचनाएँ दीं । पक्का बंदोबस्त किया । कुछ सलाहकारों ने कहा कि खान धूर्त है । शिवाजी महाराज उससे मिलने के लिए न जाएँ किंतु शिवाजी महाराज ने खान से मिलने का निश्चय किया ।

मिलने की तैयारी : मिलने का दिन आ गया । प्रात:समय शिवाजी महाराज ने देवी भवानी के दर्शन किए । थोड़ी देर के बाद उन्होंने पोशाक पहननी शुरू की । पैरों में सलवार चढ़ाई, शरीर पर कवच पहना । उसपर जरी का कुर्ता और जाकिट पहनी । सिर पर शिरस्त्राण पहना । उसपर फेटा बाँधा । बाएँ हाथ की उँगलियों में बघनखा चढ़ाए । उसी हाथ की आस्तीन में कटार छिपाई । अपने साथ पट्टा (पटा) लिया । इस प्रकार शिवाजी महाराज खान से मिलने के लिए तैयार हुए ।

सरदार लोग बाहर खड़े थे । शिवाजी महाराज ने उनसे कहा, ‘‘साथियो, अपने-अपने काम ठीक तरह से करना । भवानी माता हमें यश देने वाली हैं परंतु यदि हमारा कुछ अहित हुआ तो आप धीरज मत खोना । संभाजीराजा को गद्दी पर बिठाना । माँसाहेब की आज्ञा मानना । स्वराज्य को बढ़ाना । प्रजा को सुखी रखना । हम जा रहे हैं ।’’ शिवाजी महाराज चल पड़े । उनके साथ वकील पंताजी गोपीनाथ और जिवाजी महाला, संभाजी कावजी, येसाजी कंक, कृष्णाजी गायकवाड, सिद्दी इब्राहिम आदि दस अंगरक्षक थे ।

शिवाजी महाराज से पहले ही खान शामियाने में आकर बैठ गया था । वह तरह-तरह की कल्पनाएँ कर रहा था । उसकी बगल में बड़ा सय्यद नाम का उसका हथियारबंद एक सिपाही

शिवाजी महाराज और अफजल खान की भेंट

खड़ा था । वह पट्टा चलाने में बहुत निपुण था । शिवाजी महाराज शामियाने के द्वार पर आए । बड़ा सय्यद को देखते ही वे वहीं पर खड़े हो गए । खान ने महाराज के वकील से पूछा, ''शिवाजी राजे अंदर क्यों नहीं आ रहे हैं ?''

वकील ने कहा, ''वे बड़ा सय्यद से डर रहे हैं । उसे आप दूर हटा दीजिए ।'' बड़ा सय्यद वहाँ से हट गया । शिवाजी महाराज अंदर गए । खान उठकर बोला, ''आइए, राजासाहब ! हमसे मिलिए ।''

खान से झड़प : महाराज सतर्क होकर आगे बढ़े । खान ने शिवाजी महाराज को गले लगाया । लंबे-चौड़े अफजल खान के सामने महाराज ठिगने-से दीख रहे थे । महाराज का सिर खान की छाती तक पहुँचा था । खान ने तुरंत शिवाजी महाराज को मारने के लिए उनकी गरदन अपनी बाईं बगल में दबाई और दूसरे हाथ से शिवाजी महाराज के शरीर पर कटार से वार किया । शिवाजी महाराज ने पहना हुआ अंगरखा फट गया । कुर्ते के अंदर कवच होने से शिवाजी महाराज बच गए । वे खान की चाल समझ गए । बड़ी फुर्ती से उन्होंने खान के पेट पर बघनखों से वार किए । बाएँ हाथ की आस्तीन में छिपी कटार दाहिने हाथ से निकालकर उसे जोर से खान के पेट में घुसेड़ दी । खान की आँत बाहर निकल आई । वह धराशायी हो गया । इतने में खान का वकील कृष्णाजी भास्कर आगे बढ़ा । उसने शिवाजी महाराज पर तलवार से वार किया मगर शिवाजी महाराज ने पट्टे के एक वार से ही उसे मार गिराया । शोरगुल सुनकर बड़ा सय्यद डेरे में घुसा । वह शिवाजी महाराज पर वार करने ही वाला था कि तत्क्षण जिवाजी महाला दौड़कर आया । बड़ा सय्यद के वार को अपने शरीर पर झेलकर जिवाजी महाला ने उसे एक ही वार में

वहीं पर मार गिराया । इसीलिए आगे चलकर 'था जिवा इसलिए बचा शिवा' ऐसी कहावत ही प्रचलित हो गई । इस झड़प में संभाजी कावजी ने बड़ी वीरता दिखाई ।

खान की सेना की दुर्गति : विजयी शिवाजी महाराज गढ़ पर चले गए । संकेत के लिए तोप दागी गई । शिवाजी महाराज की सेना संकेत की ही प्रतीक्षा में थी । तोप के दगते ही झाड़ियों में छिपे शिवाजी महाराज के सैनिकों ने खान की सेना पर धावा बोल दिया । खान की सेना असावधान थी । उसकी सेना को भागने के लिए राह भी नहीं मिल रही थी । मराठों ने उनका तेजी से पीछा किया और खान की सेना की धज्जियाँ उड़ा दी । खान का बेटा फजल खान किसी तरह बच निकला और बीजापुर पहुँचा । उसकी बातें सुनकर बीजापुर में हाहाकार मच गया ।

शिवाजी महाराज ने बीजापुर के सबसे शक्तिशाली सरदार को देखते-ही-देखते मिट्टी में मिला दिया था । शिवाजी महाराज का नाम चारों ओर फैल गया । उनके पराक्रम के गीत सह्याद्रि की घाटियों में गूँजने लगे ।

स्वाध्याय

१. दिए गए अक्षरों के आधार पर शब्द बनाओ :

(अ) ता ग प्र ढ़ प ....

(आ) वा शि जी रा ज हा म ....

(इ) खा अ ज न ल फ ....

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) अफजल खान ने कौन-सा बीड़ा उठाया ?

(आ) प्यार का नाटक करके अफजल खान ने शिवाजी महाराज को कौन-सा संदेश भेजा ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज ने अफजल खान के साथ युक्ति से सामना करने का निश्चय क्यों किया ?

(आ) अफजल खान से मिलने जाते समय शिवाजी महाराज ने अपने सरदारों से क्या कहा ?

४. कारण बताओ :

(अ) शिवाजी महाराज के प्रतापगढ़ पहुँचने से खान क्रोधित हुआ ।

(आ) बीजापुर में हाहाकार मच गया ।

उपक्रम

इतिहास के संदर्भ में कहावतों का संकलन करो ।
उदा., 'था जिवा इसलिए बचा शिवा'

6IDFH9

१०. दर्रे में घमासान युद्ध

पन्हाला जीता और आदिलशाह का क्रोध : अफजल खान की हत्या से बीजापुर में खलबली मच गई । उसके बाद तुरंत ही शिवाजी महाराज ने पन्हालगढ़ जो बीजापुर के अधिकार में था, जीत लिया । इससे आदिलशाह बड़ा क्रोधित हुआ । उसे खाना-पीना अच्छा नहीं लग रहा था । शिवाजी महाराज को पराजित करने के लिए उसने सिद्‌दी जौहर नामक सरदार को भेजा । सिद्‌दी जौहर बहुत बड़ी सेना लेकर चल पड़ा । फजल खान भी पिता की हत्या का बदला लेने के लिए उसके साथ निकल पड़ा ।

पन्हालगढ़ को घेर लिया : सिद्‌दी जौहर शूर-वीर पर क्रूर भी था । उसका अनुशासन कठोर था । उसने पन्हालगढ़ को चारों ओर से घेर लिया । शिवाजी महाराज को गढ़ में बंदी बनाया । बरसात के दिन निकट आ गए थे । शिवाजी महाराज ने सोचा कि वर्षा आरंभ होते ही सिद्‌दी जौहर घेरा उठा लेगा परंतु बरसात प्रारंभ होते ही उसने घेरा अधिक कड़ा कर दिया । किले में जो धन-धान्य था; वह समाप्त होने लगा । अब क्या करें ? यह शक्ति का काम नहीं है ! तब शिवाजी महाराज ने युक्ति से छुटकारा पाने का निश्चय किया । उन्होंने सिद्‌दी जौहर के पास संदेश भेजा कि 'शीघ्र ही किला आपके अधीन करता हूँ ।' वह प्रसन्न हुआ । उसने इस बात को स्वीकार कर लिया ।

घेरे से सिद्‌दी की सेना तंग आ गई थी । यह सुनकर सैनिक खुश हो गए कि शिवाजी महाराज शरण में आ रहे हैं ! वे खाने-पीने, गाने-बजाने और हुक्का-पानी में मग्न हो गए ।

शिवाजी महाराज घेरे से बाहर : शिवाजी महाराज ने घेरे से बाहर निकलने के लिए एक युक्ति सोची । योजना इस प्रकार थी - उन्होंने दो डोलियाँ तैयार करवाईं । एक डोली में बैठकर शिवाजी महाराज दुर्गम रास्ते से बाहर निकलेंगे और दूसरी में शिवाजी महाराज का स्वाँग भरनेवाला एक आदमी बैठकर महाद्‌वार के छोटे दरवाजे से बाहर निकलेगा । यह दूसरी डोली शत्रु सेना को सहज दिखाई देगी इसलिए वह पकड़ी जाएगी और शत्रु यह समझकर खुशी से झूम उठेंगे कि शिवाजी महाराज ही पकड़े गए हैं । इस बीच शिवाजी महाराज दुर्गम रास्ते से बाहर खिसक जाएँगे लेकिन शिवाजी महाराज का स्वाँग भरेगा कौन ? ऐसा स्वाँग भरना मौत के मुँह में जाना था लेकिन एक बहादुर जवान तैयार हो गया । दीखने में वह शिवाजी महाराज जैसा था और उसका नाम भी शिवाजी ही था । वह शिवाजी महाराज की सेवा में केशभूषा करनेवाला सेवक था । वह बड़ा साहसी और चतुर था ।

स्वाँग भरे हुए शिवाजी की डोली छोटे दरवाजे से बाहर निकल गई । रात का समय था । मूसलाधार बारिश हो रही थी फिर भी शत्रुओं की सेना पहरा दे रही थी । उन्होंने उस डोली को पकड़ लिया । शिवाजी महाराज को ही पकड़ लिया; यह मानकर वे उस डोली को

सिद्दी जौहर की छावनी में ले गए । वहाँ सभी प्रसन्नता से नाचने-गाने लगे । इसी बीच शिवाजी महाराज दुर्गम रास्ते द्वारा गढ़ से बाहर निकल गए । साथ में बाजीप्रभु देशपांडे और उनके गिने-चुने सैनिक थे । उन्हीं के साथ बांदल देशमुख की सेना थी । इधर कुछ ही समय में उस शिवाजी का नकली रूप सामने आ गया । तब गुस्से में आकर सिद्दी ने उसे तुरंत मार डाला । शिवाजी महाराज के लिए, स्वराज्य के लिए इस शिवाजी ने आत्मबलिदान दिया । वह अमर हो गया ।

शिवाजी महाराज आँखों में धूल झोंककर खिसक गए, यह बात सिद्दी के ध्यान में आते ही वह तिलमिला उठा । उसने बड़ी तत्परता से अपने सरदार सिद्दी मसऊद को विशाल फौज के साथ शिवाजी महाराज का पीछा करने के लिए भेज दिया । पीछा शुरू हुआ । दिन निकलते ही उन्होंने शिवाजी महाराज को पांढरपाणी के झरने के पास पा लिया । शिवाजी महाराज उलझन में पड़ गए । उन्होंने बड़ी कठिनाई से घोड़ दर्रा पार किया ।

बाजीप्रभु का बाँकपन : झल्लाए हुए सिद्दी के सैनिक बड़ी तेजी से दर्रे की ओर बढ़े आ रहे थे । शिवाजी महाराज ने सोचा कि अब विशालगढ़ पहुँचना कठिन है । उन्होंने बाजीप्रुभ से कहा, ''बाजी, समय बड़े संकट का है । आगे चढ़ाई है । पीछे शत्रु है । अब विशालगढ़ तक पहुँचना कठिन है । चलो, पीछे लौटकर शत्रु का मुकाबला करते हैं ।'' बाजीप्रभु शिवाजी महाराज के मन में उत्पन्न दुविधा को जान गए । शत्रु बिफरकर दर्रे की दिशा में आ रहा था । शिवाजी महाराज का जीवन खतरे में था । संपूर्ण स्वराज्य खतरे में था । बाजीप्रभु ने अधीर होकर शिवाजी महाराज से कहा, ''महाराज, आप कुछ सैनिकों के साथ विशालगढ़ की ओर चलिए । बचे हुए सैनिकों के साथ मैं दर्रे के मुँह पर खड़ा रहता हूँ । महाराज, मैं मर जाऊँगा पर शत्रु को दर्रा पार करने न दूँगा । एक 'बाजी' गया तो आपको दूसरा मिलेगा लेकिन स्वराज्य को शिवाजी महाराज की जरूरत है । शत्रुओं की संख्या अधिक है । हम संख्या में कम हैं । यहाँ हम टिक नहीं सकेंगे । आप यहाँ न रुकिए । हम दर्रे पर डटे रहेंगे । शत्रु को हम यहीं रोक लेंगे । जब तक आप गढ़ पर नहीं पहुँचते हैं, तब तक हम शत्रु को यहीं रोक रखते हैं । आप निश्चिंत होकर जाइए ।'' बाजीप्रभु की स्वामिभक्ति देखकर शिवाजी महाराज का मन भर आया । बाजीप्रभु जैसा रत्न खोना उन्हें स्वीकार नहीं था किंतु उन्हें स्वराज्य के लक्ष्य तक पहुँचना था । उन्होंने अपने मन को समझाया । शिवाजी महाराज ने बाजीप्रभु को बड़े प्यार से गले लगाया और कहा, ''हम गढ़ पर जाते हैं । वहाँ पहुँचते ही तोपों की आवाज होगी फिर दर्रा छोड़कर आप तुरंत चले आना ।''

बाजीप्रभु ने शत्रु को रोका : बाजीप्रभु को दर्रे में छोड़कर शिवाजी महाराज विशालगढ़ की ओर बढ़े । बाजीप्रभु ने शिवाजी महाराज को झुककर प्रणाम किया । फिर उसने अपने हाथ में तलवार ली और वह दर्रे के मुँह पर आ खड़ा हुआ । उसने मावलों की टोलियाँ बनाईं । उनके स्थान निर्धारित किए । मावलों ने गिट्टी-पत्थर इकट्ठे किए और पूरी तैयारी के साथ अपनी-

घोड़ दर्रे में शिवाजी महाराज और बाजीप्रभु देशपांडे

अपनी जगहों पर जा खड़े हुए । दर्रे के मुँह पर मावलों की फौलादी दीवार खड़ी हो गई । इसी समय शत्रु के युद्ध के नारे सुनाई पड़े । शत्रु दर्रे के नीचे आ गया था । बाजीप्रभु ने मावलों से कहा, ''बहादुर सैनिको, सावधान ! प्राण भले ही त्याग दो पर अपने-अपने स्थान पर डटे रहो । शत्रु दर्रा पार न करने पाए ।'' बाजीप्रभु और उसके मावले साथी दर्रे के मुँह पर पैर जमाकर खड़े हो गए । दर्रे का मार्ग कठिन और टेढ़ा-मेढ़ा था । एक साथ तीन-चार आदमी मुश्किल से ऊपर चढ़ सकते थे ।

उधर शिवाजी महाराज विशालगढ़ की ओर हवा की तरह बढ़े जा रहे थे । विशालगढ़ का किला अभी दूर था । गढ़ पर पहुँचने के लिए शिवाजी महाराज को डेढ़-दो-घंटे का समय और चाहिए था । उतनी देर तक यदि बाजीप्रभु दर्रे के मुँह पर शत्रु से संघर्ष करता रहा तो शिवाजी महाराज की विजय निश्चित थी ।

दर्रे में युद्ध : दर्रे में घमासान युद्ध शुरू हुआ । शत्रु की सेना दर्रा चढ़ने लगी । शत्रु की पहली टुकड़ी दर्रे में आकर रुक गई । मावलों ने शत्रु पर पत्थरों की वर्षा शुरू की । पत्थर बरसाने में मावले होशियार थे । वे चतुराई से युद्ध करने लगे । शिवाजी महाराज के मावलों ने कई शत्रुओं का सफाया किया । कई सैनिकों के सिर फूट गए । पहली टुकड़ी पराजित हुई । वह पीछे हटी । फिर दूसरी टुकड़ी बड़े उत्साह से दर्रा चढ़ने लगी । बाजीप्रभु चिल्ला उठा, ''मारो, काटो !'' मावले जोश से भर उठे । 'हर-हर महादेव', का नारा लगाते हुए वे शत्रु पर टूट पड़े । पत्थरों की वर्षा शुरू हुई । शत्रु धड़ाधड़ गिरने लगे । जोश के साथ बाजीप्रभु चिल्लाया, ''शाबाश, मेरे वीर सिपाहियो ! और पत्थर बरसाओ । शत्रु को मारो । जोर से प्रहार करो । शाबाश ।'' दूसरी टुकड़ी नष्ट हुई ।

उधर घोड़े पर सवार शिवाजी महाराज विशालगढ़ की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे थे । गढ़ की सीमा निकट आ रही थी । प्रत्येक क्षण बड़ा ही महत्त्वपूर्ण था । विशालगढ़ के नीचे शत्रुओं की घेरा बंदी थी । शिवाजी महाराज ने कुछ चुने हुए साथियों के साथ शत्रु पर आक्रमण कर दिया । शत्रु सैनिकों से मुकाबला करते हुए शिवाजी महाराज आगे बढ़े । वे अपने मावलों के साथ शत्रु के घेरे को तोड़कर विशालगढ़ की ओर बढ़ रहे थे ।

बाजीप्रभु का पराक्रम : यहाँ घोड़ दर्रे में घमासान चल रहा था । सिद्दी मसऊद क्रुद्ध हो उठा था । उसकी तीसरी टुकड़ी दर्रा चढ़ने लगी । मराठों ने अपूर्व वीरता का परिचय दिया । शत्रु ने बाजीप्रभु पर हमला किया । उसको घेर लिया । बाजीप्रभु आवेश से लड़ने लगा, उसने अद्‍भुत पराक्रम दिखाया । बाजीप्रभु के शरीर पर बहुत प्रहार हुए थे । अंग-अंग पर घाव लगे थे । शरीर से खून की धाराएँ बहने लगी थीं फिर भी वह अपने स्थान पर अडिग रहा । उसका सारा शरीर खून से लथपथ हो गया था । मगर वह पीछे नहीं हटा । उसने मावलों को ऊँची आवाज में आदेश दिया । मावलों ने बड़े जोश के साथ शत्रु पर धावा बोल दिया । शत्रु पीछे हटा । बाजीप्रभु घायल हो गया था । फिर भी युद्ध जारी रखने के लिए वह मावलों को प्रेरणा दे रहा था । उसका सारा ध्यान तोपों की आवाजों की ओर लगा था ।

वह पावन दर्रा : उसी समय तोप की आवाज हुई । युद्ध भूमि में गिरे हुए बाजीप्रभु के कानों में तोपों की आवाज सुनाई पड़ी ''महाराज गढ़ पर पहुँच गए । मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया । अब मैं प्रसन्नता से मरता हूँ ।'' कहकर स्वामिभक्त बाजीप्रभु ने प्राण त्याग दिए । जब विशालगढ़ पर महाराज को इस बात का पता चला तब उन्हें बहुत दुख हुआ और उन्होंने कहा ''बाजीप्रभु देशपांडे स्वराज्य के लिए शहीद हुए । बांदल के लोगों ने पराकाष्ठा का युद्ध किया ।''

बाजीप्रभु जैसे देशभक्तों के कारण ही स्वराज्य आगे बढ़ा । उस स्वामिभक्त के रक्त से घोड़ दर्रा पवित्र हुआ । 'पावन दर्रा' के नाम से यह दर्रा इतिहास में अमर हुआ । धन्य थे वे वीर और धन्य था बाजीप्रभु ।

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(अ) सिद्दी जौहर ने ········· गढ़ को चारों तरफ से घेर लिया था ।

(आ) बाजीप्रभु की ········· देखकर शिवाजी महाराज का मन भर आया ।

(इ) घोड़ दर्रा ········· नाम से इतिहास में अमर हुआ ।

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज ने पन्हालगढ़ के घेरे से निकलने के लिए सिद्दी जौहर को कौन-सा संदेश भेजा ?

(आ) सिद्दी जौहर क्यों क्रुद्ध हुआ ?

(इ) विशालगढ़ की ओर जाते समय शिवाजी महाराज ने बाजीप्रभु से क्या कहा ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) पन्हालगढ़ के घेरे से निकलने के लिए शिवाजी महाराज ने कौन-सी योजना बनाई ?

(आ) बाजीप्रभु ने शत्रु को घोड़ दर्रे में रोकने के लिए कौन-सी योजना बनाई ?

४. कारण लिखो :

(अ) आदिलशाह बहुत क्रोधित हुआ ।

(आ) शिवाजी महाराज की सेवा में नियुक्त शिवाजी अमर हो गया ।

(इ) पावन दर्रा इतिहास में अमर हुआ ।

५. कौन ?.... वह लिखो :

(अ) शूर-वीर परंतु क्रूर था ------ ।

(आ) घोड़ दर्रे में घमासान युद्ध करने वाला ------ ।

(इ) घेरे से निकल जाने वाले ------ ।

उपक्रम

शिवाजी महाराज की सेवा में नियुक्त स्वामिभक्त सैनिकों की अधिक जानकारी अपने शिक्षकों की सहायता से इकट्ठा करो ।

6IMBXH

११. शाइस्ता खान की दुर्दशा

शाइस्ता खान का आक्रमण : बीजापुर के आदिलशाह ने बहुत कोशिश की परंतु शिवाजी महाराज के आगे उसकी एक न चली । उसके प्रत्येक सरदार को शिवाजी महाराज ने बुरी तरह से पराजित किया । अंत में आदिलशाह ठंडा पड़ गया । उसने शिवाजी महाराज के साथ संधि कर ली और उनका स्वतंत्र राज्य स्वीकार कर लिया । इस कारण दक्षिणी हिस्सा कुछ समय तक सुरक्षित रहा ।

इसके बाद शिवाजी महाराज उत्तर में मुगलों की ओर मुड़े । मुगलों के आक्रमण से महाराष्ट्र की दुरवस्था हो गई थी । उस समय दिल्ली में मुगल शासक औरंगजेब था । उसके प्रदेश पर शिवाजी महाराज ने आक्रमण किए । इससे बादशाह क्रोध में आ गया । शिवाजी महाराज पर आक्रमण करने के लिए उसने अपने मामा शाइस्ता खान को भेजा । उसने पुणे पर आक्रमण किया । उसके साथ पचहत्तर हजार सैनिक थे । सैकड़ों हाथी, ऊँट और तोपें थीं । शाइस्ता खान शिरवल, शिवापुर और सासवड़ आदि गाँव जीतता हुआ आगे बढ़ा । उसने पुरंदर किले को घेर लिया । वह आगे ही बढ़ा था कि एक बार मराठों ने उसे दर्रे में घेर लिया । मराठा बहुत फुर्तीले और भीमा प्रदेश के घुड़सवार थे । रोटी-चटनी खाना, शरीर पर कंबल ओढ़ना और हवा की तरह पहाड़ों में भाग-दौड़ करने में मराठा बड़े होशियार थे । मराठों की छापामार पद्धति से शाइस्ता खान की सेना परेशान हो गई । अंततः तंग आकर उसने पुरंदर का घेरा उठवा लिया ।

फिरंगोजी नरसाला : अब शाइस्ता खान पुणे की ओर चल पड़ा । पहले उसने चाकण का किला कब्जे में कर लिया । चाकण के किले में फिरंगोजी नरसाला ने बड़े पराक्रम से शाइस्ता खान का सामना किया । दो महीने फिरंगोजी किले की सुरक्षा के लिए लड़ता रहा परंतु शाइस्ता खान की तोपों के सामने वह टिक न सका । फिरंगोजी नरसाला की वीरता पर शाइस्ता खान प्रसन्न हुआ । उसने उसे शाही नौकरी का लोभ दिखाया लेकिन फिरंगोजी लोभ में नहीं आया ।

लाल महल में शाइस्ता खान : अब शाइस्ता खान पुणे आया । वह शिवाजी महाराज के लाल महल में रुका । उसकी सेना ने लाल महल के चारों ओर पड़ाव डाला । एक वर्ष बीता, दूसरा बीता परंतु शाइस्ता खान लाल महल से टल नहीं रहा था; उल्टे वह अपनी सेना आस-पास के प्रदेश में भेजा करता । उसके सैनिक लोगों के जानवर पकड़ लाते; खेती का नुकसान करते । इस प्रकार उसने आस-पास के प्रदेश को तहस-नहस कर दिया था ।

साहसपूर्ण योजना : शिवाजी महाराज ने शाइस्ता खान को सबक सिखाने का निश्चय किया । शाइस्ता खान लाल महल पर अधिकार जमाए बैठा था; यह बात शिवाजी महाराज की दृष्टि से सुविधाजनक थी क्योंकि शिवाजी महाराज को उस महल के कमरे, कक्ष, खिड़कियाँ, दरवाजे, रास्ते और गुप्त मार्ग आदि की भली-भाँति जानकारी थी । इसके अतिरिक्त शिवाजी महाराज के चतुर गुप्तचर खान की सेना में पहुँच

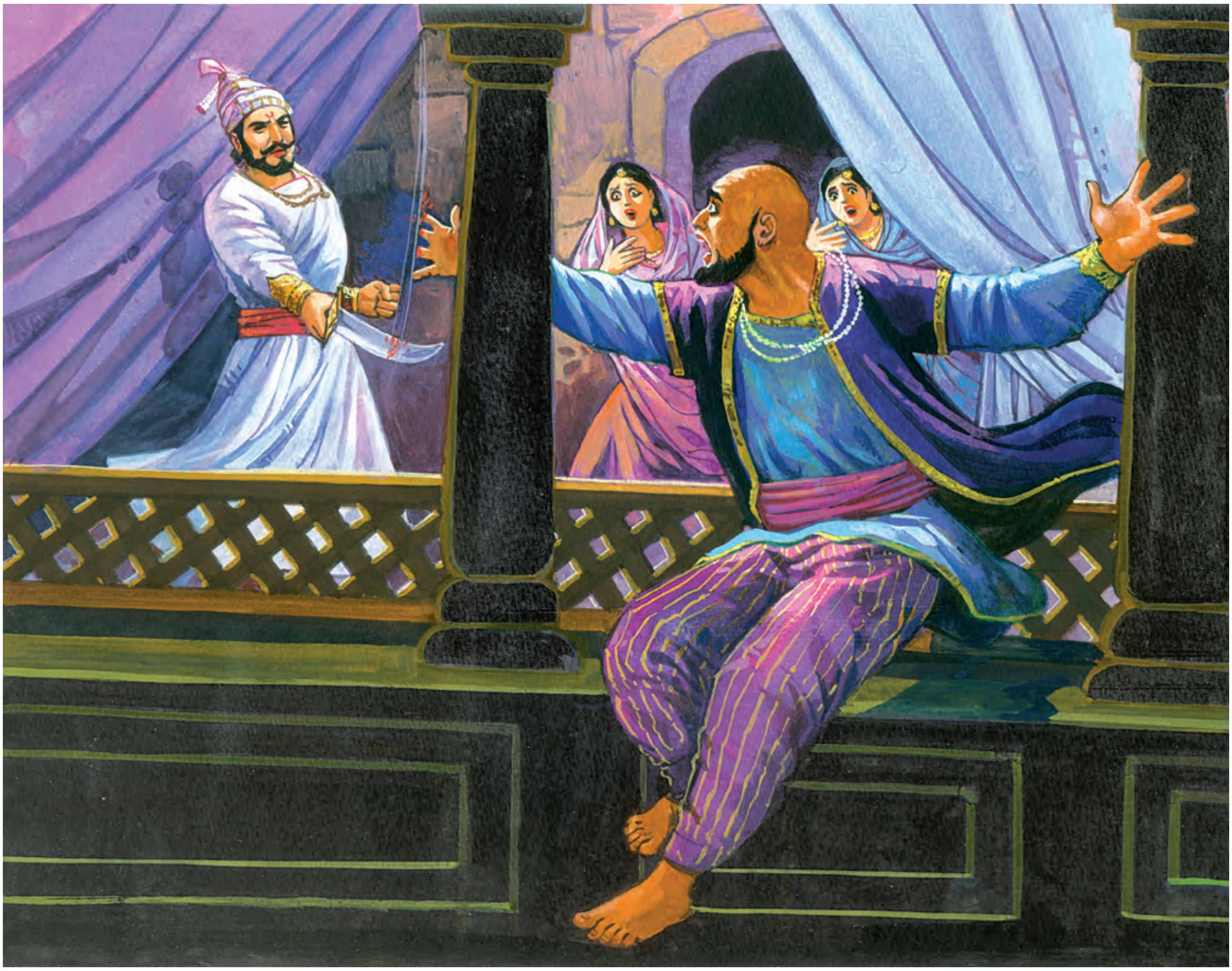

शिवाजी महाराज का शाइस्ता खान पर हमला

चुके थे। रात के समय सीधे शाइस्ता खान के महल में घुसकर उसे खत्म करने की शिवाजी महाराज ने योजना बनाई। कितना साहसपूर्ण निश्चय था वह ! महल में चींटी-कीड़ों तक को प्रवेश कठिन था। लाल महल के चारों ओर पचहत्तर हजार सैनिकों का कड़ा पहरा था। शाइस्ता खान ने सशस्त्र मराठों को शहर में आने के लिए मना कर रखा था परंतु जब शिवाजी महाराज निश्चय करते तो वह अटल हुआ करता था।

शिवाजी महाराज ने दिन निश्चित किया। ५ अप्रैल १६६३ की रात। गाते-बजाते शादी की बारात जा रही थी। आगे चंद्रज्योतियाँ (दीये) जल रही थीं। सैकड़ों स्त्री-पुरुष सज-धजकर चल रहे थे। कोई पालकी में, कोई डोली में तो कोई पैदल चल रहा था। अपने आदमी लेकर शिवाजी महाराज उस बारात में घुस गए थे। बारात आगे निकल गई। सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था। शिवाजी महाराज और उनके आदमी लाल महल की दीवार की ओर बढ़े। उस समय शाइस्ता खान गहरी नींद में था।

शाइस्ता खान को सबक सिखाया : महल की दीवार में बड़ी सेंध बनाकर शिवाजी महाराज अंदर घुस गए। उनका अपना महल था वह ! वे उसका कोना-कोना जानते थे। खान के पहरेदार

ऊँघ रहे थे । शिवाजी महाराज के आदमियों ने उन्हें बाँध दिया । शिवाजी महाराज और अंदर घुस गए । इतने में तलवार लिये कोई उनकी ओर दौड़ता हुआ आया । शिवाजी महाराज ने उसे मार गिराया । उन्हें लगा कि वह शाइस्ता खान होगा लेकिन वह उसका बेटा था । शोर मच गया । लोग जाग गए ।

शिवाजी महाराज सीधे खान के कमरे में पहुँचे । उन्होंने तलवार निकाली । शाइस्ता खान डर गया । ''शैतान ! शैतान !'' चिल्लाता हुआ वह खिड़की से भागने की कोशिश करने लगा । शिवाजी महाराज उसके पीछे दौड़े । शाइस्ता खान खिड़की से बाहर कूदने ही वाला था कि शिवाजी महाराज ने उसपर वार किया । खान की तीन उँगलियाँ कट गईं । जो प्राणों पर गुजरनेवाली थी वह उँगलियों पर निभ गई । खान खिड़की से कूदकर भाग निकला । उसे धोखे में रखने के लिए शिवाजी महाराज और उनके आदमी ''शिवाजी आया । दौड़ो, दौड़ो ! पकड़ो उसे !'' चिल्लाते हुए भागने लगे । खान के आदमी भी डरकर भाग रहे थे । शिवाजी महाराज और उनके आदमी सिंहगढ़ की ओर चले गए । खान के आदमी रातभर शिवाजी महाराज को ढूँढ़ते रहे ।

शाइस्ता खान बुरी तरह डर गया था । उसे भय सताने लगा, 'आज उँगलियाँ कट गईं, कल शिवाजी मेरा सिर काटकर ले जाएगा ।' यह समाचार मिलते ही बादशाह औरंगजेब बहुत क्रोधित हुआ । वह शाइस्ता खान पर बहुत नाराज हुआ । उसने शाइस्ता खान को बंगाल जाने का आदेश दिया ।

मुगल शासन के लिए यह पहली जबरदस्त चोट थी । शिवाजी महाराज विजयी हुए । तोपें दागी गईं । सारे महाराष्ट्र में आनंद छा गया ।

6IH7ZJ

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शाइस्ता खान ने .... किले को घेर लिया ।
(पुरंदर, पन्हाला, शिवनेरी)

(आ) शाइस्ता खान पुणे के .... में रुका ।
(शनिवार वाड़ा, लाल महल, पर्वती)

(इ) बादशाह औरंगजेब ने शाइस्ता खान को .... में जाने का आदेश दिया ।
(असम, कनार्टक, बंगाल)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो:

(अ) शाइस्ता खान किन गाँवों को जीतता हुआ पुणे आया ?

(आ) शाइस्ता खान की सेना परेशान क्यों हो गई थी ?

(इ) शाइस्ता खान को कौन-सा भय सताने लगा ?

३. कारण लिखो :

(अ) बादशाह औरंगजेब शिवाजी महाराज पर क्रोधित हुआ ।

(आ) शाइस्ता खान खिड़की से भाग गया ।

४. घटनाओं को कालक्रमानुसार लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज और उनके सहयोगी सिंहगढ़ चले गए ।

(आ) शाइस्ता खान लाल महल में रुका ।

(इ) शाइस्ता खान ने चाकण का किला अपने अधिकार में कर लिया ।

(ई) शिवाजी महाराज ने शाइस्ता खान को सबक सिखाया ।

उपक्रम

लाल महल की सैर का आयोजन करो ।

१२. पुरंदर का घेरा और संधि

सूरत पर छापा : इस विजय के बाद शिवाजी महाराज चुप नहीं रहे । जब औरंगजेब की सेना महाराष्ट्र में उपद्रव मचा रही थी तब बादशाह पर धाक जमाने के लिए शिवाजी महाराज ने सूरत शहर पर छापा मारा । कहाँ पुणे और कहाँ सूरत ! उस समय सूरत मुगल साम्राज्य का बहुत बड़ा व्यापारिक केंद्र था । धन-धान्य से परिपूर्ण । सूरत पर शिवाजी महाराज ने आक्रमण करके लाखों रुपये लूटे लेकिन सूरत पर आक्रमण करने पर भी शिवाजी महाराज ने अपनी नीति को नहीं त्यागा । चर्च अथवा मसजिद को हाथ नहीं लगाया । महिलाओं को कष्ट नहीं पहुँचाया ।

सूरत पर हुए इस आक्रमण से औरंगजेब बहुत चिढ़ गया । उसने मराठों का राज्य नष्ट करने का निश्चय किया । उसने अपने शक्तिशाली सेनापति मिर्जाराजे जयसिंह को शिवाजी महाराज पर आक्रमण करने के लिए भेजा । उसके साथ दिलेर खान नाम का अपना विश्वसनीय सरदार भी भेजा । साथ में अपार धनराशि तथा गोला-बारूद भी दिया । जयसिंह और दिलेर खान अपनी विशाल सेना के साथ दक्षिण में आ पहुँचे । स्वराज्य के लिए यह बहुत बड़ा संकट था ।

सूरत से लौटते ही शिवाजी महाराज को सन १६६४ में कर्नाटक से एक दुखद समाचार मिला । शिकार के समय शहाजीराजे दुर्घटनाग्रस्त होकर चल बसे थे । शिवाजी

पुरंदर किला

महाराज और जिजामाता पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा । शिवाजी महाराज ने मातोश्री को सांत्वना दी और उन्हें इस दुख से उबार लिया ।

मुगलों द्‌वारा पुरंदर का घेरा : शिवाजी महाराज का पुरंदर किला भव्य और मजबूत था । दिलेर खान जानता था कि इस किले को जीते बिना शिवाजी महाराज को पराजित करना कठिन है । इसलिए उसने पुरंदर को घेर लिया । उसकी सेना बहुत विशाल थी लेकिन पुरंदर का किलेदार मुरारबाजी बड़ा ही दृढ़ निश्चयी और पराक्रमी वीर था । उसके सैनिक बड़े ही वीर पराक्रमी थे । इन सारे वीर सैनिकों को लेकर मुरारबाजी लड़ने के लिए तैयार हुआ ।

दिलेर खान की तोपें गरजने लगीं । तोपों के लाल-लाल गोले किले पर बरसने लगे लेकिन मुरारबाजी और उसके मावले पीछे नहीं हटे । वे दुगुने जोश से लड़ने लगे । मुगलों ने तोपों की वर्षा की । दुर्ग का बुर्ज ध्वस्त हुआ । मुगल मचान में घुस आए । दिलेर खान ने मचान जीत लीया । मराठों ने मचान के ऊपर के बाले किले का आश्रय लिया । वे लड़ते ही रहे । दिलेर खान अपनी छावनी से यह लड़ाई देख रहा था ।

मुरारबाजी क्रोध से लाल हो गया था । उसने पाँच सौ मावले चुने । उन्हें लेकर मुगलों पर आक्रमण करने का उसने निश्चय किया । ऊपरी किले का दरवाजा खुल गया । 'हर-हर महादेव' के नारों के साथ मुरारबाजी और उसके मावले मुगलों पर टूट पड़े । थोड़ी देर तक घमासान युद्‌ध हुआ । मुगलों की सेना विशाल थी मगर मराठों ने उसको पराजित कर दिया । अंत में मुगल पीछे हट गए । दिलेर खान के डेरे की ओर वे अपनी जान लेकर भागने लगे ।

मुरारबाजी ने उनका पीछा करना शुरू किया । मुरारबाजी की सेना दिलेर खान की छावनी में घुस गई । छावनी में शोर मच गया । चारों ओर अफरा-तफरी, शोरगुल और चीख-पुकार मच गई । दिलेर खान बड़ी फुर्ती से हाथी के हौदे में बैठ गया । सामने देखा तो उसे मुरारबाजी दिखाई दिया । मुरारबाजी की तलवार किसी की छाती में, किसी के सिर में, तो किसी के गले में घुस रही थी । मुरारबाजी को कोई भी रोक नहीं पा रहा था । उसका पराक्रम देखकर दिलेर खान स्तब्ध रह गया ।

मुरारबाजी का अतुलनीय पराक्रम : दिलेर खान को देखकर मुरारबाजी क्रोधित हुआ । 'मारो, काटो, लाशों के ढेर लगा दो,' चिल्लाकर वह शत्रु पर टूट पड़ा । उसकी तलवार तेजी से घूमने लगी । जो बीच में आया, वह वहीं मारा गया । इस अकेले वीर को मुगलों ने चारों ओर से घेर लिया । इतने में दिलेर खान हौदे में से चिल्लाया, "ठहरो ।" मुगल सैनिक रुक गए । क्षण भर के लिए वे पीछे हट गए । खान ने मुरारबाजी से कहा, "मुरारबाजी, तुम जैसा पराक्रमी मैंने आज तक नहीं देखा । तुम हमारे पक्ष में आ जाओ । हम तुम्हें वचन देते हैं; बादशाह तुम्हें सरदार बनाएँगे । जागीर देंगे । इनाम देंगे ।" मुरारबाजी ने दिलेर खान की बातें सुनीं । क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गईं । वह कुद्‌ध होकर बोला, "अरे, हम शिवाजी महाराज के साथी हैं ! तेरा वचन क्यों लेंगे ? हमें किस बात

मुरारबाजी देशपांडे – दिलेर खान : युद्‌ध प्रसंग

की कमी है ? किसे चाहिए तुम्हारे बादशाह की जागीर ?'' मुरारबाजी खान की ओर लपका और बड़े जोरों से मार-काट करने लगा । दिलेर खान ने हौदे में से बाण छोड़ा । वह बाण मुरारबाजी के गले में घुस गया । वह जमीन पर गिर पड़ा । मावलों ने उसका शरीर उठाया और किले में ले गए । किलेदार के धराशायी होने से उन्हें बड़ा दुख हुआ लेकिन 'एक मुरारबाजी शहीद हो गया तो क्या हुआ ? हम भी वैसे ही वीर हैं । हिम्मत से लड़ेंगे ।' इस दृढ़ निश्चय के साथ वे फिर से लड़ने लगे ।

यह समाचार मिलने पर शिवाजी महाराज को बहुत दुख हुआ । उन्होंने सोचा कि एक-एक किले पर एक-एक वर्ष तक शत्रु के साथ लड़ा जा सकता है परंतु व्यर्थ में हमारे वीर मारे जाएँगे । शिवाजी महाराज यह नहीं चाहते थे ।

पुरंदर की संधि : करें क्या ? जब शक्ति सफल न हुई और युक्ति भी काम न आई तब कुछ समय तक हार मानना ही उचित था । इसलिए शिवाजी महाराज ने मुगलों से संधि करने का निश्चय किया । शिवाजी महाराज स्वयं जयसिंह के पास गए । उसके साथ बड़ी कूटनीति से बातचीत की । उन्होंने कहा, ''मिर्जाराजे, आप राजपूत हैं । हमारा

शिवाजी महाराज–मिर्जाराजे जयसिंह की भेंट

दुख आप जानते हैं । बादशाह के हमलों से महाराष्ट्र बरबाद हो गया है । लोगों की दुर्दशा हुई है । लोग सुखी रहें इसलिए हमने स्वराज्य का कार्य हाथ में लिया है । आप भी यह काम हाथ में लीजिए । हम और हमारे मावले आपके साथ रहेंगे ।'' जयसिंह बड़ा चतुर था । उसने शिवाजी महाराज से संधि करने के लिए कहा । उन्होंने संधि कर ली । इस संधि में शिवाजी महाराज ने मुगलों को तेईस किले और उसके अधीनस्थ चार लाख होन (मुद्रा) का प्रदेश देना स्वीकार किया । यह संधि ई.स. १६६५ में हुई ।

पुरंदर में संधि हुई । जयसिंह ने शिवाजी महाराज को सलाह दी कि वे उसी समय आगरा जाकर बादशाह से मिलें । उनकी सुरक्षा का दायित्व उसने अपने ऊपर लिया । जयसिंह की सलाह पर शिवाजी महाराज ने बहुत विचार किया । शिवाजी महाराज जानते थे 'बादशाह कपटी है, अपने भाइयों के साथ भी उसने विश्वासघात किया है ।' फिर भी उन्होंने बड़ी सावधानी से इस समस्या का सामना करने का निश्चय किया । शिवाजी महाराज ने जयसिंह के पास संदेश भेजा, 'बादशाह से मिलने के लिए मैं आगरा जाने को तैयार हूँ ।'

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) उस समय .... मुगल साम्राज्य का बहुत बड़ा व्यापारिक केंद्र था ।
(पुणे, सूरत, दिल्ली)

(आ) पुरंदर का किलेदार .... बड़ा ही दृढ़ निश्चयी और पराक्रमी वीर था ।
(बाजीप्रभु, तानाजी, मुरारबाजी)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज ने सूरत शहर पर आक्रमण क्यों किया ?

(आ) दिलेर खान ने पुरंदर को क्यों घेर लिया ?

(इ) शिवाजी महाराज ने मुगलों के साथ संधि करने का निश्चय क्यों किया ?

(ई) पुरंदर की संधि में शिवाजी महाराज ने मुगलों को कौन-सा प्रदेश देना स्वीकार किया ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) मुरारबाजी का पराक्रम देखकर दिलेर खान ने उससे क्या कहा ?

(आ) मुरारबाजी ने दिलेर खान को क्या उत्तर दिया ?

४. पाठ में आए हुए नामों के अक्षरों के आधार पर शब्द पूर्ण करो :

(अ) औ -------

(आ) पु -------

(इ) मु -------

(ई) ज -------

(उ) दि -------

उपक्रम

अपने आसपास के किले की सैर करो । उस किले के बारे में शिक्षकों से जानकारी प्राप्त करो ।

6J6427

१३. बादशाह को चकमा दिया

जयसिंह की बातों पर विश्वास करके शिवाजी महाराज बादशाह से मिलने के लिए आगरा चल पड़े । जाने से पूर्व शिवाजी महाराज ने स्वराज्य का प्रशासन जिजामाता के हाथों में सौंपा और उनका आशीर्वाद लिया । उन्होंने अपने पुत्र संभाजीराजे, चुने हुए सरदार, कुछ विश्वसनीय लोग और भारी धन अपने साथ लिया । स्थान-स्थान पर पड़ाव डालते हुए वे आगरा पहुँचे ।

दरबार में स्वाभिमान प्रदर्शन : निर्धारित समय पर शिवाजी महाराज बादशाह के दरबार में गए । बाल संभाजीराजे साथ में थे । उस दिन बादशाह औरंगजेब की पचासवीं वर्षगाँठ थी । दरबार-ए-आम समाप्त होने पर बादशाह औरंगजेब विचार-विमर्श के लिए दरबार-ए-खास में गया । उसके सामने कुछ प्रमुख सरदार अपने पद और प्रतिष्ठा के अनुसार अपनी-अपनी पंक्ति में खड़े थे । बादशाह औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को पीछे की पंक्ति में खड़ा किया । मराठों को कई बार पीठ दिखाकर भागने वाला जसवंत सिंह राठौर शिवाजी महाराज की अगली पंक्ति में था । शिवाजी महाराज ने सोचा, ‘हम महाराष्ट्र के राजा हैं । हमारा सम्मान प्रथम पंक्ति

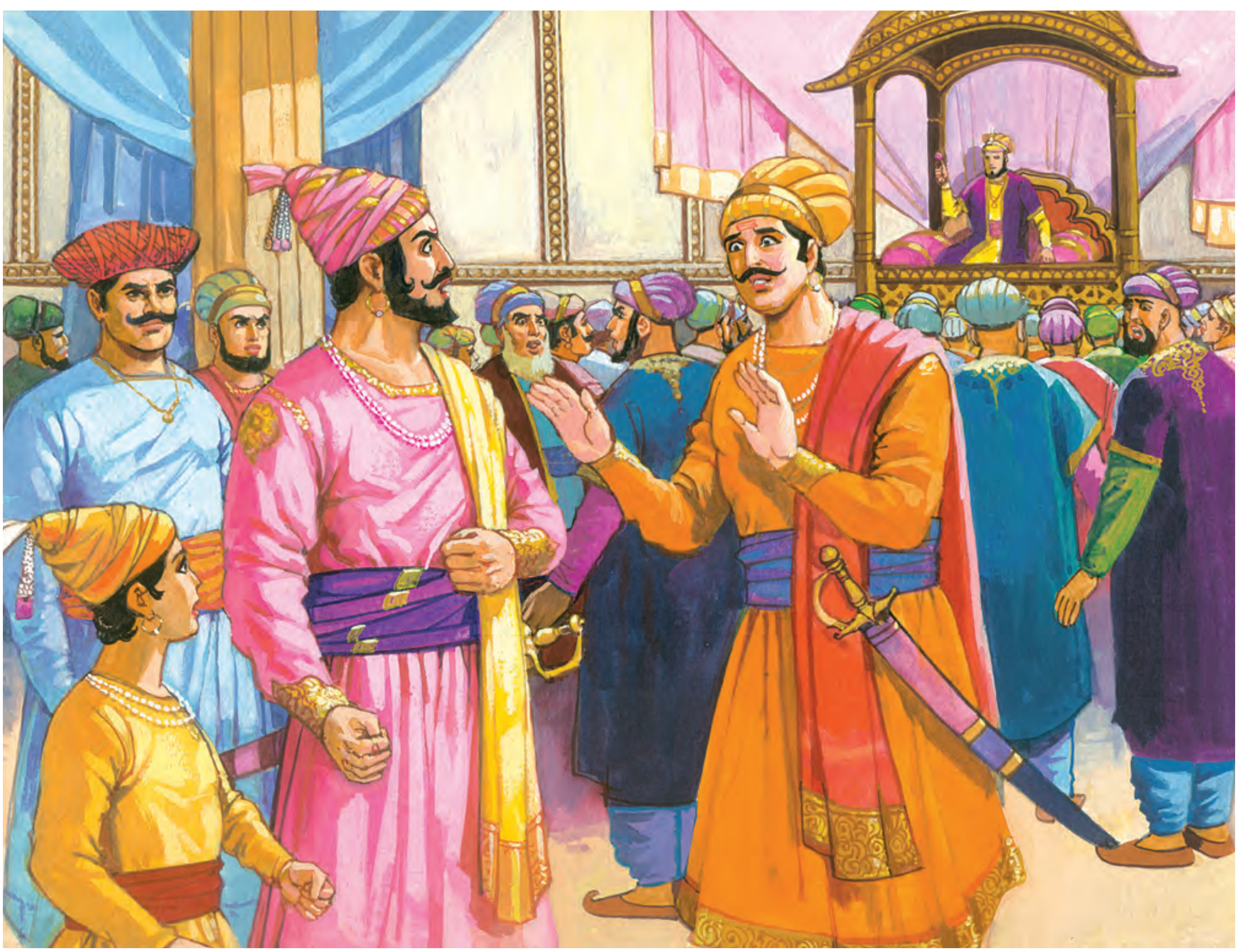

बादशाह औरंगजेब के दरबार में शिवाजी महाराज

में बैठने का है परंतु बादशाह ने हमें पिछली पंक्ति में खड़ा किया । इसका क्या उद्‌देश्य है ?’ क्रोध से उनकी आँखें लाल हो गईं । यह अपमान उनसे सहा नहीं गया । क्रोध में शिवाजी महाराज महल से बाहर निकल आए और तुरंत अपने निवास स्थान पर पहुँचे । इसके बाद फिर कभी बादशाह का मुँह न देखने का उन्होंने निश्चय किया ।

इस प्रकार औरंगजेब से भेंट करने की बात बिगड़ गई । इस घटना का समाचार चारों ओर फैल गया ।

बादशाह द्‌वारा विश्वासघात : औरंगजेब ने शिवाजी महाराज के निवास स्थान के चारों ओर सैनिकों का पहरा लगा दिया । शिवाजी महाराज और संभाजीराजे बादशाह के बंदी बन गए । अब शिवाजी महाराज समझ गए कि बादशाह ने उनके साथ विश्वासघात किया है । वह उन्हें कभी नहीं छोड़ेगा ।

दिन-पर-दिन बीतने लगे । एक दिन शिवाजी महाराज ने बादशाह से निवेदन किया, ‘‘हमें महाराष्ट्र में जाने दीजिए ।’’ परंतु बादशाह ने उनकी बात नहीं मानी । उन्होंने बहुत कोशिश की मगर सब व्यर्थ रहा । शिवाजी महाराज ने निश्चय किया कि किसी भी प्रकार से बादशाह की कैद से छूटना ही है । शिवाजी महाराज ने बादशाह की अनुमति लेकर अपने साथ आए हुए आदमियों को दक्षिण में वापस भेज दिया । बादशाह ने सोचा, ‘अच्छा हुआ । शिवाजी महाराज की शक्ति कमजोर हो गई ।’ अब शिवाजी महाराज के साथ संभाजीराजे, हीरोजी फरजंद एवं मदारी मेहतर नामक सेवक ही रह गए थे ।

कुछ समय बाद एक दिन शिवाजी महाराज ने बीमार होने का स्वाँग रचा । वह एक बहाना ही था ! उनके पेट में जोरों की पीड़ा होने लगी । वैद्‌य-हकीम आए । दवा शुरू हुई । बीमारी दूर करने के लिए शिवाजी महाराज ने साधुओं और मौलवियों को मिठाई के पिटारे भेजने शुरू किए ।

पिटारे में बैठकर निकल जाना : पहरेदार मिठाई के पिटारों को खोलकर देखते थे लेकिन कुछ दिनों के बाद वे तंग आ गए और उन्होंने अब पिटारे खोलकर देखना बंद कर दिया । उन्होंने सोचा कि रोज-रोज क्या देखें ! एक दिन शाम को शिवाजी महाराज ने हीरोजी को अपनी जगह सुलाया । मदारी को उसके पैर दबाने के लिए बिठाया । शिवाजी महाराज और संभाजीराजे एक-एक पिटारे में बैठ गए । पिटारे बाहर निकले । निश्चित स्थान पर वे सुरक्षित पहुँच गए । वहाँ शिवाजी महाराज के स्वामिभक्त सेवक घोड़े लिये तैयार खड़े थे । इधर हीरोजी और मदारी यह कहकर, ‘‘महाराज की दवा लाने के लिए जाते हैं’’ निकल गए । इन दोनों ने अपने प्राणों पर खेलकर शिवाजी महाराज को बंदीगृह से बाहर निकल जाने में अपना बहुत बड़ा योगदान दिया ।

दूसरे दिन यह समाचार बादशाह को मिला । अपने हाथों से शिवाजी निकल गया ! बादशाह क्रोध से भड़क उठा । उसके सभी सरदार डर गए । शिवाजी महाराज को खोजने के लिए बादशाह ने चारों ओर गुप्तचर भेजे पर सब व्यर्थ साबित हुआ । बादशाह की कैद से मराठों का सिंह सदा के लिए निकल गया था । भेस बदलकर शत्रु को चकमा देते हुए शिवाजी महाराज अपने प्रदेश की ओर चल पड़े । उन्होंने संभाजीराजे को मथुरा में

शिवाजी महाराज का आगरा से छूटकर निकल जाना

सुरक्षित स्थान पर रखा और स्वयं आगे बढ़े । शिवाजी महाराज राजगढ़ में सुरक्षित लौट आए हैं; यह देखकर माता जिजाबाई की खुशी का ठिकाना न रहा । दो महीनों के बाद संभाजीराजे भी सुरक्षित राजगढ़ पहुँच गए । इस प्रकार बड़ी चतुराई से बादशाह को चकमा देकर शिवाजी महाराज निकल आए । यह घटना ई.स. १६६६ में घटी ।

6JEZ3U

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शिवाजी महाराज बादशाह के दरबार में गए; उस दिन बादशाह औरंगजेब की .... वर्षगाँठ थी ।
(पचासवीं, चालीसवीं, साठवीं)

(आ) आगरा से आते समय उन्होंने संभाजीराजे को .... में सुरक्षित स्थान पर रखा ।
(झाँसी, मथुरा, दिल्ली)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) आगरा जाने से पूर्व शिवाजी महाराज ने स्वराज्य का प्रशासन किसके हाथ में सौंपा ?

(आ) आगरा की कैद में शिवाजी महाराज के साथ कौन-कौन थे ?

(इ) बीमारी दूर करने के लिए शिवाजी महाराज ने क्या किया ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज बादशाह औरंगजेब के दरबार से क्रोधित होकर क्यों निकल गए ?

(आ) शिवाजी महाराज ने कैद से छूटने के लिए कौन-सी योजना बनाई ?

उपक्रम

शिवाजी महाराज आगरा की कैद से छुटकर आए- इस प्रसंग का चित्र बनाइए ।

१४. गढ़ आया पर सिंह गया

माँसाहेब की इच्छा : शिवाजी महाराज ने जयसिंह को जो तेईस किले दिए थे; वे अब भी मुगलों के पास ही थे । उन्हीं में से एक कोंढाणा किला भी था । एक दिन जिजामाता ने शिवाजी महाराज से कहा, ''बेटा शिवबा, कोंढाणा जैसा सुदृढ़ किला मुगलों के हाथ में हो, यह ठीक नहीं है, उसे वापस ले लो ।'' पुणे के पास का कोंढाणा किला स्वराज्य के अंतर्गत हो; इसलिए शिवाजी महाराज भी बेचैन थे । कोंढाणा मुगलों के अधिकार में हो; यह बात जिजामाता और शिवाजी महाराज के मन को साल रही थी ।

तानाजी मालुसरे : तानाजी प्रारंभ से ही शिवाजी महाराज का साथी था । कोकण में महाड़ के पास उमरठे नाम का गाँव है । तानाजी वहाँ का रहने वाला था । शिवाजी महाराज के काम में देरी अथवा टालमटोल करना तानाजी जानता ही नहीं था । महाराज जो भी काम कहें, उसे करने के लिए तानाजी हमेशा तत्पर रहता था । बड़ा साहसी साथी था । वह शरीर से भारी-भरकम और शक्तिशाली था । बुद्धि से भी चतुर था । शिवाजी महाराज के प्रति उसकी प्रगाढ़ निष्ठा थी ।

तानाजी की प्रतिज्ञा

पहले विवाह कोंढाणा का : तानाजी अपने बेटे की शादी की तैयारी में व्यस्त था । रायबा उसका इकलौता बेटा था । तानाजी के घर में रायबा की शादी की तैयारियाँ जोरों से चल रही थीं । विवाह में चार दिन बाकी थे । तानाजी ने सोचा, 'शिवाजी महाराज और माँसाहेब को भी शादी में बुलाएँ ।' शेलारमामा को साथ लेकर वह रायबा की शादी का निमंत्रण देने शिवाजी महाराज के पास पहुँचा । शेलारमामा ने शिवाजी महाराज को विवाह का निमंत्रण दिया । शिवाजी महाराज ने कहा, ''शेलारमामा, आप रायबा की शादी कीजिए । हम शादी में न आ सकेंगे क्योंकि हम स्वयं कोंढाणा किला जीतने जा रहे हैं ।''

शिवाजी महाराज के ये वचन सुनते ही तानाजी मालुसरे ने कहा, ''महाराज, तानाजी के जीवित रहते ऐसे खतरनाक काम के लिए आप स्वयं जाएँगे ? फिर हम किसलिए हैं ! नहीं... नहीं... ऐसा नहीं हो सकता । पहले विवाह कोंढाणा का फिर रायबा का । कोंढाणा जीतने के लिए मैं ही जाऊँगा । आप मुझे आशीर्वाद दीजिए ।''

तानाजी की योजना : तानाजी कोंढाणा जीतने के लिए निकला । कोंढाणा किले पर जयसिंह द्वारा नियुक्त उदयभान नामक राजपूत

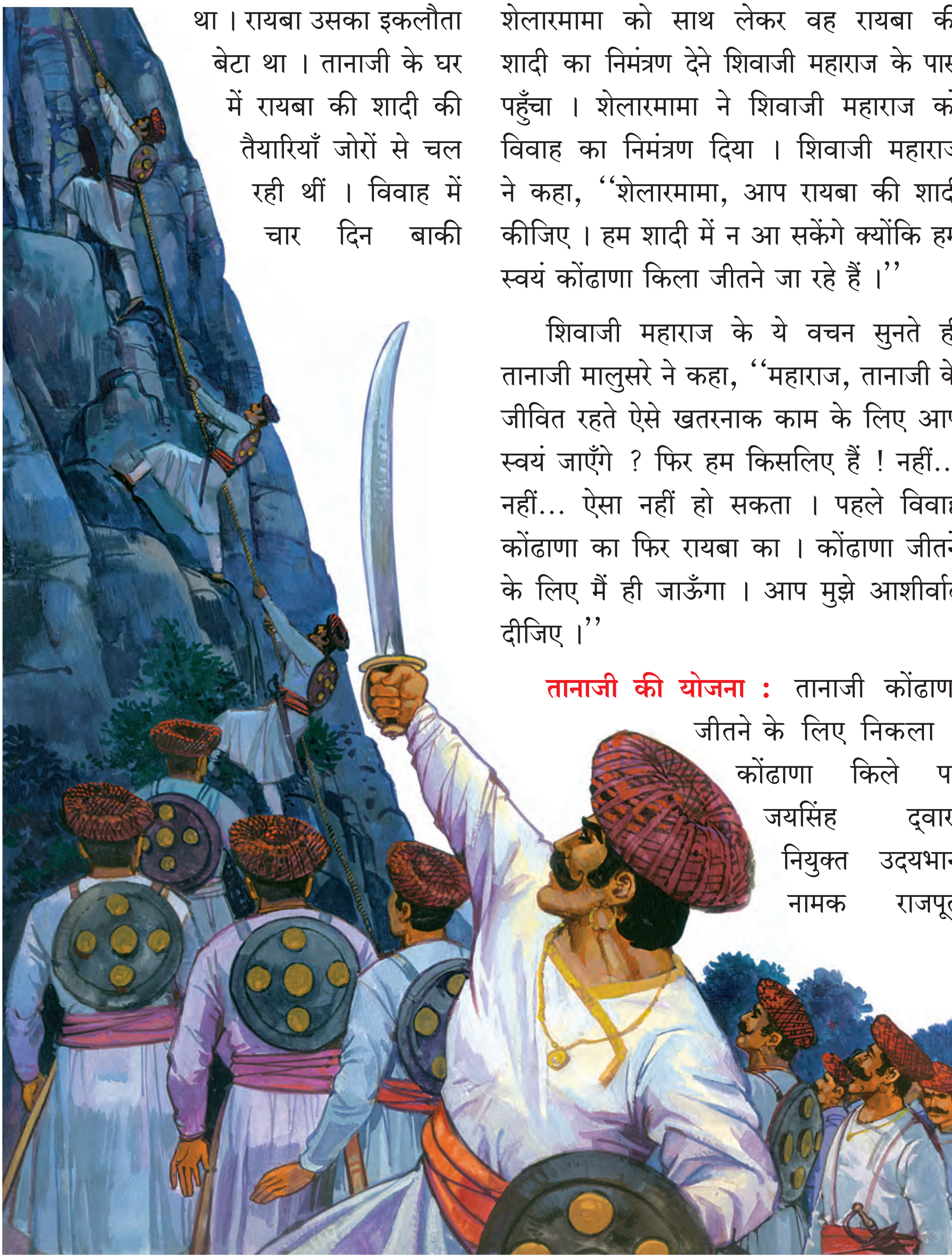

तानाजी की कोंढाणा पर चढ़ाई

किलेदार था । वह बहुत कठोर था । गढ़ के दो दरवाजे थे । दोनों जगहों पर उदयभान ने कड़ा पहरा लगा रखा था, तब गढ़ पर जाएँ कैसे ? तानाजी ने गढ़ की टोह ली । पश्चिम की ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे । उस ओर पहरा नहीं था । तानाजी ने खड़ी चट्टान पर चढ़कर ऊपर जाने का निश्चय किया । तानाजी ने अपने छोटे भाई से कहा, ''सूर्याजी, पाँच सौ साथी लेकर तुम कल्याण दरवाजे तक पहुँच जाओ । मैं तीन सौ मावले लेकर खड़ी चट्टान चढ़कर गढ़ पर जाता हूँ । गढ़ पर चढ़ते ही हम कल्याण दरवाजा खोल देंगे । फिर तुम सब एकदम अंदर घुस जाना । हम शत्रु सेना को रौंद देंगे, चलो ।'' सूर्याजी और तानाजी दोनों दो रास्तों से निकल पड़े ।

खड़ी चट्टान से गढ़ पर : रात का समय था । तानाजी और उसके मावले खड़ी चट्टान के नीचे अँधेरे में खड़े थे । रात में कीड़े कर्कश आवाज कर रहे थे । तानाजी के पाँच-छह युवा मावले खड़ी चट्टान चढ़ने के लिए आगे बढ़े । कितना ऊँचा पहाड़ लेकिन वे धीरे-धीरे पहाड़ की दरारों को पकड़कर हिम्मत से खड़ी चट्टान पार कर गए । ऊपर पहुँचते ही उन्होंने रस्सी का एक सिरा एक पेड़ से बाँध दिया । फिर क्या था ! तानाजी और उसके साथी मावले रस्सी के सहारे शीघ्रता से बंदरों की तरह खड़ी चट्टान चढ़कर गढ़ पर पहुँच गए ।

तानाजी का पराक्रम : इधर सूर्याजी अपने मावलों के साथ कल्याण दरवाजे तक पहुँच गया था और वह दरवाजा खुलने की राह देख रहा था । लड़ाई आरंभ हो गई । उदयभान को खबर लगी । नगाड़ा बजते ही उदयभान की सेना मावलों पर टूट पड़ी । घमासान युद्ध प्रारंभ हुआ । तलवारों से तलवारें टकराने लगीं । बिजली की गति से एक-दूसरे पर वार होने लगे । ढालें खनकने लगीं । मशालों का नृत्य शुरू हो गया । मावलों ने कल्याण दरवाजा खोल दिया । तानाजी शेर की तरह लड़ रहा था । उदयभान उसपर टूट पड़ा । दोनों के बीच युद्ध शुरू हुआ । दोनों ही वीर और पराक्रमी थे । कोई पीछे हट नहीं रहा था । अचानक तानाजी की ढाल टूट गई । उसने हाथ पर दुशाला लपेट लिया । दुशाला पर वार रोकते हुए वह लड़ने लगा । अंत में दोनों ही एक-दूसरे की तलवारों से घायल हुए और वीरगति को प्राप्त हुए ।

गढ़ आया पर सिंह गया : तानाजी शहीद हो गया । यह देखकर मावलों का धीरज छूट गया । वे भागने लगे । उसी समय सूर्याजी और उसके साथी मावले कल्याण दरवाजे से भीतर आ पहुँचे थे । अपने भाई को मृत देखकर सूर्याजी को बहुत दुख हुआ परंतु वह समय दुखी होने का नहीं था । वह समय लड़ने का था । सूर्याजी ने पहाड़ के ऊपर की रस्सी काट दी । उसने भागने वाले मावलों को रोका और कहा, ''अरे, तुम्हारा बाप यहाँ मरा पड़ा है और तुम कायरों की तरह भाग रहे हो ? वापस आओ । मैंने पहाड़ की रस्सी काट दी है । या तो पहाड़ से कूदकर मर जाओ या फिर शत्रु पर टूट पड़ो ।''

मावले वापस लौटे । घमासान युद्ध हुआ । मावलों ने गढ़ जीत लिया लेकिन गढ़ को जीतने में तानाजी जैसा पराक्रमी सरदार मारा गया । जिजामाता और शिवाजी महाराज को यह समाचार

मिला तो उन्हें बड़ा दुख हुआ । गढ़ अधिकार में आया परंतु सिंह के समान पराक्रमी तानाजी मारा गया । शिवाजी महाराज ने शोक प्रकट करते हुए कहा, ''गढ़ आया पर सिंह गया ।''

कोंढाणा का 'सिंहगढ़' नाम सार्थक हुआ । यह घटना ई.स. १६७० में घटी । बाद में उमरठे गाँव जाकर शिवाजी महाराज ने स्वयं रायबा की शादी करवाई ।

स्वाध्याय

१. उचित विकल्प के गोल को रँगो :

(अ) तानाजी कोंकण के इस गाँव का निवासी था ।

(१) महाड़ ○ (२) चिपलूण ○
(३) उमरठे ○ (४) रत्नागिरि ○

(आ) जयसिंह द्‌वारा नियुक्त उदयभान इस किले का किलेदार था ।

(१) पुरंदर ○ (२) कोंढाणा ○
(३) रायगढ़ ○ (४) प्रतापगढ़ ○

(इ) तानाजी के भाई नाम था ।

(१) रायबा ○ (२) सूर्याजी ○
(३) मुरारबाजी ○ (४) फिरंगोजी ○

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) कोंढाणा किला किसके अधिकार में था ?

(आ) कोंढाणा किले के बारे में जिजामाता ने शिवाजी महाराज से क्या कहा ?

(इ) ''पहले विवाह कोंढाणा का फिर रायबा का'' ऐसा किसने कहा ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) शेलारमामा ने शिवाजी महाराज को शादी का निमंत्रण दिया तब शिवाजी महाराज ने क्या कहा ?

(आ) सिंहगढ़ पर सूर्याजी ने मावलों से क्या कहा ?

उपक्रम

अपने परिसर के ऐतिहासिक भवनों/किलों की सूची बनाओ ।

6JNV5H

१५. एक अपूर्व समारोह

राज्याभिषेक क्यों किया ? : रायरेश्वर के मंदिर में शिवाजी महाराज ने स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा की थी । स्वराज्य स्थापना के कार्य में उनपर कितने ही संकट आए लेकिन उनमें से शिवाजी महाराज बड़े शौर्य और चतुराई से निकल आए । बाजीप्रभु, मुरारबाजी, तानाजी आदि वीरों ने स्वराज्य के लिए लड़ते-लड़ते अपने प्राण गँवाए । अंत में स्वराज्य का निर्माण हुआ । शत्रुओं पर धाक जम गई ।

इस स्वराज्य को सभी राजा-महाराज मान्यता दें, इसलिए शिवाजी महाराज ने राज्याभिषेक की योजना बनाई । सैकड़ों वर्षों के बाद सभी धर्मों के प्रति समभाव रखने वाले, प्रजा को न्याय और सुख देने वाले राजा ने महाराष्ट्र में जन्म लिया था । स्वराज्य का निर्माण हुआ है; इस बात का पता पूरे संसार को चले इसलिए शिवाजी महाराज ने राज्याभिषेक करवाने का निश्चय किया । उन्होंने यह कार्य अपने सुख अथवा वैभव के लिए नहीं बल्कि स्वराज्य को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए किया ।

स्वराज्य की राजधानी : शिवाजी महाराज ने राजधानी के लिए रायगढ़ को चुना । रायगढ़ सुदृढ़ किला था । रायगढ़ से स्वराज्य की देखभाल करना सरल था । शत्रु पर निगरानी रखना भी सरल था ।

शिवाजी महाराज ने चिपलूण जाकर अपनी सेना का निरीक्षण किया । प्रतापगढ़ में भवानी माता के दर्शन किए । बड़े भक्तिभाव से उन्हें सोने का छत्र अर्पित किया ।

राज्याभिषेक की तैयारी : राज्याभिषेक के लिए शिवाजी महाराज ने सोने का सिंहासन बनवाया । उसमें बहुमूल्य रत्न जड़वाए । उसपर शुभ्र छत्र लगवाया । राजा-रजवाड़े, विद्वान ब्राह्मण, दरबार के सरदार और कारीगर आदि को निमंत्रण भेजे गए । राज्याभिषेक का पौरोहित्य करने के लिए काशी से गागा भट्ट आए । गागा भट्ट का परिवार मूलतः पैठण का था परंतु वे काशी में स्थायी रूप से रहने लगे थे । वे महान पंडित थे । काशी में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी । उनकी कीर्ति सर्वत्र फैली हुई थी। शिवाजी महाराज ने राज्याभिषेक की तैयारी यथाशक्ति पूरी की । सप्तगंगा और समुद्र का जल लाने के लिए आदमी भेजे गए । रायगढ़ में लगभग पचास हजार आदमी एकत्र हुए । उनके लिए जगह-जगह तंबू, डेरे और रावड़ियों की भीड़-सी लग गई थी ।

राज्याभिषेक समारोह : राज्याभिषेक का दिन बड़ा मंगलमय था । बाजे बजने लगे । चारण गाने लगे । चारों ओर खुशियाँ छा गईं । शिवाजी महाराज स्वर्ण चौकी पर बैठे । उनपर छत्र, चामर धरे गए । घी, दही, मधु (शहद) के कलश पुरोहितों के हाथों में थे । गागाभट्ट के हाथ में स्वर्ण कलश था । उसमें गंगा, सिंधु, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा और कावेरी इन सात नदियों और समुद्र का जल भरा था । गागाभट्ट ने वह कलश शिवाजी महाराज के सिर के ऊपर धरा और वे मंत्र पढ़ने लगे । कलश के सौ छिद्रों द्वारा शिवाजी महाराज पर

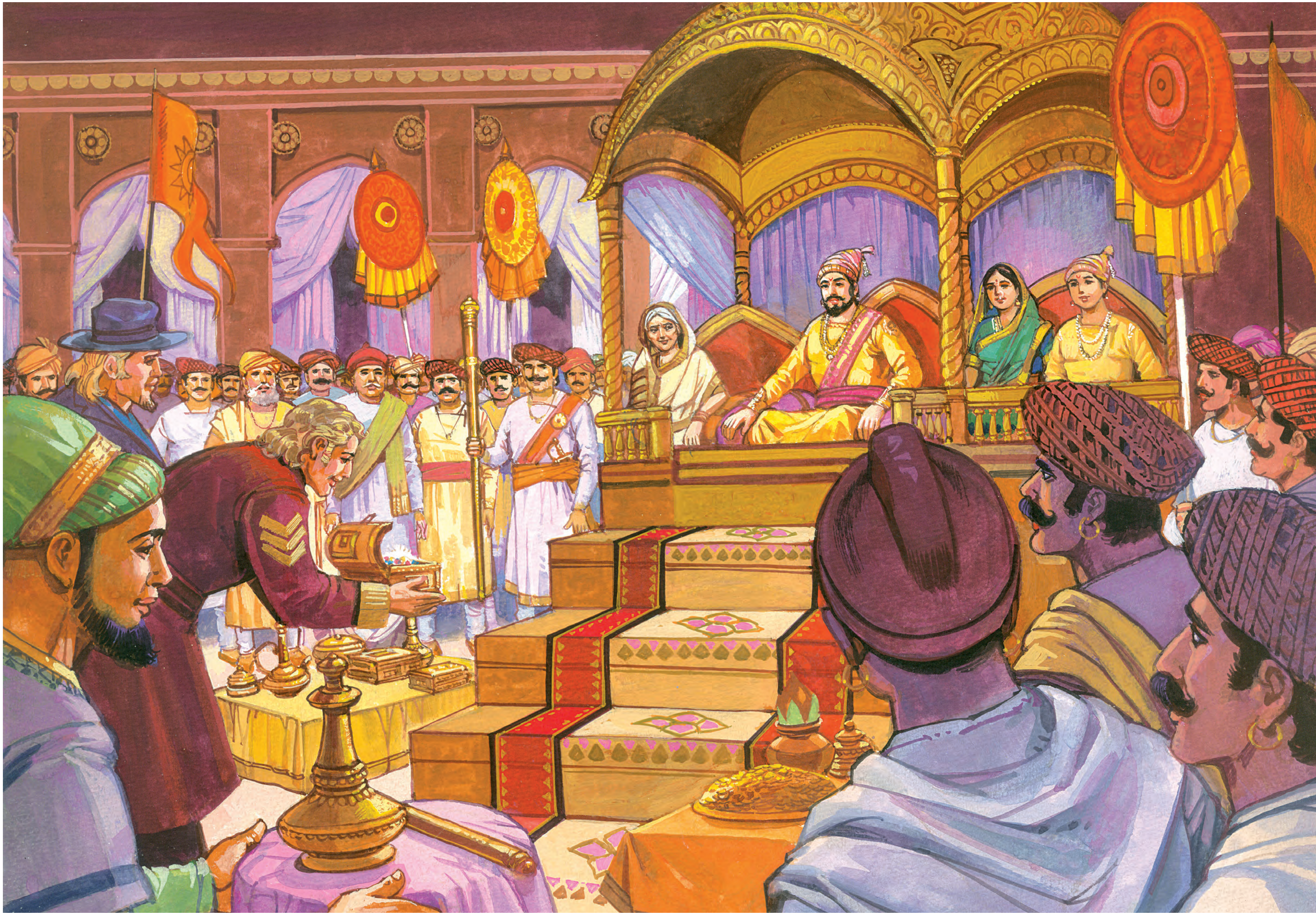

शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक समारोह

जल का अभिषेक हुआ । फिर शिवाजी महाराज उठे और उन्होंने जिजामाता के चरण स्पर्श किए । माँसाहेब ने शिवाजी महाराज को गले लगाया । उनकी आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे । तीस वर्षों तक उन्होंने जो कष्ट उठाए, वे आज सफल हुए । शिवबा के जन्म से पूर्व माँ ने जो सपना देखा; वह आज साकार हुआ था । माँ के नेत्रों से आनंदाश्रु झरने लगे । शिवाजी महाराज का भी हृदय उमड़ पड़ा । धन्य माँसाहेब ! धन्य शिवाजी महाराज !

माँसाहेब से भेंट करने के पश्चात शिवाजी महाराज सिंहासन पर बैठे । उनके पास महारानी सोयराबाई और युवराज संभाजीराजे बैठे । उनके दोनों ओर अष्ट प्रधान खड़े हुए । गागाभट्ट ने स्वर्ण मोतियों का झालरदार छत्र महाराज के सिर के ऊपर धरा और जोर से कहा, ''क्षत्रियकुलावतंस सिंहासनाधीश्वर श्री शिवछत्रपति की जय हो ।'' सबने शिवाजी महाराज की जयजयकार की । किलों पर तोपें दागी गईं । संपूर्ण महाराष्ट्र में शिवाजी महाराज की जयजयकार हुई । इस प्रकार ई.स. १६७४ में शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ । उसी वर्ष से शिवाजी महाराज ने 'राज्याभिषेक' नामक नया 'शक' चलाया । शिवाजी महाराज 'शक कर्ता' राजा बने । उन्होंने अपनी अलग मुद्राएँ ढालनी शुरू कीं । इस समारोह में विभिन्न देशों के राजदूत उपस्थित थे । अंग्रेजों ने ऑक्जिंडेन नाम का अपना राजदूत शिवाजी महाराज को नजराना देने के लिए भेजा था । इस समारोह को देखने के लिए दूर-दूर से लोग इकट्‌ठे हुए थे । शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का समाचार सारे विश्व में फैल गया । उनकी कीर्ति का चारों ओर प्रसार हुआ ।

6JKR75

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शिवाजी महाराज ने राजधानी के लिए .... को चुना ।
(सिंहगढ़, रायगढ़, पन्हालगढ़)

(आ) शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक ई.स. .... में हुआ ।
(१६७४, १६७५, १६४७)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) स्वर्ण कलश में किन नदियों का जल भरा था ?

(आ) शिवाजी महाराज ने राज्याभिषेक के बाद कौन-सा शक चलाया ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज ने राज्याभिषेक करने का निश्चय क्यों किया ?

(आ) शिवाजी महाराज ने राजधानी के लिए रायगढ़ को क्यों चुना ?

(इ) माता जिजाबाई की आँखों से खुशी के आँसू क्यों बहने लगे ?

उपक्रम

(अ) राज्याभिषेक के अवसर पर शिवाजी महाराज द्‌वारा ढाली गईं मुद्राओं के बारे में अपने शिक्षकों से अधिक जानकारी प्राप्त करो ।

(आ) विभिन्न डाक टिकटों का संग्रह करो और मित्रों की सहायता से कक्षा में उसकी प्रदर्शनी का आयोजन करो ।

१६. दक्षिण अभियान

अभियान की योजना : राज्याभिषेक का समारोह संपन्न हुआ परंतु यह खुशी अधिक दिनों तक नहीं रह सकी । राज्याभिषेक के कुछ दिनों के बाद ही १७ जून १६७४ को माँसाहेब का देहावसान हो गया । शिवाजी महाराज का सशक्त आधार चला गया । स्वराज्य में समस्त प्रजा का आधार शिवाजी महाराज थे परंतु शिवाजी महाराज का आधार माँसाहेब थीं । वे उनके जीवन की सच्चे अर्थों में मार्गदर्शक और गुरु थीं । माँसाहेब की मृत्यु से उन्हें अत्यंत दुख हुआ परंतु अधिक दिनों तक शोक मनाना उनके लिए संभव नहीं था । उन्हें स्वराज्य को व्यवस्थित रूप से चलाना था ।

शिवाजी महाराज ने कर्नाटक प्रदेश पर आक्रमण करने का निश्चय किया । उन्हें आदिलशाह से अब कोई डर नहीं था क्योंकि आदिलशाही पतन पर थी लेकिन उत्तर का मुगल सम्राट औरंगजेब मराठों के राज्य को नष्ट करने के लिए घात लगाए बैठा था । वह स्वराज्य को कब मिटाएगा, इसका कोई भरोसा नहीं था । शिवाजी महाराज ने सोचा कि मुगलों के संकट का सामना करने के लिए यह आवश्यक है कि दक्षिण में भी कोई सुदृढ़ स्थान उनके हाथ में हो । इसलिए उन्होंने दक्षिण के प्रदेशों पर कब्जा करने का विचार किया । इस अभियान के लिए शिवाजी महाराज ने गोलकुंडा के कुतुबशाह से सहायता माँगी । उसने बड़ी खुशी से शिवाजी महाराज को सहयोग देना स्वीकार किया ।

दक्षिण अभियान के पीछे शिवाजी महाराज का एक और उद्‌देश्य था । उनका सौतेला भाई व्यंकोजीराजे दक्षिण में तंजौर की जागीर सँभाले हुए थे । व्यंकोजीराजे के पास पिता जी की कर्नाटक की जागीर होते हुए भी व्यंकोजीराजे ने उसका कोई भी हिस्सा शिवाजी महाराज को नहीं दिया था । यही नहीं बल्कि स्वराज्य के प्रति उनके मन में आदरभाव भी नहीं था । वह शिवाजी महाराज के प्रति उपेक्षा का भाव रखते थे । उनसे मिलकर शिवाजी महाराज को यह मालूम करना था कि स्वराज्य के काम में वे क्या सहायता कर सकते हैं ।

गोलकुंडा में आगमन : शिवाजी महाराज कर्नाटक जाने के लिए निकले । गोलकुंडा के अबुल हसन कुतुबशाह ने उन्हें मिलने के लिए निमंत्रण दिया था । इसलिए शिवाजी महाराज ने पहले कुतुबशाह की राजधानी में उससे मिलने और फिर दक्षिण विजय के लिए आगे बढ़ने की योजना बनाई ।

गोलकुंडा कुतुबशाह की राजधानी थी । कुतुबशाह ने शिवाजी महाराज के स्वागत की बहुत बड़ी तैयारी की । भेंट के लिए विशेष शामियाना तैयार किया गया था । शिवाजी महाराज राजधानी में दाखिल हुए । लोग उनके दर्शन करने रास्ते के दोनों ओर खड़े थे । उनके पराक्रम की खबरें देश में चारों ओर फैल गई थीं । अफजल खान का वध, शाइस्ता खान की दुर्दशा और आगरे से निकल जाना आदि रोमांचकारी प्रसंग के समाचार देशभर में फैल चुके थे । इस कारण महाराज का वहाँ

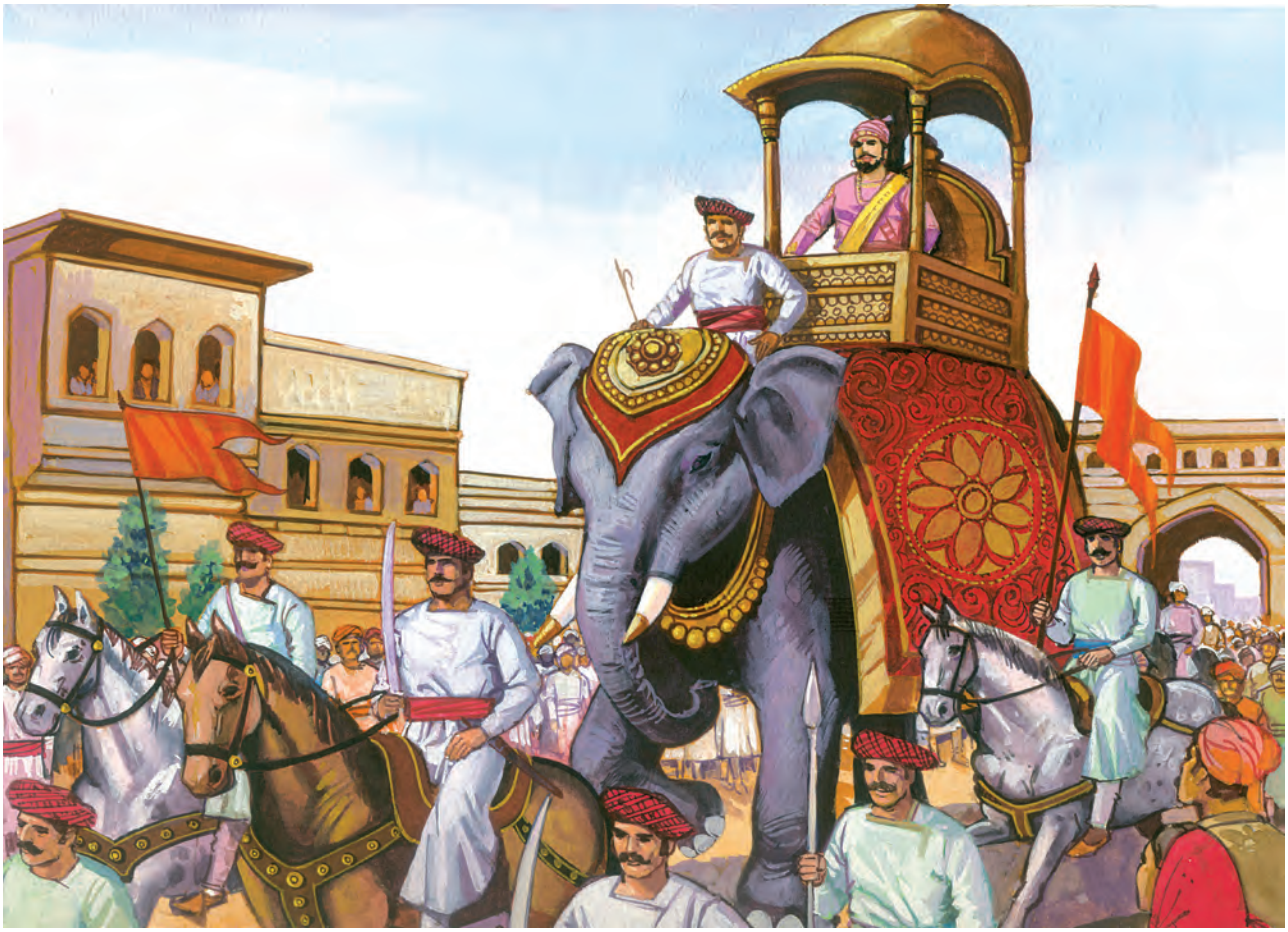

शिवाजी महाराज की गोलकुंडा की ऐतिहासिक भेंट

भव्य स्वागत हुआ । घर-घर से लोग शिवाजी महाराज पर फूलों की वर्षा कर रहे थे । जनता का स्वागत स्वीकार करने के पश्चात शिवाजी महाराज कुतुबशाह के दरबार में आए । कुतुबशाह उनके स्वागत के लिए आगे बढ़े और विशेष रूप से सजाए गए अपने समकक्ष सिंहासन पर उसने महाराज को बिठाया । महाराज के स्वागत में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी थी । स्वागत-सत्कार होने के पश्चात शिवाजी महाराज कर्नाटक अभियान के लिए चल पड़े ।

जिंजी विजय : शिवाजी महाराज पूर्वी तट पर आ गए । चेन्नई के दक्षिण में जिंजी का किला है । यह रायगढ़ की तरह विशाल और सुदृढ़ है । उसपर घेरा डालकर महाराज ने उसे जीत लिया । दक्षिण में स्वराज्य का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र तैयार हो गया । फिर शिवाजी महाराज ने वेल्लोर के किले पर घेरा डाला । कई महीनों तक घेरा डालने पर भी किला कब्जे में नहीं आ रहा था । तब वेल्लोर की पहाड़ी से शिवाजी महाराज ने किले पर तोपों की वर्षा की और किला जीत लिया । उन्होंने कर्नाटक में बीस लाख की आयवाला प्रदेश और छोटे-बड़े ऐसे अनगिनत किले जीत लिए ।

व्यंकोजीराजे से भेंट : महाराज ने अपने सौतेले भाई व्यंकोजीराजे को मिलने के लिए बुलाया । वे अनिच्छा से आए । महाराज ने उनका उचित सम्मान किया । उन्होंने व्यंकोजीराजे को समझाने का प्रयत्न किया और उनसे स्वराज्य के

शिवाजी महाराज–व्यंकोजीराजे की भेंट

कार्य में सहयोग देने के लिए आग्रह किया । कुछ दिनों तक व्यंकोजीराजे शिवाजी महाराज के साथ रहे लेकिन एक रात महाराज से बिना कुछ कहे वह तंजौर चले गए और फिर उन्होंने शिवाजी महाराज की सेना पर आक्रमण कर दिया । शिवाजी महाराज की सेना ने उन्हें धूल चटाई । व्यंकोजीराजे हार गए । अपने भाई के व्यवहार से शिवाजी महाराज को बहुत दुख हुआ । उन्होंने व्यंकोजीराजे को समझाने के लिए कई पत्र लिखे । जिंजी के दक्षिण का कुछ प्रदेश उन्हें दिया । उनकी पत्नी दीपाबाई को भी शिवाजी महाराज ने उपहारस्वरूप कर्नाटक का कुछ प्रदेश दिया । महाराज ने व्यंकोजीराजे को पत्र में लिखा, 'शत्रुओं पर भरोसा न करें । स्वयं पराक्रम दिखाएँ ।'

कर्नाटक पर विजय प्राप्त कर महाराज रायगढ़ लौटे । इस अभियान की थकान का वे अनुभव कर ही रहे थे कि उन्हें जंजीरा के सिद्दी के विरुद्ध नौसेना अभियान चलाना पड़ा । इस समय महाराज की आयु पचास वर्ष की थी । तीस–पैंतीस वर्ष तक उन्होंने लगातार परिश्रम किए थे । उन्हें कभी भी विश्राम नहीं मिला था ।

प्रजा का रक्षक चला गया : ३ अप्रैल १६८० के दिन सभी को दुख के सागर में छोड़कर शिवाजी महाराज ने सदा के लिए इस संसार से विदा ली । प्रजा का रक्षक चला गया । अपने जीवन में शिवाजी महाराज ने अनगिनत महान कार्य किए । उन्होंने शक्तिशाली शत्रुओं को पराजित करके 'हिंदवी स्वराज्य' स्थापित किया । संपूर्ण भारत में महाराज के कार्य का कोई सानी नहीं था । शिवाजी महाराज महान राष्ट्रपुरुष थे ।

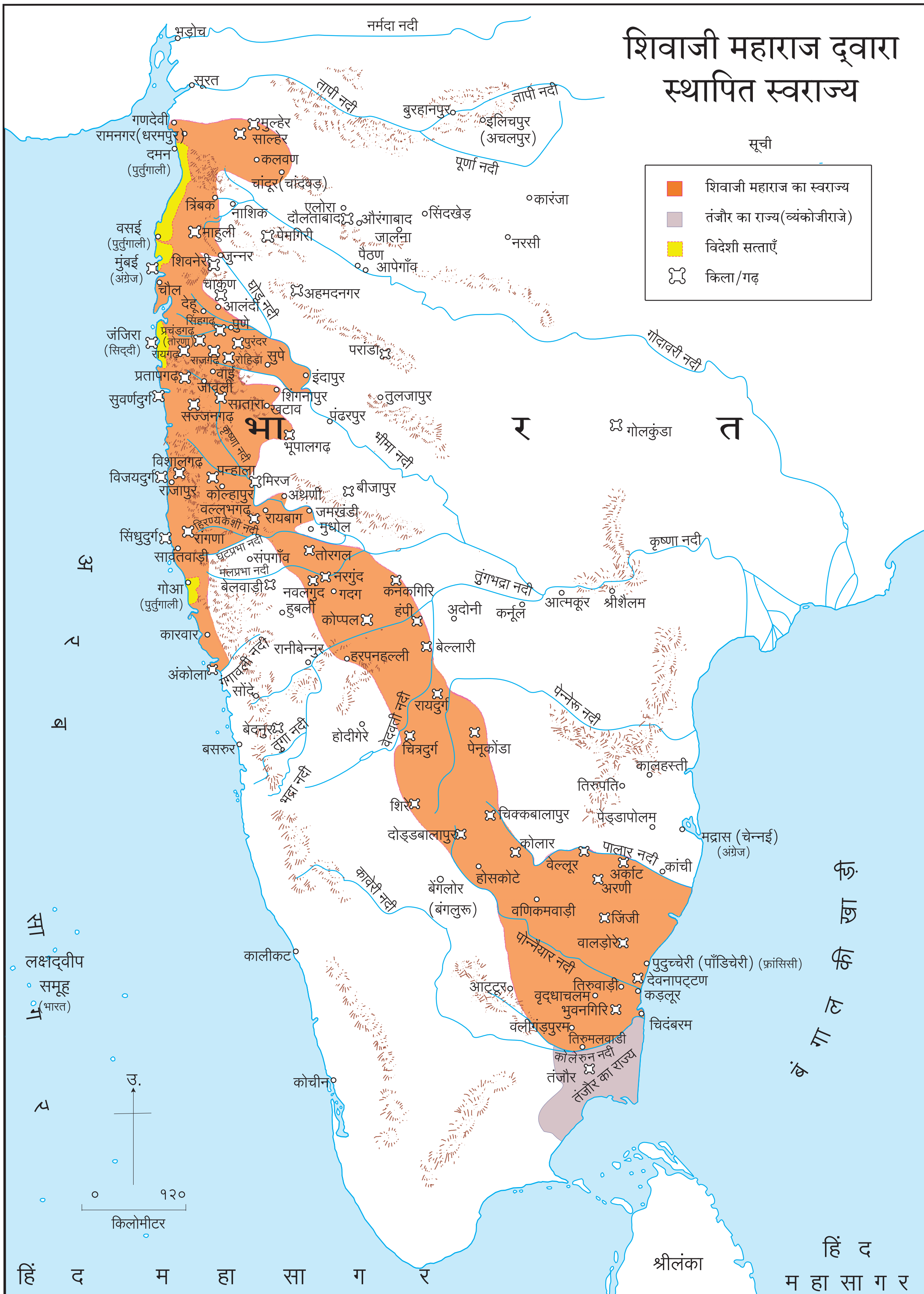

The following foot notes are applicable : (1) © Government of India, Copyright : 2014. (2) The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher. (3) The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line. (4) The administrative headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh. (5) The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified. (6) The external boundaries and coastlines of India agree with the Record/Master Copy certified by Survey of India. (7) The state boundaries between Uttarakhand & Uttar Pradesh, Bihar & Jharkhand and Chattisgarh & Madhya Pradesh have not been verified by the Governments concerned. (8) The spellings of names in this map, have been taken from various sources.

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) व्यंकोजीराजे दक्षिण में ······· की जागीर संभाले हुए थे ।
(वेल्लोर, तंजौर, बेंगलोर)

(आ) ······· कुतुबशाह की राजधानी थी ।
(दिल्ली, जिंजी, गोलकुंडा)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज का व्यंकोजीराजे से मिलने का उद्‌देश्य क्या था ?

(आ) शिवाजी महाराज ने व्यंकोजीराजे से क्या आग्रह किया ?

(इ) शिवाजी महाराज ने व्यंकोजीराजे को पत्र में क्या लिखा ?

३. कारण लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज ने दक्षिण के प्रदेश जीतने का विचार किया ।

(आ) शिवाजी महाराज ने व्यंकोजीराजे को समझाने के लिए पत्र भेजे ।

उपक्रम

शिवाजी महाराज और व्यंकोजीराजे की भेंट और उनके बीच हुए संवाद का नाट्यीकरण करो ।

6K7H85

शिवाजी महाराज की समाधि – रायगढ़

१७. गढ़ों और नौसेना का प्रबंधन

शिवाजी महाराज ने अनेक शत्रुओं पर विजय पाकर स्वराज्य की स्थापना की। युद्ध हो अथवा राज्य प्रशासन; शिवाजी महाराज का प्रबंधन कौशल सभी क्षेत्रों में दिखाई देता है । इस पाठ में हम शिवाजी महाराज के प्रबंधन कौशल की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

क्या तुम जानते हो ?

● प्रबंधन कौशल किसे कहते हैं ?

निश्चित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए स्वीकारे हुए कार्य को अनुशासनबद्ध पद्धति से करना प्रबंधन कौशल कहलाता है ।

शिवाजी महाराज का प्रबंधन कौशल जिस प्रकार उनके द्वारा आजीवन किए गए युद्धों में सदैव दिखाई देता है; उसी तरह वह उनके संपूर्ण राज्य प्रशासन में भी दिखता है । इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

गढ़ों का निर्माण

शिवाजी महाराज ने गढ़ों और किलों की सहायता से स्वराज्य की रक्षा की । शिवकालीन ग्रंथ 'आज्ञापत्र' में दुर्गों अर्थात गढ़ों का महत्व 'संपूर्ण राज्य का सार अर्थात दुर्ग' इन सटीक शब्दों में बताया गया है । शिवाजी महाराज अपनी युवावस्था में सह्याद्रि पर्वतश्रेणियों में घूम चुके थे। सह्याद्रि पर्वत की गोद में बने गढ़-दुर्गों को उन्होंने कई बार निहारा था । स्वराज्य के संरक्षण में गढ़ों का महत्व उनके ध्यान में आया था ।

शिवाजी महाराज ने वनदुर्ग, गिरिदुर्ग और जलदुर्ग जैसे विभिन्न प्रकार के गढ़ों का निर्माण करवाया । जलदुर्गों को 'जंजिरा' भी कहते हैं । उन्होंने हिरोजी इंदुलकर और अर्जोजी यादव जैसे विशेषज्ञों द्वारा राजगढ़, प्रतापगढ़, सिंधुदुर्ग आदि नए गढ़ों का निर्माण करवाया । इसी तरह रायगढ़ का नए-से निर्माण करवाया । यही नहीं; विजयदुर्ग, तोरणा, रांगणा आदि कुछ पुराने गढ़ों की मरम्मत करवाई । शिवाजी महाराज के पास लगभग तीन सौ गढ़/किले थे ।

क्या तुम जानते हो

● माना जाता है कि शिवाजी महाराज के छोटे बेटे छत्रपति राजाराम महाराज की आज्ञा से रामचंद्रपंत अमात्य ने 'आज्ञापत्र' ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में शिवाजी महाराज की राजनीति का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई देता है ।

करके देखो

● दीवाली की छुट्‌टी में मित्रों की सहायता से किसी किले की प्रतिकृति तैयार करो ।

– किला बनाने के लिए आवश्यक सामग्री की सूची बनाओ ।

– किले के लिए स्थान निश्चित करो ।

– किले पर पेयजल, आवासों की व्यवस्था किस प्रकार होनी चाहिए इसका ढाँचा बनाओ ।

बताओ तो

- तुम्हारे परिसर में पाए जानेवाले किलों/गढ़ों/गुफाओं के नाम बताओ ।
- किले/गढ़ पर कौन-कौन-सी वस्तुएँ/वास्तु हैं ?
- किले का प्रकार बताओ ।

गढ़ का निर्माण कार्य

गढ़ों का प्रबंधन

शिवाजी महाराज ने गढ़ों की सुनिश्चित संरक्षण व्यवस्था की थी ।

प्रत्येक गढ़ पर किलेदार, सबनीस और कारखानीस जैसे अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी । सबनीस और कारखानीस किलेदार के अधीन रहकर कार्य करते थे।

इन अधिकारियों के कार्य इस प्रकार बताए जा सकते हैं ।

किलेदार (हवलदार)

- किलों/गढ़ों की रक्षा करना एवं प्रशासन देखना ।
- सबनीस, कारखानीस को आदेश देना ।
- सरकारी पत्रों, हुक्मों और आदेशों का पालन करना ।

सबनीस

- गढ़ के आय-व्यय का हिसाब रखना ।
- गढ़ पर और गढ़ के नीचे रहनेवाली प्रजा से कर वसूल करना ।
- पत्र व्यवहार करना ।

कारखानीस

- गढ़ पर रहनेवाले लोगों को अनाज और अन्य वस्तुओं की आपूर्ति करना ।
- युद्ध के समय तोपों और बंदूकों में लगनेवाली बारूद की व्यवस्था करना ।
- गढ़ और उसपर बनी इमारतों का रख-रखाव और मरम्मत करना ।

तोपें और बारूद

शिवाजी महाराज के समय शत्रुओं से गढ़ों/किलों का संरक्षण करने के लिए छोटी-बड़ी तोपों का उपयोग किया जाता था । ये तोपें किलों के परकोटों और बुर्जों पर रखी जाती थीं । पुरंदर, भीमगढ़ जैसे कुछ गढ़ों पर तोप निर्माण करने के कारखाने भी थे । लोहा, पीतल, तांबा आदि धातुओं से तोपें बनाई जाती थीं । बरसात के दिनों में गढ़ों पर रखीं तोपों में जंग न लगे; इसलिए उनपर मोम का लेप लगाया जाता था । शत्रुओं पर चोट अथवा आघात करने के लिए तोपों में लोहे, पत्थर और कुलुफ के गोलों (जिसमें सीसे के छर्रे होते हैं) का उपयोग करते थे । इन तोपों को चलाने के लिए स्फोटक बारूद का उपयोग किया जाता था ।

विचार विमर्श करो

- गढ़ पर लगीं तोपों में जंग न लगे; इसलिए उनपर मोम का लेप लगाया जाता था ।

बताओ तो

- शिवाजी महाराज की नौसेना के युद्धपोतों के प्रकार बताओ । जैसे - गुराब (काक) गलबत, पाल, मचवा, नाव, जलपोत ।
- स्वतंत्र भारत की नौसेना के युद्धपोतों के नाम बताओ ।

नौसेना

युद्धपोतों के दल को नौसेना कहते हैं । अंग्रेज, पुर्तगाली, सिद्दी, डचों के पास प्रबल नौसेना थी । इनमें से कुछ लोग समुद्री तट के गाँवों में जाकर लूटपाट करते थे । वहाँ के लोगों को कष्ट पहुँचाते

शिवाजी महाराज-नौसेना का निरीक्षण करते हुए

थे। इन समुद्री शत्रुओं का स्थायी रूप में निर्मूलन करने हेतु शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र नौसेना का निर्माण करवाया ।

शिवाजी महाराज ने छोटे-बड़े जलपोत और नौकाएँ बनाने के कारखाने खोले । सागर में बने पुराने जलदुर्ग जीतकर वे अपने नियंत्रण में कर लिये । सुवर्णदुर्ग और विजयदुर्ग जैसे जलदुर्गों की मरम्मत करवाई । शिवाजी महाराज ने मालवण के समीप कुरटे द्वीप पर सिंधुदुर्ग नामक नए जलदुर्ग का निर्माण करवाया । इसी तरह मुंबई के निकट खांदेरी गढ़ का निर्माण करवाया ।

स्वराज्य की नौसेना में कोली, भंडारी, आगरी जैसे विभिन्न सागरीय जाति-धर्मों के सैनिक थे । इसी कालखंड में दौलत खान, मायनाक भंडारी, लाय पाटील, दर्यासारंग, तुकोजी आंग्रे जैसे अनुभवी नौसेना योद्धाओं ने ख्याति पाई ।

मराठों की नौसेना के कारण अंग्रेज, पुर्तगाली, सिद्दी और डच जैसे समुद्री शत्रु उनसे भयभीत रहने लगे । परिणामस्वरूप शत्रुओं से स्वराज्य को पहुँचनेवाली त्रस्तता में कमी आई । शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र नौसेना का निर्माण कर उसके बल पर अपनी सागरीय सीमा निश्चित कर दी और तटीय क्षेत्र पर अपना स्वामित्व प्रस्थापित किया । साथ ही अपने सागरीय तट को सुरक्षित कर लिया । मध्ययुगीन कालखंड के भारत में शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित यह पहली स्वयं की नौसेना थी । अतः छत्रपति शिवाजी महाराज का 'भारतीय नौसेना का जनक' के रूप में सही अर्थ में गौरव बढ़ाया जाता है।

शिवाजी महाराज का गुप्तचर विभाग : शिवाजी महाराज की सैनिकी व्यवस्था में गुप्तचर विभाग था । उनके गुप्तचर विभाग का प्रमुख बहिर्जी नाईक था । बहिर्जी नाईक द्वारा लाई गई अचूक जानकारी उपयोगी सिद्ध होने से शिवाजी महाराज द्वारा चलाए गए सूरत अभियान जैसे अनेक अभियान सफल हुए । शिवाजी महाराज के गुप्तचर गोपनीय ढंग से शत्रु के दल में प्रवेश कर शत्रुपक्ष की छोटी-सी-छोटी हरकत की जानकारी प्राप्त कर लेते थे । कोई भी आक्रमण करने से पूर्व शिवाजी महाराज गुप्तचरों से पूरी जानकारी प्राप्त करते और उसके पश्चात ही आक्रमण की योजना बनाते ।

छापामार युद्धप्रणाली : शिवाजी महाराज की युद्धनीति में छापामार युद्ध प्रणाली को विशेष महत्त्व था । छापामार युद्ध प्रणाली में अपनी सुविधा और अनुकूल समय में शत्रु पर अचानक आक्रमण करना और इसके पहले कि शत्रु इस आक्रमण से संवरे-संभले; तब तक सेना का सुरक्षित स्थान पर पहुँचना जैसी नीतियों का समावेश था । इस प्रणाली का अनुसरण करते समय शिवाजी महाराज को सह्याद्रि पर्वतश्रेणियों के घने जंगलों, पर्वतीय किलों और सामान्य लोगों के समर्थन का सहयोग प्राप्त हुआ ।

क्या तुम जानते हो ?

● शिवाजी महाराज की सेना अनुशासनबद्ध थी । उनके सैनिक स्त्रियों का सम्मान करते थे । अतः स्त्रियों के रक्षक के रूप में शिवाजी महाराज की कीर्ति दूर तक फैली हुई थी । सैनिक शराब न पीएँ, प्रजा को पीड़ा न पहुँचाएँ, जनता को न लूटें; इस प्रकार की कड़ी चेतावनी उन्होंने सैनिकों को दे रखी थी ।

क्या तुम जानते हो ?

● शिवाजी महाराज के कुछ सहयोगी- कान्होजी जेधे, वीर बाजी पासलकर, फिरंगोजी नरसाला, प्रतापराव गुजर, सिधोजी निंबालकर और सिद्दी हिलाल ।

स्वाध्याय

१. **बताओ तो !**

(अ) दुर्गों का महत्त्व बतानेवाला ग्रंथ ....

(आ) जलदुर्गों को .... भी कहते हैं ।

२. **तुम्हें क्या लगता है बताओ ।**

(अ) छत्रपति शिवाजी महाराज का 'भारतीय नौसेना का जनक' के रूप में सही अर्थ में गौरव बढ़ाया जाता है।

(आ) शिवाजी महाराज का प्रबंधन कौशल किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देता है ?

३. **गढ़ों पर निम्न अधिकारियों के दो कार्य लिखो :**

(अ) किलेदार – १. .... २. ....

(आ) सबनीस – १. .... २. ....

(इ) कारखानीस – १. .... २. ....

४. **महाराष्ट्र के मानचित्र प्रारूप में निम्न स्थान दिखाओ ।**

(अ) सिंधुदुर्ग किला (आ) विजयदुर्ग

(इ) मुंबई (ई) प्रतापगढ़

५. **छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रबंधन कौशल की कौन-सी बात तुम्हें सब से अच्छी लगी ? उस बात का तुम अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार उपयोग करोगे ?**

उपक्रम :

(अ) 'शिवाजी महाराज से साक्षात्कार का आयोजन' यह साक्षात्कार नाटिका कक्षा में प्रस्तुत करो ।

(आ) भारतीय नौसेना के युद्धपोतों के विषय में जानकारी प्राप्त करो ।

(इ) विभिन्न गढ़ों की सैर करो और गढ़ों के विविध अंगों के नामों की जानकारी प्राप्त करो ।

6KGIAF

१८. लोककल्याणकारी स्वराज्य का प्रबंधन

बताओ तो

- शिवाजी महाराज ने किन-किन सत्ताओं के साथ संघर्ष किया ?

शिवाजी महाराज ने आदिलशाही, मुगल, पुर्तगाली और जंजिरेकर सिद्दी जैसे अन्यायकारी सत्ताओं के साथ दीर्घकाल युद्ध किए । परिणामस्वरूप स्वतंत्र हिंदवी स्वराज का निर्माण हुआ ।

राज्यप्रशासन का कार्य सुचारु रूप से चल सके; इसके लिए शिवाजी महाराज ने राज्यप्रशासन को आठ विभागों में बाँट दिया था । इसी को शिवाजी महाराज का अष्टप्रधान मंडल कहते हैं । प्रत्येक विभाग के लिए एक प्रमुख को नियुक्त किया गया । इस प्रकार शिवाजी महाराज का अष्टप्रधान मंडल बना । अष्टप्रधान मंडल के माध्यम से चलाया गया शिवाजी महाराज का स्वराज्य यह सच्चे अर्थ में लोककल्याणकारी राज्य था। इन अष्टप्रधानों की तथा अन्य महत्त्वपूर्ण अधिकारियों की नियुक्तियाँ शिवाजी महाराज स्वयं उनकी योग्यता एवं गुणवत्ता परखकर करते थे । उनके प्रशासनकार्य पर शिवाजी महाराज का सूक्ष्म ध्यान रहता था । शिवाजी महाराज द्वारा निर्मित स्वराज्य में उनकी प्रजा सुख-शांति से रहने लगी । परिणामस्वरूप महाराष्ट्र की जनता में प्रखर आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और देशप्रेम दिखाई देने लगा ।

क्या तुम जानते हो ?

लोककल्याणकारी राज्य में प्रजा की भोजन, वस्त्र और आवास जैसी आवश्यकताएँ पूर्ण की जाती हैं । स्त्रियों का सम्मान किया जाता है । सामान्य जनता और किसानों के साथ धोखाधड़ी नहीं की जाती । प्रजा को तुरंत न्याय मिलता है । कृषि और उद्योगों का विकास होता है । लोककलाएँ विकसित होने लगती हैं । आम आदमी सुख-शांति से रहता है ।

अष्टप्रधान मंडल

	प्रधान का नाम	पद	कार्य
१.	मोरो त्रिंबक पिंगले	प्रधान	राज्य का शासन चलाना ।
२.	रामचंद्र नीलकंठ मुजुमदार	अमात्य	राज्य का आय-व्यय देखना ।
३.	हंबीरराव मोहिते	सेनापति	सेना का नेतृत्व करना ।
४.	मोरेश्वर पंडितराव	पंडितराव	धार्मिक कार्य देखना ।
५.	निराजी रावजी	न्यायाधीश	न्याय करना ।
६.	अण्णाजी दत्तो	सचिव	सरकारी आज्ञापत्र भेजना ।
७.	दत्ताजी त्रिंबक वाकनीस	मंत्री	पत्रव्यवहार करना ।
८.	रामचंद्र त्रिंबक डबीर	सुमंत	अन्य राज्यों से संपर्क बनाए रखना।

शिवाजी महाराज – किसानों को बैलों की जोड़ियाँ और अन्य जीवनावश्यक सामग्री देते हुए ।

करके देखो

● पाठ्यपुस्तक में अंकित 'आज्ञापत्र में पर्यावरण रक्षण' इस अंश को बड़े अक्षरों में लिखकर उसकी तालिका बनाओ तथा कक्षा में उसका सामूहिक वाचन करो ।

पर्यावरण का संरक्षण

प्रकृति ने अलग-अलग प्रदेशों पर भूमि, हवा, वर्षा, नदियाँ, समुद्र, नाले, वन, छोटे-बड़े प्राणी, पक्षी, सूर्यप्रकाश, चंद्रमा का प्रकाश का निर्माण किया । इन सभी घटकों द्वारा मानव के चारों ओर जो परिसर निर्माण होता है इसी को 'प्राकृतिक पर्यावरण' कहते हैं । इस पर्यावरण का आवश्यक मात्रा में उपयोग कर लेना मानव के हित में होता है ।

पर्यावरण में पाए जानेवाले इन विभिन्न घटकों का विनाश नहीं होगा इसकी सावधानी शिवाजी महाराज ने ली थी यह दिखाई देता है ।

लोगों द्वारा राज्य के वनों का विनाश नहीं होगा, इस ओर शिवाजी महाराज ने अधिक ध्यान दिया । जैसे-नौसेना के लिए छोटी-बड़ी नावें, जलपोत, पतवार, डंडे बनाने पड़ते हैं । इसके लिए लकड़ी की आवश्यकता होती है । परिणामस्वरूप केवल सागौन के ही वृक्ष काटें । अधिक सागौन की आवश्यकता हो तो दूसरे राज्यों से वह खरीदें परंतु किसी भी स्थिति में आम, कटहल आदि पेड़ काटे न जाएँ क्योंकि ये पेड़ वर्ष-दो वर्ष में बढ़ते नहीं हैं। प्रजा इन पेड़ों का लालन-पालन अपनी संतान की तरह करती है । अतः इन पेड़ों को काटकर प्रजा को दुख न पहुँचाएँ । यदि कोई पेड़ बहुत ही पुराना-ठूँठ हो गया हो तो उस पेड़ के स्वामी को नकद पैसा देकर संतुष्ट करें तथा उसके

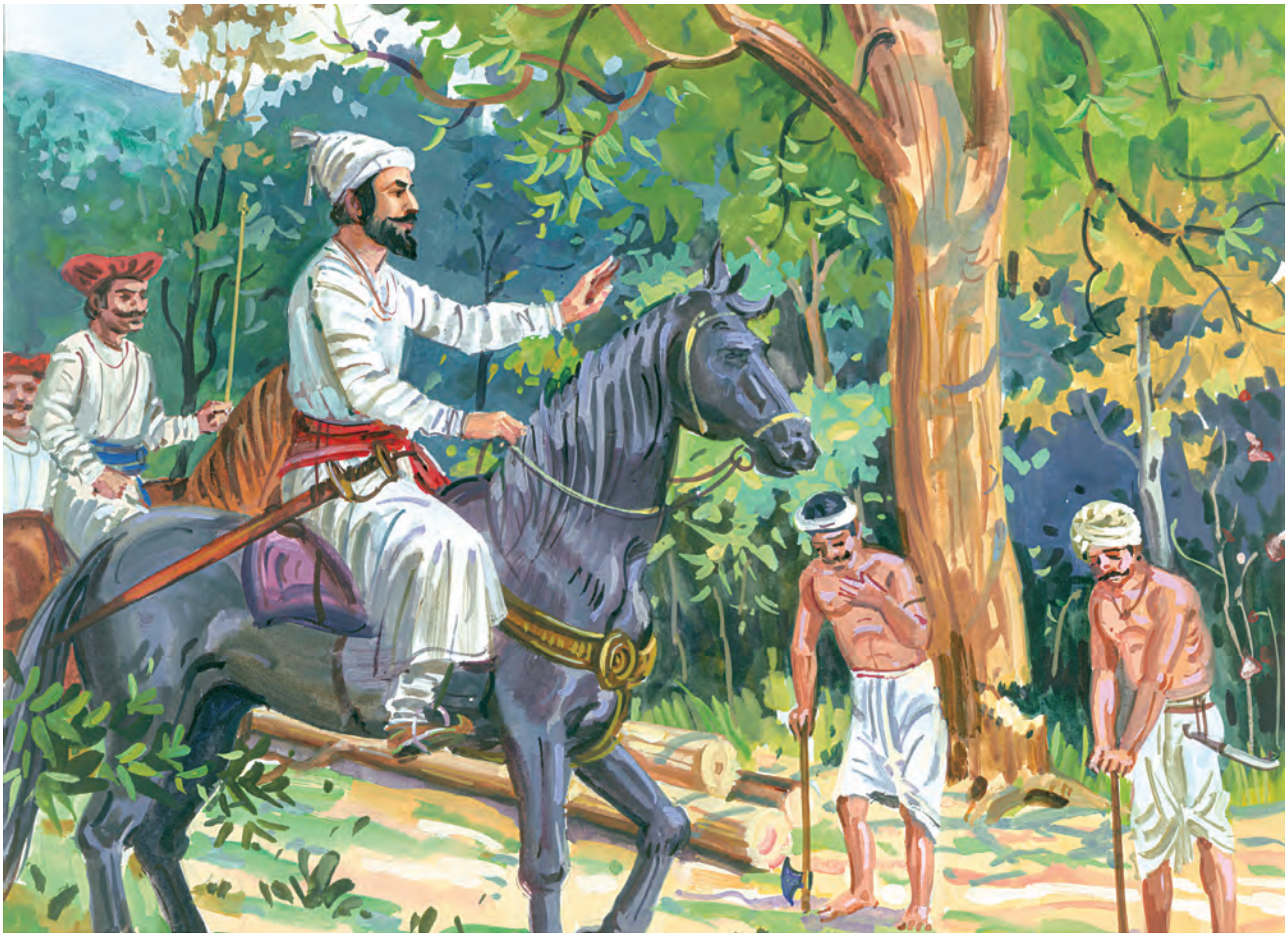

पर्यावरण का संरक्षण

बाद ही वह पेड़ काटें इस प्रकार के आदेश शिवाजी महाराज ने दिए थे, आज्ञापत्र से यह ध्यान में आता है ।

यह सदैव ध्यान में रखो

पर्यावरण रक्षण का महत्त्व समझाने और पर्यावरण के विनाश को रोकने के लिए ५ जून का दिन प्रतिवर्ष 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया जाता है ।

जल प्रबंधन

शिवाजी महाराज ने स्वराज्य के गाँव-गाँव में छोटे-बड़े बाँध बँधवाकर लोगों के लिए पेयजल उपलब्ध कराया । इसी तरह इन बाँधों में नहरें बनवाकर खेती के लिए भी पानी उपलब्ध कराया । इससे स्वराज्य की आय में वृद्धि हुई । स्वराज्य की प्रजा को अकाल की भीषणता का कभी भी अनुभव नहीं हुआ । शिवाजी महाराज के कार्यकाल में लोग अधिक संख्या में गढ़ों पर बस्ती बनाकर रहते थे । वहाँ पानी की व्यवस्था करने के विषय में शिवाजी महाराज सावधानी बरतते थे । गढ़ का निर्माण करवाने से पूर्व यह देखा जाता था कि क्या उस स्थान पर पर्याप्त पानी है ? यदि किसी स्थान पर पानी न हो तो वहाँ वर्षाकाल प्रारंभ होने से पूर्व ही तालाब और टंकियाँ बाँधकर उनमें वर्षा का जल इकट्ठा किया जाता था ।

यह संग्रहित जल किफायत से उपयोग में लाया जाता था । इस प्रकार के जल प्रबंधन के कारण गढ़ पर रहनेवाले लोगों को और स्वराज्य की प्रजा को अकाल में भी पानी का अभाव अनुभव नहीं होता था ।

शिवाजी महाराज ने नहरें बँधवाकर खेती और पेयजल का प्रबंध करवाया ।

बताओ तो

- पानी का उपयोग किफायत से क्यों करना चाहिए ?
- तुम्हारे गाँव / परिसर में कौन-सा बाँध, तालाब है ?
- जल प्रबंधन किसे कहते हैं ?
- जल प्रबंधन को लेकर सरकार की कौन-सी योजनाएँ हैं ?

क्या तुम जानते हो ?

- प्रदेश को अकाल से स्थायी रूप में मुक्त करने के लिए सरकार ने 'जलयुक्त खेती' योजना प्रारंभ की है ।

अकाल निवारण

अकाल में शिवाजी महाराज किसानों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करते थे । प्रजा को लगान माफ कर देते थे । इससे स्वराज्य में अकाल की भीषणता कम हो जाती । किसी वर्ष स्वराज्य में अकाल पड़ता तो शिवाजी महाराज सरकारी गोदामों में जमा किया हुआ अनाज प्रजा में निःशुल्क बाँट देते । इसी तरह अकाल के वर्ष में शिवाजी महाराज गढ़ों/किलों की मरम्मत के कार्य प्रारंभ करते । साथ-साथ बाँधों, नहरों, छोटे बाँधों के भी कार्य आरंभ करते । इन कामों से किसानों के साथ-साथ कारीगरों-परजा-पवन को रोजगार मिलने से स्वराज्य में प्रजा को अकाल की भयानकता का अनुभव कभी भी नहीं हुआ ।

किसान संपन्न हुआ । कल तक जिसके पाँव में जूते नहीं थे उसने जूते खरीदे । शरीर पर कपडे नहीं थे उसने कपड़े खरीदें । इससे बुनकरों को रोजगार प्राप्त हुआ । जिनके पास रहने के लिए मकान नहीं थे, वे मकान बनवाने की स्थिति में आ गए । फलतः मकान बनवाने वाले राजगीरों, बढ़इयों, लुहारों और ईंटें बनानेवाले कुम्हारों को

काम मिला । इस तरह स्वराज्य में किसानों के साथ-साथ कारीगर-श्रमिक भी सुखी और संपन्न बने ।

बताओ तो

- तुम्हारे गाँव/परिसर की बाजार-हाट का नाम बताओ ।
- बाजार-हाट को वह नाम क्यों मिला होगा; इसकी जानकारी बताओ ।

सागरीय व्यापार और अन्य व्यापार मंडियाँ

स्वराज्य की रक्षा भली-भाँति हो सके; इसके लिए स्वराज्य से लगे सागर पर अपना आधिपत्य होना चाहिए; इस उद्‌देश्य से शिवाजी महाराज ने अपनी स्वतंत्र नौसेना का निर्माण करवाया । इतना ही करके वे रुके नहीं बल्कि स्वराज्य में व्यापार बढ़े इसलिए माल की ढुलाई करनेवाले विशेष प्रकार के जहाजों का निर्माण करवाया । राजापुर जैसे व्यापारिक बंदरगाहों का विकास करवाया । इसी तरह रायगढ़ पर विशेष बाजार-हाट बसाई । पुणे के समीप खेड़ शिवापुर के रूप में स्वतंत्र व्यापारिक मंडी प्रारंभ की । बड़े गाँवों में तथा सड़क किनारे गाँवों में व्यापारिक हाटों का निर्माण करवाया । वीरमाता जिजाबाई के आदेश पर पुणे के समीप पाषाण गाँव में एक नई हाट बनवाई गई थी । उसका उल्लेख 'जिजापुर' के रूप में किया जाता था ।

स्वराज्य के व्यापार में वृद्‌धि हो इसलिए शिवाजी महाराज ने बाहरी प्रदेशों से आनेवाली वस्तुओं पर अधिक कर लगाया । उन्होंने पुर्तगाली सीमा से आनेवाले नमक पर अधिक कर लगाया । इससे उस नमक की कीमत बढ़ गई परंतु स्वराज्य में तैयार होनेवाले नमक पर कर कम कर दिया । फलतः लोगों को स्वराज्य में बना नमक सस्ते में मिलने लगा, अर्थात स्वराज्य के नमक का व्यापार बढ़ा और स्थानीय व्यापार को प्रोत्साहन मिला ।

स्वराज्य में चलनेवाले व्यापार-उद्‌योगों में वृद्‌धि होने के लिए शिवाजी महाराज प्रयासरत थे । अपनी प्रजा के साथ व्यापारी किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी-ठगी न करें; इसकी ओर वे विशेष रूप से ध्यान देते थे । कोकण में नारियल और सुपारी के व्यवसाय में लोगों के साथ धोखाधड़ी की जा रही है; यह पता चलने पर शिवाजी महाराज ने वहाँ के सूबेदार को चेतावनी दी थी ।

स्त्रियों के प्रति सम्मान :

शिवाजी महाराज का आदेश था कि युद्‌ध के समय शत्रु दल की स्त्रियों अथवा बच्चों को किसी भी प्रकार की क्षति पहुँचनी नहीं चाहिए । उल्टे उनके साथ सम्मान का व्यवहार करें । उन्होंने स्वयं अपने आचरण से स्त्रियों के साथ किस प्रकार सम्मान का व्यवहार किया जाता है; इसका आदर्श प्रस्तुत किया है ।

मराठी सेना कनार्टक की बेलवड़ी में गढ़ी जीतने के लिए गई थी । उस गढ़ी की रक्षा करने के लिए मल्लम्मा देसाई नामक वीरांगना ने प्रखर संघर्ष किया । उसकी वीरता का समाचार शिवाजी महाराज तक पहुँचा । उन्होंने मल्लम्मा को अपनी छोटी बहन मान लिया और उसकी गढ़ी और उसके गाँव सम्मानपूर्वक उसे लौटाए तथा उसे 'सावित्री' उपाधि प्रदान की ।

स्वच्छता के प्रति सजगता :

अपने आवासों और सार्वजनिक स्थानों को किस प्रकार अधिकाधिक स्वच्छ रखा जा सकता है; इस विषय में भी शिवाजी महाराज के कार्यकाल में की गई उपाय योजना ध्यान में आती है । घर के चारों ओर निर्गुंडी अथवा सिंदुवार के पेड़ों की बाड़ खड़ी करके घर में चूहे, बिच्छू, कीड़े, चींटी जैसे प्राणी प्रवेश न कर सकें; इसकी सतर्कता बरतें । इसी तरह धुआँ बनाकर स्वास्थ्य के लिए हानिकर जीव-जंतु नष्ट करें ऐसे आदेश शिवाजी महाराज द्‌वारा

शिवाजी महाराज बेलवड़ी की मल्लमा देसाई का सम्मान करते हुए ।

दिए गए थे ।

गढ़ के बाजारों में, सड़कों पर कूड़ा-करकट नहीं रहेगा इसकी चेतावनी दी गई थी । इतना होकर भी यदि सभी जगह कूड़ा-करकट पड़ा होगा तो उसे गढ़ के नीचे न फेंकें । उस कूड़े-करकट को वहीं पर जलाकर नष्ट कर दें और उसकी राख का क्यारियों में रोपी हुई साग-सब्जियों के लिए खाद के रूप में उपयोग करें; ऐसी विभिन्न सूचनाएँ देखने को मिलती हैं ।

शिवाजी महाराज ने गढ़ों का निर्माण, तोपें-बारूद, आरमार पर्यावरण का संरक्षण, जल प्रबंधन, समुद्री व्यापार और व्यापारिक मंडियाँ और स्वच्छता के प्रति सतर्कता के विषय में जो प्रबंधन किया था वह आज भी मार्गदर्शक सिद्‌ध होता है ।

हिंदवी स्वराज्य

हिंदवी स्वराज्य शिवाजी महाराज का स्वप्न था । हिंदवी का अर्थ है-हिंदुस्तान में रहनेवाले फिर वे किसी भी धर्म अथवा जाति के हों । उनका राज्य वही हिंदवी स्वराज्य ।

उदार धार्मिक नीति

शिवाजी महाराज की धार्मिक नीति बड़ी उदार थी । अभियानों के चलते शिवाजी महाराज ने मस्जिदों को क्षति नहीं पहुँचाई । यदि कभी कुरआन शरीफ की कोई प्रति उन्हें मिलती तो वे बड़े सम्मानपूर्वक उसे किसी मुसलमान को सौंप देते थे । केवल मुसलमान होने के कारण वे उसका द्‌वेष नहीं करते थे । यदि किसी ने अपना धर्म बदल दिया परंतु वह पुनः अपने धर्म में आना चाहता है तो वे उसे दूर नहीं रखते थे । बजाजी नाईक-निंबालकर शिवाजी महाराज का साला था । वह बीजापुर के आदिलशाह की नौकरी में था । आदिलशाह ने उसका धर्म परिवर्तन किया था । बजाजी बीजापुर में रहने लगा । उसे किसी बात की कमी नहीं थी परंतु यह बात उसके मन को कचोटती थी कि उसने

अपना धर्म बदला है । उसे यह बुरा लगता था । उसने पुनः अपना धर्म अपनाने का निश्चय किया । शिवाजी महाराज ने उसको अपने धर्म में लिया । नेतोजी पालकर की कहानी भी ऐसी ही है । नेतोजी पालकर का धर्म बदला गया था लेकिन उसे फिर से अपने धर्म में आने की इच्छा हुई । शिवाजी महाराज ने उसे भी फिर से अपने धर्म में ले लिया ।

शिवाजी महाराज का स्मरणीय रूप : गहन अंधकार में अपनी दिशा निश्चित करके मार्ग निकालना, संकट आने पर भी निर्भीकता से उनपर विजय प्राप्त करना और आगे बढ़ना, शक्तिशाली शत्रुओं के साथ अपनी अल्प शक्ति के साथ लड़ते हुए अपनी सामर्थ्य बढ़ाते रहना; अपने साथियों को उत्साहित करते हुए और शत्रुओं को चकमा देते हुए

क्या तुम जानते हो?

- शिवाजी महाराज साधुओं-संतों सज्जनों का बहुत आदर सम्मान करते थे । उन्हें मंदिर प्रिय थे । उन्होंने मस्जिदों का भी रक्षण किया । उनके लिए भगवद्‌गीता पूजनीय थी तो उन्होंने कुरआन शरीफ का भी आदर किया । ईसाई लोगों के प्रार्थनास्थानों का भी ध्यान रखा । शिवाजी महाराज विद्‌वानों का आदर-सम्मान करते थे । उन्होंने परमानंद, गागाभट्ट, धुंडीराज, भूषण आदि विद्‌वानों का आदर-सत्कार किया । इसी तरह संत तुकाराम, समर्थ रामदास, बाबा याकूत, मौनीबाबा का भी आदर बहुमान किया ।

शिवाजी महाराज का स्मरणीय रूप

यश प्राप्त करना आदि सभी गुण शिवाजी महाराज में विद्‌यमान थे । आदर्श पुत्र, सजग नेता, कुशल संगठनकर्ता,जनकल्याणकारी प्रशासक, बुद्‌धिमान योद्‌धा, दुर्जनों का संहारक, सज्जनों का रक्षक और नवयुग का निर्माता जैसे शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व के अनगिनत तेजस्वी पहलू हैं । यह सब देखा कि मन में बार-बार यही भाव उठता है -

'शिवरायांचे आठवावे रूप ।
शिवरायांचा आठवावा प्रताप ।
शिवरायांचा आठवावा साक्षेप भूमंडळी ।।'

(शिवाजी महाराज का स्मरणीय रूप, शिवाजी महाराज का स्मरणीय प्रताप, शिवाजी महाराज का स्मरणीय प्रजा निष्ठा स्वरूप।)

स्वाध्याय

१. बताओ तो !

(अ) स्वतंत्र हिंदवी स्वराज्य का निर्माण हुआ ।

(आ) स्वराज्य की प्रजा को अकाल (सूखे) की भीषणता का कभी भी अनुभव नहीं हुआ ।

(इ) शिवाजी महाराज ने मल्लम्मा देसाई को उपाधि प्रदान की ।

२. रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो और तालिका पूर्ण करो ।

	प्रधान का नाम	पद	कार्य
१.	मोरो त्रिंबक पिंगले	------	राज्य का शासन चलाना ।
२.	------------	अमात्य	राज्य का आय-व्यय देखना ।
३.	हंबीरराव मोहिते	सेनापति	------------
४.	मोरेश्वर पंडितराव	------	धार्मिक कार्य देखना ।
५.	------------	न्यायाधीश	------------
६.	अण्णाजी दत्तो	------	------------
७.	------------	------	पत्रव्यवहार करना ।
८.	रामचंद्र त्रिंबक डबीर	सुमंत	------------

३. विचार विमर्श करो ।

पर्यावरण के विविध घटकों का विनाश नहीं होगा; इसके लिए शिवाजी महाराज द्‌वारा किस प्रकार सावधानी ली गई? तुम पर्यावरण का रक्षण करने हेतु क्या-क्या करोगे?

४. पढ़ो और अपने शब्दों में जानकारी बताओ ।

'जल प्रबंधन' विषय से संबंधित जानकारी पढ़ो और इस विषय पर अपने शब्दों में जानकारी बताओ ।

उपक्रम :

(अ) तुम्हारी कक्षा द्‌वारा विद्‌यालय के अहाते में बाजार का आयोजन करो । विविध वस्तुओं और उनके मूल्यों की सूची बनाओ । इसके लिए परिसर के बाजार में जाओ और निरीक्षण करो ।

(आ) तुम्हारे विद्‌यालय के परिसर में तुमने कौन-से पेड़ लगाए हैं और उनका संवर्धन किस प्रकार करते हो; यह बताओ ।

6K0EC3

‘आज्ञापत्र में’ पर्यावरण का संरक्षण

यह आज्ञापत्र रामचंद्रपंत अमात्य द्‌वारा लिखा गया है । इसमें शिवाजी महाराज की नीतियाँ प्रतिबिंबित हुई हैं । निम्न अनुच्छेद द्‌वारा शिवाजी महाराज का पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण प्रकट होता है ः

‘‘युद्‌धपोतों के तख्ते, बल्लियाँ, मस्तूल आदि के लिए मजबूत लकड़ियों की आवश्यकता होती है । हमारे राज्य में सागौन आदि वृक्ष हैं । इन कार्यों के लिए आवश्यक लकड़ी सरकार की लिखित अनुमति लेकर काटें । इसके अतिरिक्त आवश्यक लकड़ी दूसरे राज्यों से खरीदकर लाई जाए । स्वराज्य में आम, कटहल आदि पेड़ भी युद्‌धपोतों के निर्माण की दृष्टि से उचित हैं परंतु इन पेड़ों के साथ छेड़-छाड़ न करें क्योंकि ये पेड़ दो-तीन वर्षों में बढ़ते नहीं हैं । प्रजा ने इन पेड़ों को संतान की तरह लंबे समय तक पोषण कर बढ़ाया है । इन पेड़ों को काटने से उनके दुखों का पारावार नहीं रहता । एक को दुखी बनाकर जो यह कहता है कि मैंने कोई कार्य किया है तो उस कार्य करने वाले का उद्‌देश्य न केवल अल्पकालिक होता है और वह शीघ्र ही नष्ट होता है अपितु उसके स्वामी के सिर पर प्रजा को पीड़ित करने का दोष आ जाता है । इन वृक्षों के अभाव में क्षति भी होती है । अतः यह बात कदापि नहीं होनी चाहिए । यदि कोई पेड़ बहुत पुराना, जीर्ण और अनुपयोगी हो गया हो तो उस पेड़ के स्वामी को मनाकर तथा उचित धन देकर और उसकी इच्छा से वह पेड़ काटा जाए ।....’’

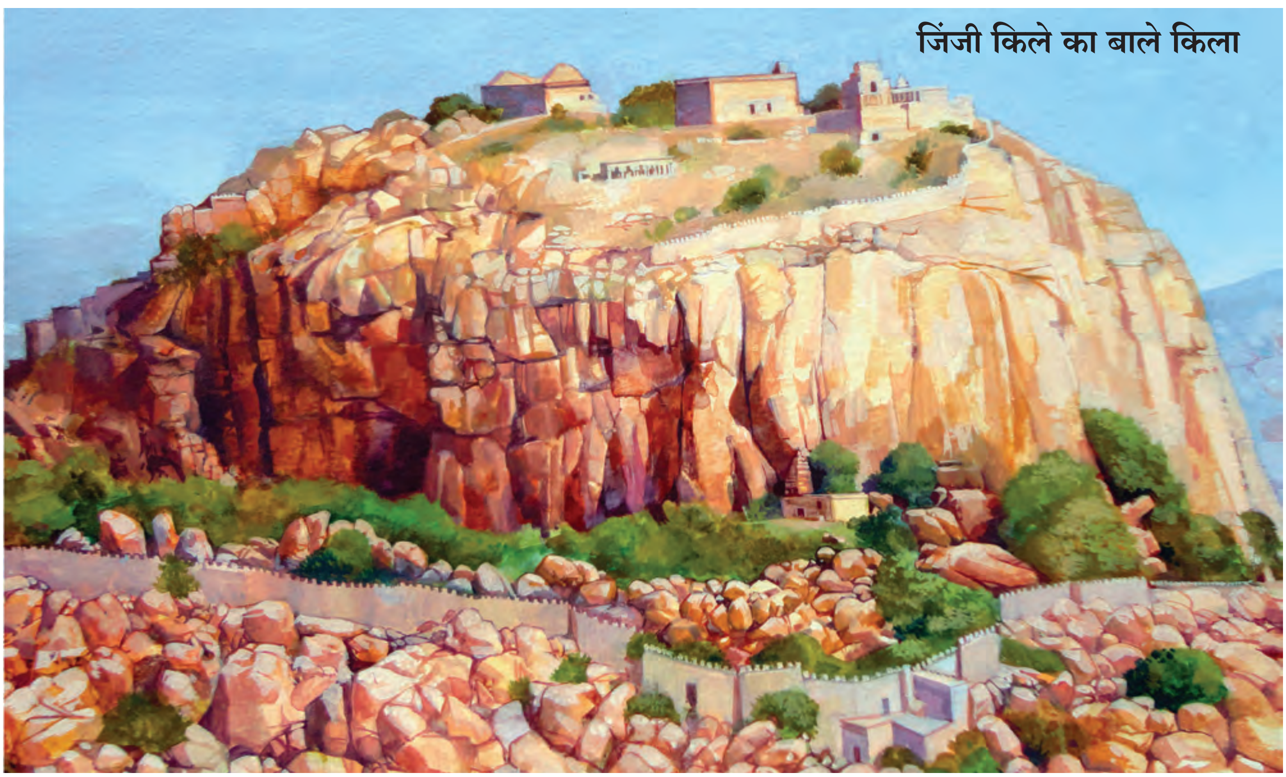

जिंजी किला वर्तमान तमिलनाडु प्रदेश में है । छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने दक्षिण दिग्विजय अभियान में इस किले को जीत लिया था। यह किला अपने-आप में बहुत दुर्गम था फिर भी शिवाजी महाराज ने उसके पहलेवाले परकोटों को तोड़कर नए परकोटे और बुर्ज बाँधे और इस किले को अधिक दृढ़ और शक्तिशाली बनाया । दृढ़ और शक्तिशाली किलों का निर्माण किस प्रकार करवाया जाता है; इसकी शिक्षा शहाजीराजे ने उन्हें बचपन में दी थी । शिवाजी महाराज ने उस शिक्षा का उपयोग ऐसे अवसरों पर किया; यह दिखाई देता है । कालांतर में राजाराम महाराज ने इस किले को अपनी राजधानी बनाई । जब वे इस किले में थे तब मुगलों ने इसे घेर लिया था परंतु राजाराम महाराज इस घेरे में घिरे रहने के बावजूद लगभग सात साल तक इस किले में रहकर लड़ते रहे । शिवाजी महाराज ने दूरदृष्टि रखकर इस किले को दृढ़ और शक्तिशाली बनवाया था और इसीलिए राजाराम महाराज इतने लंबे समय तक इस किले में सुरक्षित रह सके ।

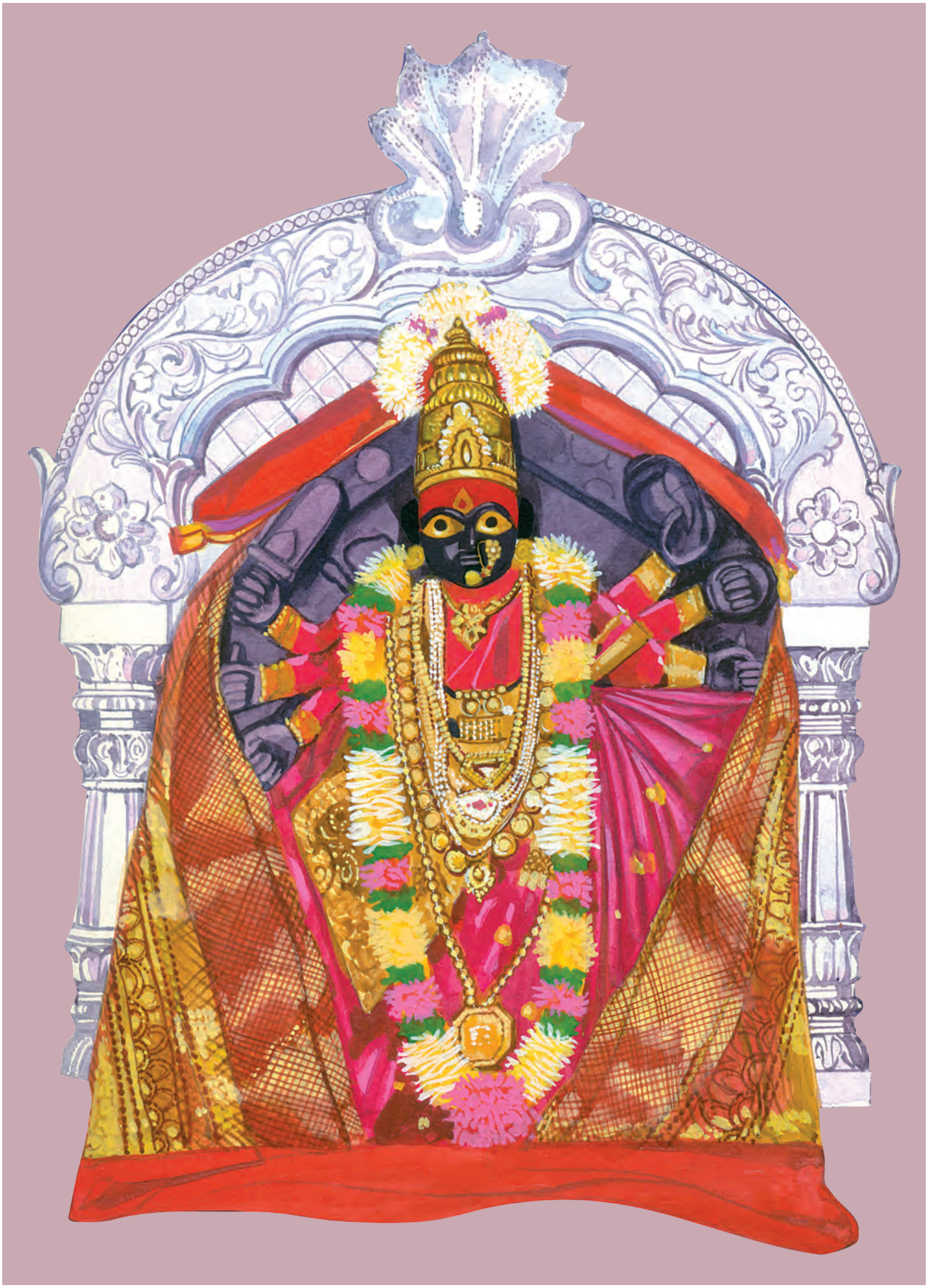

देवी भवानी – प्रतापगढ़

छत्रपती शिवाजी महाराज स्मृतिग्रंथ

- सामान्य रयतेच्या कल्याणासाठी स्थापन केलेल्या स्वराज्य स्थापनेची कथा उलगडणारे पुस्तक.
- छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या उत्तुंग कार्य व त्यामागची तेवढीच उत्तुंग व उदात्त भूमिका वाचकांसमोर आणणारे प्रेरणादायी वाचन साहित्य.
- इतिहास वाचनासाठी पूरक असे संदर्भ पुस्तक.

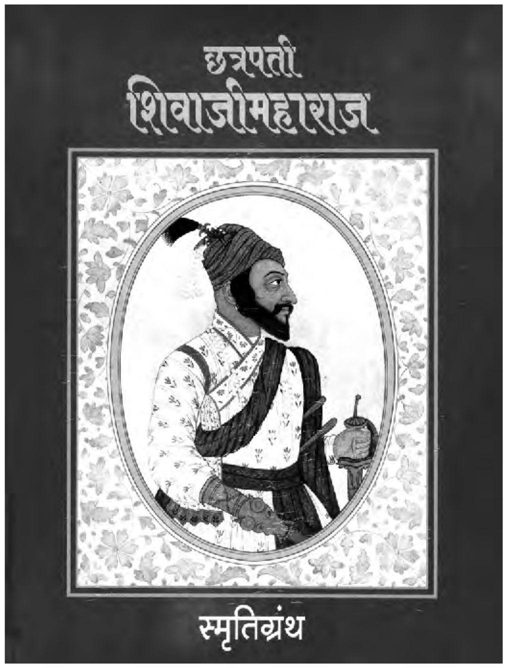

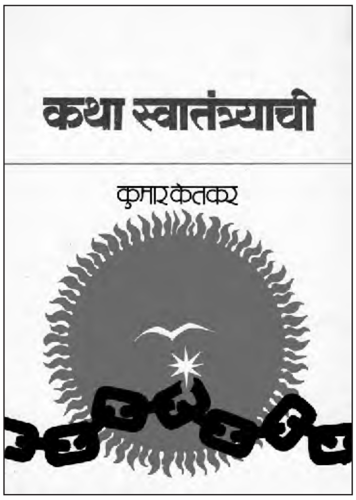

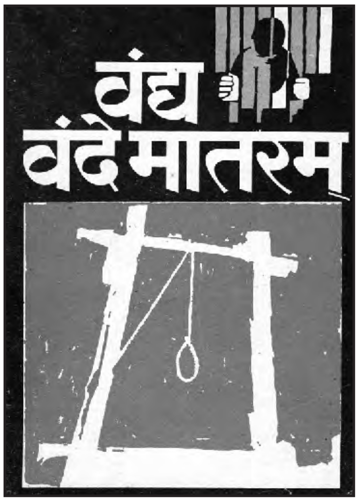

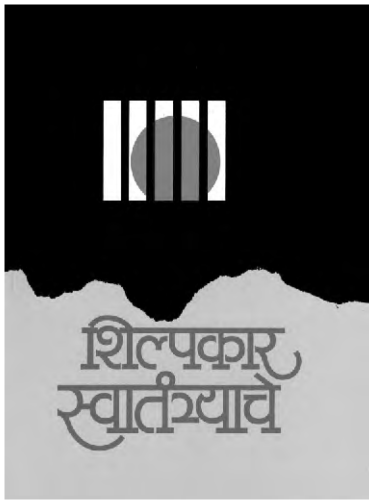

- इतिहास वाचनासाठी पूरक अशी संदर्भ पुस्तके.
- निवडक लेखक, इतिहासकारांचे प्रेरणादायी लेख.

पुस्तक मागणीसाठी www.ebalbharati.in, www.balbharati.in संकेतस्थळावर भेट द्या.

साहित्य पाठ्यपुस्तक मंडळाच्या विभागीय भांडारांमध्ये विक्रीसाठी उपलब्ध आहे.

ebalbharati

विभागीय भांडारे संपर्क क्रमांक : पुणे - ☎ २५६५९४६५, कोल्हापूर- ☎ २४६८५७६, मुंबई (गोरेगाव) - ☎ २८७७१८४२, पनवेल - ☎ २७४६२६४६५, नाशिक - ☎ २३९१५११, औरंगाबाद - ☎ २३३२१७१, नागपूर - ☎ २५४७७१६/२५२३०७८, लातूर - ☎ २२०९३०, अमरावती - ☎ २५३०९६५

'शत्रु की छावनी को नष्ट करके अपनी छावनियाँ स्थापित करें ।' इस उद्देश्य से छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा मुरगूड परगना (जि. कोल्हापुर) के देसाई रुद्राप्पा नाईक को दिनांक ११ दिसंबर १६७६ ई. को भेजा गया यह पत्र मोडी (सर्राफा) लिपि में है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

परिसर अध्ययन भाग – २ इ. ४ थी (हिंदी माध्यम)

₹ ३६.००